45 वां राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह
45th National Film Festival
1998

संपादन
बी.बी. नागपाल

Editor
B.B. Nagpal

समन्वय
शी. ट्विक्ले

Co-ordination
S. Twickly

सहयोग
मंजु खन्ना
अजय नावरिया
कौशल्या मेहरा
मोहम्मद सादिक
बी.ए. हकाक

Assistance
Manju Khanna
Ajay Naurya
Kaushalya Mehra
Mohammed Sadiq
B.A. Hakak

उत्पादन
जी.पी. धुसिया
वी.के. मीणा

Production
G.P. Dhusia
V.K. Meena

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित। मुद्रक : वीरेन्द्र प्रिंटर्स, नई दिल्ली-110005

Designed and published by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Veerendra Printers, New Delhi-110 002

No 2/5/98 - PP III 2000 Copies July, 98'

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
निर्णायक मण्डल	vii	**JURY MEMBERS**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	1	**DADA SAHEB PHALKE AWARD**
कथाचित्र पुरस्कार	5	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	6	Best Feature Film
निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	8	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार	10	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	12	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म	14	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	16	Best Film on other Social Issues
पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	18	Best Film on Environment/Conservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल फ़िल्म	20	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	22	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	24	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	26	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	28	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	30	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल-कलाकार	32	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	34	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	36	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	38	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	40	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	42	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	4 4	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	46	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषाकार	48	Best Costume Designer

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	50	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	52	Best Lyrics
निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कर	54	Special Jury Award
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	56	Best Choreography
सर्वोत्तम बंगल कथाचित्र	58	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	60	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	62	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	64	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	66	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र	68	Best Feature Film of Punjabi
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	70	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलगु कथाचित्र	72	Best Feature Film in Telugu
विशेष उल्लेख	74	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिये गये	76	Awards not given

गैर कथाचित्र पुरस्कार		AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	78	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	80	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्री/मानवजातीय फ़िल्म	82	Best Anthropolocial/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	84	Best Biographgical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म	86	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म	88	Best Scientific Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म	90	Best Environmental/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फिल्म	92	Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म	94	Best Agricultural Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म	96	Best Historical Reconstruction/Compilation Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	98	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	100	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फिल्म	102	Best Exploration/Adventure Film
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म	104	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	106	Best Animation Film

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	108	Best Short Fiction Film
परिवार नियोजन सर्वोत्तम फ़िल्म	110	Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम छायांकन	112	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	114	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	116	Best Editor
विशेष उल्लेख	118	Best Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	120	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	121	**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक (1995)	122	Best Book on Cinema (1995)
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक (1995)	124	Best Film Critic (1995)
स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में	127	**CELEBRATING FIFTY YEAR OF INDEPENDENCE**
कथासार : कथाचित्र	171	**SYNOPSES : FEATURE FILMS**
अन्नमैया	172	Annamayya
भूमिगीता	173	Bhoomigeetha
भूतक्कन्नड़ी	174	Bhoothakkanadi
बार्डर	175	Border
दहन	176	Dahan
धन्ना	177	Dhanna
दिल तो पागल है	178	Dil to Pagal Hai
इनु स्वंथम् जानकी कुट्टी	179	Ennu Swanitham Janakikutty
हजार चौरासी की माँ	180	Hazaar Chaurasi Ki Ma
इरुवर	181	Iruvar
कलियट्टम	182	Kaliyattam
मै माँ पंजाब दी	183	Main Ma Punjabi Dee
मंगम्मा	184	Mangamma
मूंगरिना मिंचु	185	Moongarina Minchu
रामायणम्	186	Ramanayam
समांथारंगल	187	Samaandarangal

शेष दृष्टि	188	Shesh Drushti
सिन्दूरम्	189	Sindooram
द टेररिस्ट	190	Terrorist, The
ताई साहेब	191	Thai Saheb
विरासत	192	Virasat
कथासार: गैर कथाचित्र	193	**SYNOPSES : NON-FEATURE FILMS**
आयुर्वेद	194	Ayurveda
अय्यनकली - अधिष्ठितारुढ विमोचकन	194	Ayyankali - Adhastitharude Vimochakan
बांगलोर बाडल	195	Banglar Baul
केन्सर	195	Cancer
मोटीपुआ	196	Gotipua
हिप्नोथीसिस	196	Hypnothesis
इन सर्च ऑफ एक्सीलेन्स	197	In Search of Excellence
इन द लैंड आफ लेप्चज़	197	In the land of Lepchas
जातानेर जामी	198	Jataner Jami
माटिर भांर	198	Matir Bhanr
मिझावु - ए साइलेन्ट ड्रम बीट	199	Mizhavu - A Silent Drum Beat
मौनम् सौमनस्यम्	199	Mounam Sowmanasyam
नेचर्स सेन्टिनेल्स - द बिश्नोई	200	Nature's Sentinels - the Bishnoi
निरंकुश	200	Nirunkush
द आफीशियल आर्ट फार्म	201	Official Art Form, The
पोस्ट हारवेस्ट मैनेजमेन्ट आफ पोटैटो	201	Post Harvest Management of Potato
सारंग - सिम्फनी इन कोकोफनी	202	Sarang - Symphony in Cocophony
द सेवियर	202	Saviour, The
थर्स्ट	203	Thirst
ट्रेड कामर्स	203	Trade - Commerce
द ट्रेल	204	Trail, The
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार	205	**NATIONAL FILM AWARDS**

निर्णायक मण्डल Jury Members

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR FEATURE FILMS

पी. माधवन
P. Madhavan

श्रीमती बी. सरोजा देवी (अध्यक्ष)
Mrs. B. Saroja Devi (Chairperson)

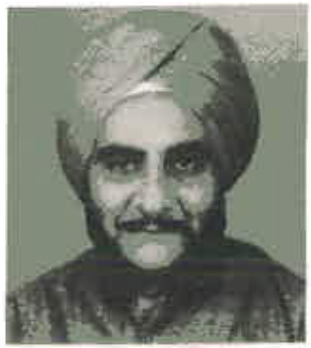

डॉ. महीप सिंह
Dr. Maheep Singh

सी.वी.एल. शास्त्री
C.V.L. Sastry

सुश्री अरुणा पुरोहित
Ms. Aruna Purohit

सुश्री उमा डा कुन्हा
Ms. Uma Da Cunha

देवेन्द्र खण्डेलवाल
Devender Khandelwal

संदीप रे
Sandeep Ray

डॉ. सांत्वना बार्दोलोई
Dr. Santwana Burdoloi

सुश्री अरुणधती नाग
Ms. Arundhati Nag

सुश्री पुष्पा भारती
Ms. Pushpa Bharati

के.आर. मोहनन
K.R. Mohanan

वी. मधुसूदन राव
V. Madhusudana Rao

ग़ैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

के.के. कपिल (अध्यक्ष)
K.K. Kapil (Chairman)

दिनकर चौधरी
Dinker Chowdhary

शशि रंजन
Shashi Ranjan

श्रीमती पार्वती मेनन
Mrs. Parvati Menon

सुश्री नमिता गोखले
Ms Namita Gokhale

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल

JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA

चिदानंद दासगुप्त (अध्यक्ष)
Chidananda Dasgupta (Chairman)

तरुण विजय
Tarun Vijay

चंदन मित्रा
Chandan Mitra

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार
Dada Saheb Phalke Award
1997

दादा साहेब फ़ाल्के पुरस्कार 1997

भारतीय सिनेमा के लिए विशिष्ट योगदान
कवि प्रदीप

कोई भी व्यक्ति जो हिन्दी गीतों को सुनता है, ''**जागृति**'' फ़िल्म के ''**हम लाये हैं तूफान से किश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के**'' या ''**नास्तिक**'' फ़िल्म के ''**देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान**'' गानों को कभी नहीं भूल सकता। जो भी इन गानों को सुनता है उसको अपने में गृह विरह की वेदना जागृत होती प्रतीत होती है। इन गानों के लेखक श्री राम चन्द्र द्विवेदी, ''**कवि प्रदीप**'' के नाम से अधिक जाने जाते हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन देशप्रेम एवं धार्मिक गीतों तथा सुनने वालों में नई स्फूर्ति जागृत करने वाले गीत लेखन में अर्पित कर दिया।

उज्जैन जिले के एक क़स्बे में जन्मे, तिरासी वर्षीय **कवि प्रदीप**, छोटी उम्र में ही इलाहाबाद आ गये थे जहां इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि लें कर वे मुंबई चले आये। जब वे पहली बार फ़िल्मों की राजधानी पहुंचे तो वे फ़िल्मी संगोष्ठियों में भाग लिया करते थे, जहां उनकी भेंट कई प्रतिष्ठित कवियों से हुई।

एक दिन उन्हें हिमांशु राय से मिलने के लिये कहा गया जो उस समय बाम्बे टाकीज़ के संचालक थे। श्री राय ने उन्हें फ़िल्मों के लिये गाने लिखने को कहा। उन्होंने कवि का नाम भी ''**कवि प्रदीप**'' बदल दिया, जो कवियोचित लगता था।

1939 में बनी उनकी प्रथम फ़िल्म ''**कंगन**'' में उन्होंने अपने लिखे चार गीतों में से तीन को स्वयं गाया भी था। इसके बाद उनकी ''**बन्धन**'', ''**नया संसार**'', ''**किस्मत**'' तथा ''**आम्रपाली**'' जैसी फ़िल्में भी आई।

अन्य फ़िल्मी गीतों के साथ, जिसमें बड़ी संख्या में धार्मिक फ़िल्मों के गीत भी हैं, वे ऐसी कविताऐं भी लिखते रहे जो देशप्रेम की भावना को जागृत करे तथा समाज की बुराइयों को उजागर करे। उनकी फ़िल्मों में ''**कभी धूप कभी छांव**'', ''**जय संतोषी मां**'', ''**अग्निरेखा**'', ''**बाल महाभारत**'', ''**जागृति**'' तथा ''**नास्तिक**'' फ़िल्में सम्मिलित है।

कवि प्रदीप अपनी उच्च कोटि के गीतों के लिये प्रसिद्ध हैं जिनमें सामाजिक बुराइयाँ, देश प्रेम, कोमलता, श्रेष्ठ काव्यात्मकता तथा शालीनता झलकती है।

DADA SAHEB PHALKE AWARD 1997

OUTSTANDING CONTRIBUTION TO INDIAN CINEMA
KAVI PRADEEP

No person who listens to Hindi film songs will every forget songs like **Hum laaye hain tufaan se kishti nikaal ke, is desh ko rakhna mere bacho sambhaal ke"** or **"De di hamein azaadi bina khadak bina dhaal"** from the film **"Jagriti"** or **"Dekh tere sanssar ki haalat kya ho gayee Bhagwan, kitna badal gayaa insaan"** from **Nastik."** Anyone listening to these songs will feel nostalgia welling up within him. The writer of these lyrics, **Mr Ram Chandra Dwivedi** who is better known to us as **Kavi Pradeep**, has spent his lifetime penning patriotic or religious songs, or lyrics that infuse new vigour in the listener.

Eighty-three year old **Kavi Pradeep** came to Mumbai after doing his graduation from the University of Allahabad, where he had shifted at an early age from the small town in district Ujjain, where he was born. When he first came to the film capital, he used to participate in film symposia, where he met a lot of eminent poets.

One day, he was asked to meet Himansu Rai, who was then managing Bombay Talkies. Mr Rai asked him to write film songs. He also changed the poet's name to **Kavi Pradeep**, which he said sounds better for a poet.

His first film was **"Kangan"** in 1939, where he himself sang three of the four songs written for that film. This was followed by films like **"Bandahan", "Naya Sansar", "Kismat"** and **"Amrapali."**

Along with other film songs, he continued to write lyrics that evoked patriotic nostalgia and also spoke of ills in society, apart from a large number of songs for mythological films. His films include **"Kabhi dhoop kabhi chhaon", "Jai Santoshi Ma", "Agnirekha", "Bal Mahabharat", "Jagriti"** and **"Nastik."**

Kavi Pradeep is also known for a high standard of lyrics that talk of social ills, patriotism, tenderness, and have a high order of poetry, never stooping to vulgarity.

कथाचित्र पुरस्कार
Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

थाई साहेब (कन्नड़)

निर्माता : **जयमाला** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गिरीश कासरवल्ली** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार कन्नड़ फिल्म **थाई साहेब** को एक महिला की चुनौतीपूर्ण भूमिका के लिये है जो परम्परागत प्रतिबंधों तथा समय की सीमितताओं का बोझ उठाती है और उनका साहस, गरिमा तथा त्याग के साथ सामना करना सीखती है। इस प्रक्रिया में वह महिला उद्धार के संबंध में संदेश देती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

THAI SAHEB (KANNADA)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer **JAIMALA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director **GIRISH KASARAVALLI**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1997 is given to the Kannada Film **THAI SAHEB** for its challenging portrayal of one woman who carries the burden of traditional constraints and restrictions of society and learns to overcome them with courage, dignity and sacrifice. In the process, she speaks for the emancipation of women.

जयमाला

प्रतिष्ठित अभिनेत्री जयमाला ने तुलु, कन्नड़, मलयालम एवं तेलुगु भाषाओं की 75 से अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है। इनमें "**कासु दाये कन्दानें**" जो तुलु भाषा में है, को सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार, मलयालम फ़िल्म "**देवलोकम**" तेलुगु फ़िल्म "**रक्षा सुदु**" एवं कन्नड़ फ़िल्म "**चांदी चमुदी**", "**अन्त**" और "**प्रेमद कणिके**" शामिल हैं।

एक निर्माता के रूप में यह उनकी चौथी फ़िल्म है, इसके अतिरिक्त उन्होंने "**अग्निपरीक्षा**", "**महेन्द्रवर्मा**", और "**मिस्टर महेश कुमार**" बनाई जो सभी कन्नड़ में थी।

Jayamala

An actress of repute, Jayamala has acted in over 75 films in Tulu dialect and the Kannada, Malayalam and Telugu languages. These include **"Kasu Daye Kandaane"** in Tulu for which won the best actress award, the Malayalam film **"Devalokham"**, the Telugu film "Rakshasudu", and the Kannada films **"Chandi Chamudi"**, **"Antha"** and **"Premada Kanike"**.

This is her fourth film as producer, the others — all Kannada —being **"Agnipareeksha"**, **"Mahendravarma"**, and **"Mr Mahesh Kumar"**.

गिरीश कासरवल्ली

भारतीय फ़िल्म एवं दूरदर्शन संस्थान से फ़िल्म निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त गिरीश को 1975 का सर्वोत्तम छात्र घोषित किया गया तथा उनकी डिप्लोमा फ़िल्म "**अवशेष**" के लिए सर्वोत्तम छात्र फ़िल्म का पुरस्कार भी मिला। इस फ़िल्म को 1976 की सर्वोत्तम लघु फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।

स्वतंत्र रूप से उनकी प्रथम फ़िल्म "**घटश्रद्धा**" को 1977 की सर्वोत्तम फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार के अलावा बी.वी. कारंथ को संगीत पुरस्कार तथा मास्टर अजित कुमार को सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार भी मिला। उनकी फ़िल्म "**तबराना काथे**" को सर्वोत्तम फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार एवं अनेक राज्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

Girish Kasaravalli

Trained in the Film and Television Institute of India in Film Direction, Girish was adjudged the best student of the year 1975 and also won the best student film award for his Diploma film **"Avashesh."** This film went on to win a National Award as the Best short film of 1976.

His first independent film **"Ghattashraddha"** in 1977 won the National Award for best film as well as the music award for B.V. Karanth and child actor award to Master Ajit Kumar. His film **"Tabrana Kathe"** also won the National Award for best film and several state awards.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

भूतक्कन्नडी (मलयालम)

निर्माता : **एन. कृष्णकुमार** (उन्नी) को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ए.के. लोहिता दास** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए 1997 का इंदिरा गांधी पुरस्कार मलयालम फिल्म **भूतक्कन्नडी** को मानवीय मन के उत्कृष्ट समन्वय बनाये रखने के लिए दिया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

BHOOTHAKKANNADI (MALAYALAM)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Producer. **N. KRISHNA KUMAR (UNNI)**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director: **A.K. LOHITHA DAS**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for the year 1997 is given to the Malayalam Film **BHOOTHAKKANNADI,** for the Director's Competent Handling of the Delicate Balance of the Human Psyche.

एन. कृष्ण कुमार (उन्नी)

दूसरों से हटकर फ़िल्मों का निर्माण करने में अपना स्थान बनाने वाले एन् कृष्ण कुमार जिन्हें उन्नी के नाम से भी जाना जाता है, ने निर्देशन के लिए कुछ समय के लिए पटकथा लेखक के रूप में अवकाश लिया। उन्नी की प्रथम फ़िल्म "**किरीडम**" जिसमें मोहन लाल प्रमुख थे, को अपार सफलता मिली तथा उसके बाद फ़िल्म निर्माता को किरीडम उन्नी के नाम से जाना जाता है।

N. Krishna Kumar (Unni)

Having carved a niche for himself for making films with a difference, N. Krishna Kumar who is also known as Unni has given a break to his screenplay writer to direct. Unni's first film **"Kireedom"** with Mohan Lal in the lead had been a trend setter, and the filmmaker came to be known as Kireedom Unni after that.

ए.के. लोहिता दास

किरीडम उन्नी की सभी छः फ़िल्मों की पटकथा लोहिता दास ने लिखी। उन्हें निर्देशन का अवसर उनकी सातवीं फ़िल्म में मिला। विषय वस्तु में व्यापकता तथा व्यावहार में राष्ट्रीयता के कारण उनकी गिनती उच्च कोटि की पटकथा लिखने से सफल फ़िल्में देने वालों में की जाती है। उनकी सर्वप्रथम फ़िल्म जिसमें ममूटी ने अभिनय किया, को अनेक पुरस्कार मिले।

A.K. Lohitha Das

All the six films made by Kireedom Unni have been scripted by Lohitha Das, who has got his first break as a director with this seventh film. He has had the reputation of churning out hits as a script writer, because of the nativity of treatment and universality of themes. His very first film, which had starred Mammootty, had won several awards.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार

दिल तो पागल है (हिन्दी)

निर्माता : **यश चोपड़ा** को स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **यश चोपड़ा** को स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **दिल दो पागल है** को स्वच्छ तथा युवाओं के आमोद प्रिय चित्रांकन के लिए दिया गया है जिसमें हिंसा अथवा अभद्र प्रदर्शन को कोई चिन्ह न देते हुए सहजतापूर्वक दर्शाया गया है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

DIL TO PAGAL HAI (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Producer: **YASH CHOPRA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Director: **YASH CHOPRA**

Citation

The Award for the Best Popular Film providing wholesome entertainment of 1997 is given to the Hindi Film **DIL TO PAGAL HAI** for its clean, fun-loving portrayal of young people in a film that moves effortlessly and avoids any sign of violence or vulgarity.

यश चोपड़ा

वयोवृद्ध फ़िल्म निर्माता बी.आर. चोपड़ा के भाई यश ने सर्व प्रथम 1958 में ''धूल का फूल'' के साथ निर्देशन का काम प्रारंभ किया। इसके बाद 1962 में राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता ''धर्मपुत्र'' आई। तदोपरान्त, ''इत्तेफाक'', ''दीवार'', ''आदमी और इंसान'', ''जोशीला'', ''दाग़'', ''कभी-कभी'', ''दूसरा आदमी'', ''सिलसिला'', ''नूरी'', ''दीवार'', ''त्रिशूल'', ''लम्हे'', ''चांदनी'', और ''डर'' जैसी फ़िल्में आई। ''दिलवाले दुल्हनिया ले लायेंगे'' का निर्देशन उनके पुत्र आदित्य ने किया, जिसने ''दिल तो पागल है'' के संवाद लिखे जिसे सर्वोत्तम मनोरंजन प्रदान करने वाली फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

66 वर्षीय यश की फ़िल्मों का प्रस्तुतीकरण सदभाव के साथ तथा अभद्रता और अनावश्यक हिंसा के बिना होता है। फ़िल्मों में सामाजिक प्रासंगकिता के साथ-साथ नवीनता भी होती है। वे अपनी फ़िल्मों के गीतों पर विशेष ध्यान देते हैं।

Yash Chopra

Brother of the veteran filmmaker B.R. Chopra, Yash first tried his hand at direction with **"Dhool Ka Phool"** in 1958. This was followed by the National Award Winning **"Dharmaputra"** in 1962 and **"Waqt"** in 1965. Thereafter came films like **"Itefaq", "Aadmi aur Insaan", "Joshila", "Daag", "Kabhi kabhie", "Doosra Aadmi", "Silsila", "Noorie", "Deewar", "Trishul", "Lamhe", "Chandni", and "Darr". "Dilwale Dulhaniya le jaayenge"** was directed by his son Aditya, who has penned the dialogues of **"Dil to Pagal Hai"**, and won the National Award for Wholesome Entertainment.

The films by Yash, now 66, are marked by sincerity and presentation and have steered away from vulgarity or unnecessary violence. The films also have social relevance and presented something new. He also pays great attention to the songs of the films.

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

बार्डर (हिन्दी)

निर्माता : **जे.पी. दत्ता** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **जे.पी. दत्ता** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1997 का नरगिस दत्त पुरस्कार हिन्दी फिल्म **बार्डर** को राष्ट्रीय भावना के प्रति हथियारबन्द दलों की वीरता तथा बलिदान एवं राष्ट्रीय गौरव के चित्रण के लिए दिया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

BORDER (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **J.P. DUTTA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **J.P. DUTTA**

Citation

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film of 1997 is given to the Hindi film Border for making an honest statement on patriotism, portraying the gallantry and sacrifices of the Armed forces, thereby instilling a sense of National pride.

जे.पी. दत्ता

अड़तालीस वर्षीय जे.पी. दत्ता को फ़िल्मों में प्रारंभिक प्रदर्शन अपने पिता एवं वयोवृद्ध फ़िल्म निर्माता ओ.पी. दत्ता के द्वारा मिला। सैंट जैवियर कालेज से विशेष योग्यता के साथ स्नातक करने के बाद वे 1972 में आर.के. स्टूडियों से एक सहायक के रूप में जुड़ गये तथा रणधीर कपूर के अधीन काम किया। स्वतंत्र रूप से उनकी पहली फ़िल्म 1985 में ''**गुलामी**'' आई, जिसके तीन वर्षों के बाद और तीन फ़िल्में ''**यतीम**'', ''**हत्यारा**'', और ''**बंटवारा**'' आई। उनकी अन्य फ़िल्मों में ''**क्षत्रिय**'' शामिल है जिसे काफी सफलता मिली।

उनके बड़े भाई दीपक दत्ता जो भारतीय वायु सेना में विंग कमाण्डर थे तथा जिनकी 1987 में मिग 21 की हवाई दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, से अत्यधिक प्रभावित होकर जे.पी. दत्ता ने हथियार बन्द फौजों तथा उनकी कुर्बानियों को समर्पित एक फ़िल्म बनाने का निर्णय लिया। इसके साथ ही ''**बार्डर**'' सूक्ष्मता से लड़ाई की व्यर्थता का संदेश भी देती है।

J. P. Dutta

Fortyeight-year old J . P. Dutta got an early exposure to cinema through his father, veteran filmmaker O. P. Dutta. After graduating with honours from St Xaviers, he joined as an assistant to R. K. Studios in 1972 and worked under Randhir Kapoor. His maiden independent venture was "Ghulami" in 1985, followed three years later with three films: **"Yateem", "Hatyara"** and **"Batwara."** His other films include **"Kshatriya"** which was a fair success. Affected deeply by the death of his elder brother Deepak Dutta, a wing commander in the air force, in a MIG 21 air crash in 1987, J. P. Dutta decided to make dedicate a film to the armed forces and their sacrifices. But at the same time, **"Border"** has also tried in a subtle manner to give the message about the futility of war.

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

समानथारंगल (मलयालम)

निर्माता : **एस. बालचन्द्र मेनन** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **एस. बालचन्द्र मेनन** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म **समानथारंगल** को दिया गया। फ़िल्म व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित मूल स्क्रिप्ट के लिए जो पारिवारिक एवं समुदायिक जीवन को चित्रित करती है। नायक अपने परिवार के सदस्यों की भावात्मक नैतिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बलिदान देता है और उसके द्वारा राष्ट्रीय एकता का एक वृहद चित्र दिखाता है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

SAMAANTHARANGAL (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Prodeucer S. **BALACHANDRA MENON**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: S. **BALACHANDRA MENON**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1997 is given to the Malayalam Film **SAMAANTHARANGAL** for an original script evolved from personal experience in a film that nurtures family and community life. The protagonist makes sacrifices in order to protect the emotional and moral needs of his family members and through them projects a larger picture of the National Interests that bind us all.

एस. बालचन्द्र मेनन

भूविज्ञान में स्नातक करने के बाद मेनन पत्रकारिता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करते हैं तथा सर्वोत्तम छात्र का केरल कौमुदी पुरस्कार प्राप्त कर के एक साप्ताहिक पत्रिका के लिए कुछ समय तक काम करते हैं।

बीस वर्ष पूर्व "**उथरादरथ्री**" से अपना फ़िल्मी जीवन शुरू किया तथा 37 फ़िल्मों के लिए कहानी, पटकथा एवं संवाद लेखक एवं निर्देशक का काम किया। इन्होंने इन अनेक फिल्मों में अभिनय, संगीत निर्देशन और सम्पादन भी किया। उनकी अधिकतर फ़िल्में अत्यन्त सफल हुई, जिनमें "**थाराट्टु**", "**कार्यम निसारम**", "**अप्रैल 18**" और "**अमायन सत्यम**" शामिल हैं।

"**समानथारंगल**" में मेनन ने नौ विभागों : निर्माता, निर्देशक, कहानी, पटकथा, संवाद, अभिनय, सम्पादन, संगीत और वितरण का काम किया। उन्हें अनेक राज्य और अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यह उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है। एक नियमित स्तम्भकार के साथ साथ उन्होंने एक सांस्कृतिक मण्डली बनायी है जिसने भारत के बाहर अनेक देशों में प्रदर्शन किये हैं।

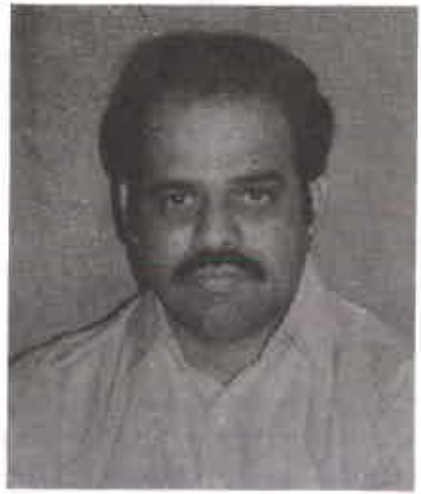

S. Balachandran Menon

After graduating in geology, Menon completed a Diploma in Journalism getting the Kerala Kaumudi Award for best student in reporting, and later worked for some time in a weekly.

Beginning his career in films twenty years ago with **"Uthradarathri"**, he has been involved with 37 films for which he was the story, screenplay and dialogue writer and director. He has also acted in many of these films and donned the mantle of music director and editor. Most of his films have been commercial hits. They include **"Tharattu"**, **"Karyam Nissaram"**, **"April 18"**, and **"Ammayana Satyam."**

For **"Samaandarangal"**, Menon has managed nine departments: producer, director, story, screenplay, dialogue, actor, editor, music and distribution. He has won several State and other awards. This is his first National Award. A regular columnist, he also has his own cultural troupe which has performed in many countries outside India.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

धन्ना (हिन्दी)

निर्माता : **फिल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **दीपक रॉय** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज-विरोधी, नशीले पदार्थ, विकलांग कल्याण जैसे अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **धन्ना** को दिया गया। फिल्म में एक साधारण मानव के समान एक अपंग व्यक्ति को परिवार तथा समाज द्वारा दिये गये अधिकारों को चित्रित किया गया है। इसमें साधारण एवं प्रत्यायक ढंग से बताया गया है कि अपंगों को उनकी आन्तरिक योग्यताओं को उजागर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

AWARD FOR THE BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.

DHANNA (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **DEEPAK ROY**

Citation

The Award for the Best Film on other social issues such as prohibition, women and child welfare, anti-dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc. of 1997 is given to the Hindi Film **DHANNA** The film stands for the rights of a disabled person to be accorded the privileges of a normal human being within a family and in society. It states in a simple yet convincing manner that the disabled should be encouraged to develop their inner talents.

दीपक राय

दो विषयों में स्नातक, दीपक ने अपना जीवन एक फिल्मी आलोचक के रूप में शुरू किया तथा गंभीर सिनेमा पर 1974 से लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने फिल्म निर्माण का काम 1982 से प्रारंभ किया और अब तक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के लिए पचासी फिल्में निर्देशक और निर्माता के रूप में की। वे फिल्म प्रभाग, दूरदर्शन और यूनिसेफ एवं कुछ केन्द्रीय मंत्रालयों के लिए स्वतंत्र निर्माता निर्देशक के पैनल में हैं। उनकी कुछ चुनिंदा फिल्मों में ''**फेस टु फेस**'', ''**रिदम इन स्टोन**'', मध्य प्रदेश के आदिवासियों के जीवन पर एक श्रृंखला ''**माध्यम**'' के अतिरिक्त ''**दि सन फ्लावर आफ होप**'' है। दीपक ने दूरदर्शन के लिए सामयिक विषयों पर अनेक कार्यक्रमों का निर्माण किया तथा आर्थिक मामलों पर एक पाक्षिक कार्यक्रम का निर्माण किया। एक रचनात्मक लेखक होते हुए उन्होंने अनेक लघु कहानियां तथा बंगला में नाटक लिखे जिसका अनुवाद अन्य भाषाओं में किया गया। उन्हें राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का कथा लेखन का पुरस्कार तीन वर्ष तक लगातार मिला तथा 1996 में उनकी फिल्म ''**लिमिट टु फ्रीडम**'' को राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया।

Deepak Roy

A double graduate, Deepak began his career as a film critic and began writing on serious cinema in 1974. He got into filmmaking in 1982 and has so far made eightyfive films as director and producer for national, and international organisations. He is also empannelled as an outside producer director with the Films Division, Doordarshan and UNICEF apart from some central ministries. Some of his better known films are **"Face to Face", "Rhythm in stone",** the series **"Madhyam"** on the life of tribals in Madhya Pradesh, and **"The Sunflower of Hope."**

Deepak has also made several programmes on current topics for Doordarshan and had earlier produced a fortnightly series on economic issues. A creative writer, he has written many short stories and plays in Bengali which have been translated in other languages.

He had also won the National Film Development Corporation's Script writing competition for three years consecutively, and a National Award for his film **"Limit to Freedom"** in 1996.

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

भूमिगीता (कन्नड़)

निर्माता : **आर. महादेव गौड़ा** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **केसरी हारवू** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार कन्नड़ फिल्म **भूमिगीता** को पर्यावरण एवं आदिवासी संस्कृति की नियंत्रित पहुंच की आवश्यकता, जो विकास प्रक्रिया में अनियंत्रित हो गयी थी के संबंध में वास्तविक मत देने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON ENVIRONMENT/ CONSERVATION/PRESERVATION

BHOOMIGEETHA (KANNADA)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **R. MAHADEV GOWDA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **KESARI HARVOO**

Citation

The Award for the Best Film on Environment/Conservation/Preservation of 1997 is given to the Kannada Film **BHOOMIGEETHA** for its sincere statement that stresses the need for a balanced approach towards environment and tribal cultures that get displaced in the course of development.

आर. महादेव गौड़ा

एक विकासशील ग्रुप ऑफ कम्पनीज के प्रमुख, महादेव एक युवा टेक्नाक्रैट हैं जिन्होंने यांत्रिकी इंजीनियरी में डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने अपना व्यापार एक स्टील फोर्जिंग यूनिट से शुरू किया, बाद में वे रियल स्टेट का व्यवसाय करने लगे। जल्दी ही उनका ग्रुप अन्य क्षेत्रों में भी फैल गया जिसमें कम्प्युटर और इंजीनियरिंग इंडस्ट्री भी शामिल है।

किन्तु वह मानते हैं कि सूचना और तकनीक प्रगति की चाबी हैं, तथा वे प्रकृति के संरक्षण और परिरक्षण के लिए वचनबद्ध हैं। उनका ग्रुप हरियाली के रखरखाव पर विशेष ध्यान देता है। वे कला के भी बहुत बड़े उपासक हैं।

R. Mahadev Gowda

Head of a growing group of companies called the Dee Group, Mahadev is a young technocrat who holds a degree in mechanical engineering. He began his business in a steel forging unit and later went into real estate. Soon his group diversified into other fields including computers and engineering industry.

But while he feels that information and technology are the key to progress, he is deeply committed to conservation and preservation of nature. His group lays special emphasis on maintaining abundant greenery. He is also a patron of the arts.

केसरी हारवू

विज्ञान में स्नातक, केसरी ने भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान तथा कर्नाटक कोआपरेटिव फिल्म फेडरेशन से लघु फिल्म निर्माण का पाठ्यक्रम किया। प्रारंभ में वे अमाच्योर थियेटर से भी संलग्न रहे तथा प्रकाश, पटकथा, लेखन, अभिनय और निर्देशन का काम किया।

निर्देशक के रूप में "**भूमिगीता**" उनकी प्रथम फीचर फिल्म है। उन्होंने बीस से अधिक फीचर फिल्में में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया है। उन्होंने एक कन्नड़ टेलिविजन धारावाहिक "**सुषमा**" का निर्माण भी किया है।

Kesari Harvoo

A science graduate, Kesari also completed a course in short filmmaking at the Film and Television Institute of India and the Karnataka Cooperative Film Federation. Initially, he was also associated with amateur theatre and involved in the lighting, script writing, acting and directing.

While **"Bhoomigeetha"** is his first feature film as director, he has been associate director in more than twenty feature films. He has also produced a television serial, **"Sushma"** in Kannada.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

रामायणम् (तेलुगु)

निर्माता : **डॉ. एम.एस. रेड्डी** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गुनाशेखर** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार तेलुगु फिल्म **रामायणम्** को भारतीय महाकाव्य को मनोरंजक एवं वर्णनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है, जिसमें बाल कलाकारों ने सभी चरित्रों को सरलता एवं उत्साह से निभाया है। यह फिल्म बच्चों को देश की सांस्कृतिक विरासत से जुड़े रहने का अवसर प्रदान करती है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

RAMAYANAM (TELUGU)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **Dr. M.S. REDDY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **GUNASEKHAR**

Citation

The Award for the Best Children's Film of 1997 is given to the Telugu Film **RAMAYANAM** for presenting the classical Indian epic in an entertaining narrative style with child actors playing all the legendary characters with ease and verve. The film provides an opportunity for children to keep in touch with the country's cultural heritage.

एम.एस. रेड्डी

73 वर्षीय वयोवृद्ध एम.एस. रेड्डी एक समर्पित समाज सुधारक है। वे पक्के गांधीवादी है। उन्होंने अस्पृश्यता, और पशु-बलि जैसे सामाजिक मुद्दों के लिए अनेक सामाजिक आंदोलनों में हिस्सा लिया। उन्होंने इस प्रयोजन के लिए ग्राम स्तरीय अनेक अभियान किए। उन्होंने बंगाल-अकाल के लिए भी कोष इकट्ठा किया।

एक कवि के रूप में वे लगभग 3000 गीत लिख चुके है। जिसके लिए उन्हें सहज कवि की उपाधि भी दी गई। वे कुछ संग्रहों के लेखक भी है। श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या तथा महाराष्ट्र के भूकंप के सम्बन्ध में भी उन्होंने अपनी वेदना शब्दबद्ध की है।

शिक्षा को लक्ष्य बनाकर उन्होंने लगभग 25 फिल्मों का निर्माण किया है जिसमें सामाजिक, ऐतिहासिक तथा पौराणिक विषय रहे है। वे अनेक संगठनों से सम्बद्ध है तथा अनेक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना भी की है।

M. S. Reddy

A dedicated social reformer, seventythree-year old M. S. Reddy is a staunch Gandhian and has taken part in several social movements against ills like untouchability, prohibition and against animal sacrifice. He organised village-level marches for his purposes. He even worked to raise funds for the suffering in the Bengal famine.

As a poet, he has written over 3000 lyrics and earned the reputation of **'Sahajkavi.'** Author of several anthologies, he had written to express his sentiments when Mrs Indira Gandhi was assassinated or during the earthquake in Maharashtra.

As a filmmaker, he has produced almost 25 social, historical and mythological films aimed at education. He has also served various organisations and founded many educational institutions.

गुणाशेखर

33 वर्षीय गुणाशेखर अब तक तीन फिल्मों का निर्देशन कर चुके है। 1992 में उनकी पहली सर्वोत्तम फिल्म "**लाठी**" को राज्य पुरस्कार के अलावा अन्य कई पुरस्कार प्राप्त हुए। 1995 में उनकी दूसरी फिल्म "**सोगासु चूड़ा थारामा**" ने भी अनेक राज्य पुरस्कार जीते।

पिछले साल हैदराबाद में हुए बच्चों तथा युवाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में उनकी फिल्म "**रामायणम्**" को चयन किया गया था। इस फिल्म को अनेक भारतीय भाषाओं में डब किया गया है। इस फिल्म ने भी कई राज्य स्तरीय पुरस्कार जीते हैं।

Gunasekhar

At the young age of 33, Gunasekhar has already directed three feature films. He had won the state award for the best debut in 1992 for his film **"Laathi"**, which also won other awards. His second film **"Sogasu Chooda Tharama"** in 1995 also won several state-level awards.

"Ramayanam" was selected for the International Film Festival for Children and Young People in Hyderabad last year, and has been dubbed in different Indian languages. It has also won some state-level awards.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

जयराज

निर्देशक : **जयराज** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1997 का पुरस्कार **जयराज** को मलयालम फिल्म **कलियट्टम** में परम्परागत ''थैयम'' कला को ध्यान रखते हुए एक नाटक को सफलता पूर्वक प्रतिरोपित करने, तथा एक अत्यन्त कठोर कहानी का ताना बाना बुनते हुए भाषा पर नियंत्रण न खोने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

JAYARAAJ

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director: **JAYARAAJ**

Citation

The Award for the Best Direction for 1997 is given to **JAYARAAJ** for the Malayalam Film **KALIYATTAM** for successfully transplanting the classic play by keeping the Traditional "Theyyam" Art form as the Backdrop and weaving an extremely tight story, never losing control of the Medium.

जयराज

जयराज इलेक्ट्रानिक्स तथा कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग में स्नातक है। इस फिल्म से पूर्व जय राज मलयालम में दस फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। उनकी पिछली फिल्म "**देसाडनम्**" ने तीन राष्ट्रीय पुरस्कार, 9 केरल राज्य पुरस्कार तथा वी. शान्ताराम पुरस्कार प्राप्त किए थे। इस फिल्म को विभिन्न विदेशी फिल्म समारोहों में भी आमंत्रित किया गया। कारलोवी वेरी फिल्म समारोह में इस फिल्म को विशेष उल्लेख प्रदान किया गया।

"**कुटुम्बा समेतम**" को 1992 में राज्य की दूसरी सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। "**पैथरूकन**" और "**सोपानम्**" उनकी विशेष उल्लेखनीय फिल्में है।

Jayaraaj (Best Director)

A graduate in electronics and communication engineering, Jayaraaj has directed ten eature films in Malayalam before the present film. His last film **"Desadanam"** had won three National Awards, nine Kerala State Awards and the V. Shantaram Award for the best film in any Indian language. It was also invited to take part in several foreign film festivals. It won a special mention in the Karlovy Vary International Film Festival.

Earlier, **"Kudumbasametham"** received the second best film award in 1992 in the state. Other highly applauded films include **"Paithrukan"** and **"Sopanam"**.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

सुरेश गोपी एवं एस. बालचन्द्र मेनन

अभिनेता : **सुरेश गोपी एवं एस. बालचन्द्र मेनन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1997 का पुरस्कार **सुरेश गोपी** को मलयालम फिल्म **कलियट्टम** में उनके द्वारा की गई ऐसी नियंत्रित भूमिका के लिए दिया गया है जिसमें अनेक मनोभाव दिखाना आवश्यक होता है।

तथा

सर्वोत्तम अभिनेता का 1997 का पुरस्कार **एस. बालचन्द्र मेनन** को मलयालम फिल्म **समानथारंगल** में एक मध्यम वर्गीय व्यक्ति, जो अपने सिद्धान्तों पर खड़ा रहता है, की वास्तविक भूमिका के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

SURESH GOPI & S. BALACHANDRA MENON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor: **SURESH GOPI & S. BALACHANDRA MENON**

Citation

The Award for the Best Actor of 1997 is given to **SURESH GOPI** for his role in the Malayalam Film **KALIYATTAM** for his control and presence in a role that demands a wide range of emotions.

and

The award for the best actor of 1997 is also given to **S. Balachandra Menon** in the Malayalam film **Samandarangal** for his realistic and sensitive portrayal of a middle-class man who stands up for his high principles.

सुरेश गोपी

चालीस वर्षीय सुरेश गोपी प्राणी विज्ञान में स्नातक तथा अंग्रेजी में स्नातकोत्तर है। वे सिनेमा के प्रति विशेष रुचि रखते थे, फलस्वरूप 1986 में उन्होंने "**राजाविंते माकन**" में काम किया। वे मलयालम, तमिल, कन्नड़, तेलुगु तथा हिन्दी भाषाओं की लगभग 170 फिल्मों में काम कर चुके है।

वे मलयालम मूवी आर्टिस एसोसिएशन के उपाध्यक्ष है। उन्हें चार बार केरल फिल्म क्रिटिक्स पुरस्कार भी दिया जा चुका है। "**कलियट्टम**" के लिए उन्हें सर्वोत्तम अभिनेता का राज्य पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

एस. बालचन्द्र मेनन

भूविज्ञान में स्नातक करने के बाद मेनन पत्रकारिता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करते हैं तथा सर्वोत्तम छात्र का केरल कौमुदी पुरस्कार प्राप्त कर के एक साप्ताहिक पत्रिका के लिए कुछ समय तक काम करते हैं।

बीस वर्ष पूर्व "**उथरादरथ्री**" से अपना फ़िल्मी जीवन शुरू किया तथा 37 फ़िल्मों के लिए कहानी, पटकथा एवं संवाद लेखक एवं निर्देशक का काम किया। इन्होंने इन अनेक फिल्मों में अभिनय, संगीत निर्देशन और सम्पादन भी किया। उनकी अधिकतर फ़िल्में अत्यन्त सफल हुई, जिनमें "**थाराट्टु**", "**कार्यम निसारम**", "**अप्रैल 18**" और "**अमायन सत्यम**" शामिल हैं।

"**समान थारंगल**" में मेनन ने नौ विभागों : निर्माता, निर्देशक, कहानी, पटकथा, संवाद, अभिनय, सम्पादन, संगीत और वितरण का काम किया। उन्हें अनेक राज्य और अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यह उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है। एक नियमित स्तम्भकार के साथ साथ उन्होंने एक सांस्कृतिक मण्डली बनायी है जिसने भारत के बाहर अनेक देशों में प्रदर्शन किये हैं।

Suresh Gopi

Forty year old Suresh holds a degree in zoology and is a postgraduate in English, but instead was fascinated by cinema. He started in 1986 in **"Rajavinte Makan"** and has far done more 170 films in Malayalam, Tamil, Kannada, Telugu and Hindi.

He is Vice-President of the Association of Malayalam Movie Artistes. He has won the Kerala Film Critics award four times and the state award for best actor for **"Kaliyattam."**

S. Balachandran Menon

After graduating in geology, Menon completed a Diploma in Journalism getting the Kerala Kaumudi Award for best student in reporting, and later worked for some time in a weekly.

Beginning his career in films twenty years ago with **"Uthradarathri"**, he has been involved with 37 films for which he was the story, screenplay and dialogue writer and director. He has also acted in many of these films and donned the mantle of music director and editor. Most of his films have been commercial hits. They include **"Tharattu", "Karyam Nissaram", "April 18"**, and **"Ammayana Satyam."**

For **"Samaandarangal"**, Menon has managed nine departments: producer, director, story, screenplay, dialogue, actor, editor, music and distribution. He has won several State and other awards. This is his first National Award. A regular columnist, he also has his own cultural troupe which has performed in many countries outside India.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

इन्द्रानी हलदर तथा ऋतुपर्ण सेनगुप्ता

अभिनेत्री : **इन्द्रानी हलदर तथा ऋतुपर्ण सेनगुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1997 का पुरस्कार संयुक्त रूप से इन्द्रानी हलदर तथा ऋतुपर्ण सेनगुप्ता को बंगला फिल्म **दहन** में अपमानजनक स्थिति में फंसी हुई दो महिलाओं की नियंत्रित तथा भावुक भूमिका के लिए दिया गया है। दोनों अभिनेत्रियों के अनुभव औरों के लिए प्रेरक सिद्ध होते हैं।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS JOINTLY GOES TO:

INDRANI HALDER AND RITUPARNA SENGUPTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actresses: **INDRANI HALDER AND RITUPARNA SENGUPTA**

Citation

The Award for the Best Actress of 1997 is jointly given to **INDRANI HALDER and RITUPARNA SENGUPTA** in the Bengali film **Dahan** for their restrained, sensitive portrayal of two women caught in a web in which both face humiliation. The two Actresses are inspiring in the way they emerge richer from their experience.

इन्द्राणी हल्दर

चौदह वर्ष की अल्पायु से अपने जीवन की शुरूआत करते हुए इन्द्राणी ने सर्वप्रथम टेलिविजन के लिए बंगला फिल्म "**तेरो परबोन**" में अभिनय किया। उसके बाद से उसने टेलिविजन धारावाहिकों की पांच सौ से अधिक श्रृंखला में अभिनय किया है। इनमें हिन्दी धारावाहिक "**नाम गुम जायेगा**" तथा "**शायद**" के अतिरिक्त बंगला धारावाहिक "**कगाजेर बाऊ**" और "**घूम नी**" शामिल हैं। उन्होंने "**हमारी शादी**", "**श्वेत पाथारेर थाला**", "**चराचर**", "**लाल दर्जा**" और "**सप्तमी**" फिल्मों में काम किया है। उन्हें अनेक राज्य पुरस्कार भी मिले है।

Indrani Halder

Starting her career at the tender age of fourteen, Indrani acted in the first Bengali soap opera on television, **"Tero Parbon."** Since then, she has acted in more than 500 episodes of different television serials. These include Hindi serials like **"Naam Gum Jaayega"** and **"Shayad"**, and Bengali serials **"Kagajer Bou"** and **"Ghoom Nei"**.

Her assignments in films include **"Hamari Shaadi"**, **"Swet Patherer Thala"**, **"Charachar"**, **"Lal Darja"**, and **"Saptami."** She has also received several state-level awards.

ऋतुपर्ण सेन गुप्ता

लेडी ब्राबोर्न कालेज से स्नातक ऋतुपर्ण को समग्र निष्पादन के लिए प्रधानाचार्य का मेडल दो वर्षों तक लगातार मिला। वह एक ओडिसी नर्तकी है तथा अनेक प्रदर्शन कर चुकी है। उसने 1993 में फिल्मी जीवन राष्ट्रीय पुरस्कार के साथ "**श्वेत पाथारेर थाला**" से शुरू किया जिसका निर्देशन प्रभात राय ने किया। उसने बड़ी संख्या में बंगला तथा हिन्दी फिल्मों में अभिनय किया। इनमें एन.एन. सिप्पी की फिल्म "**तीसरा कौन**" शामिल है।

उसने अनेक देशों में सांस्कृतिक टोलियों में भी भाग लिया तथा अनेक बहुमूल्य पुरस्कार प्राप्त किये जिसमें सर्वोत्तम प्रतिभाशाली अभिनेत्री पुरस्कार और काजी नजरुल सेंटेनरी पुरस्कार शामिल है।

Rituparna Sengupta

A graduate from the prestigious Lady Brabourne College, Rituparna received the Principal's Medal for two years consecutively for all-round performance. She is an odissi dancer and has held several shows. She joined films with the National Award winning **"Swet Patherer Thala"** directed by Prabhot Roy in 1993. She has acted in a large number of Bengali and Hindi films. One of these was N. N. Sippy's **"Teesra Kaun"**.

She has also taken part in cultural troupes to different countries, and won a large number of prestigious awards including the most promising actress award and the Kazi Nazrul Centenary Award.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

प्रकाश राज

सह-अभिनेता : **प्रकाश राज** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1997 का पुरस्कार प्रकाश राज को तमिल फिल्म **इरुवर** में एक शक्तिशाली चरित्र के लिए दिया गया है जो विविधतापूर्ण राजनीतिक जीवन का संवेदनशील एवं समतुरूप भूमिका प्रस्तुत करता है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

PRAKASH RAJ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actor PRAKASH RAJ

Citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1997 is given to **PRAKASH RAJ** for the Tamil film **IRUVAR** for his sensitive and consistent portrayal of a powerful character that spans a colourful political career.

प्रकाश राज

कर्नाटक निवासी प्रकाश राज अब चेन्नई में रहते हैं। प्रकाश कई वर्षों तक कन्नड़ अमेचर थियेटर के लिए अभिनेता-लेखक और निर्देशक के रूप में कार्य करते रहे हैं। उन्होंने लगभग 2500 भारतीय नाटकों और पश्चिमी रूपांतरणों में कार्य किया है। टेलिविजन धारावाहिकों के लिए अभिनेता-निर्देशक के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने 1993 में मुख्यधारा सिनेमा में "**हरकेया कुरी**" से प्रवेश किया। इस फिल्म को सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म पुरस्कार मिला।

तमिल फिल्मों में उनका प्रवेश के. बालाचन्दर की फिल्म "**द्वैत**" से हुआ। बाद में उन्होंने मणिरत्नम की "**बाम्बे**" में भी काम किया। फिर "**असई**" और अब लगभग सभी दक्षिण भारतीय भाषाओं की फिल्मों में काम कर रहे है। इस समय उनके पास तमिल फिल्मों में कार्य करने की एक लम्बी सूची है।

Prakash Raj

A native of Karnataka now living in Chennai, Prakash was an actor-writer and director in Kannada amateur theatre for many years and was involved in more than 2500 shows of Indian plays and western adaptations. After working as actor-director for some television serials, he entered mainstream cinema with **"Harakeya Kuri"** in 1993, which won the best regional film award.

His entry into Tamil films came through K. Balachander's film **"Duet"**, after which he acted in Mani Ratnam's **"Bombay."** After that, he acted in **"Aasai"**, and has now done films in all the south Indian languages. He has a large number of Tamil films on the floors.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

करिश्मा कपूर

सह-अभिनेत्री : **करिश्मा कपूर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1997 का पुरस्कार **करिश्मा कपूर** को हिन्दी फिल्म **दिल तो पागल है** में एक ऐसी युवा महिला का सजीव एवं उत्तम प्रदर्शन करने के लिए दिया गया है जो दोस्ती तथा प्रेम को महत्व देती है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

KARISMA KAPOOR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actress: **KARISMA KAPOOR**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1997 is given to **KARISMA KAPOOR** in the Hindi Film **DIL TO PAGAL HAI** for her spirited and moving performance as a young woman who values friendship and love.

करिश्मा कपूर

महान अभिनेता राज कपूर की पौत्री तथा अभिनेता-फ़िल्म निर्माता रणधीर कपूर तथा पूर्व अभिनेत्री बबीता की पुत्री करिश्मा ने अभिनय कालेज जाने के दौरान ही प्रारंभ कर दिया। शीघ्र ही उसने कालेज छोड़ दिया। करिश्मा ने निर्माता डी. रामानायडु एवं निर्देशक के. मुरली मोहन की फ़िल्म "**प्रेम कैदी**" में 1991 से काम शुरू किया। रामानायडु तथा तथा मुरली मोहन ने दो वर्ष के बाद करिश्मा को "**अनाड़ी**" में पुनः प्रस्तुत किया।

उसके बाद करिश्मा ने लम्बा सफर तय किया। गत सात वर्षों के दौरान उसने चालीस से अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया। इनमें से कुछ अच्छी फ़िल्में थी और कुछ बुरी, किन्तु इस सदर्भ में करिश्मा भाग्यशाली रही कि उसने प्रत्येक वर्ष एक या दो अच्छी फ़िल्में दी। उसकी फ़िल्मों, "**राजा बाबू**", "**अन्दाज अपना अपना**", "**कुली नं. 1**", "**हीरो नं. 1**", "**राजा हिन्दुस्तानी**", "**जीत**", और "**जुड़वा**" आदि है। "**दिल तो पागल है**" में उसके अभिनय के लिए उसे राष्ट्रीय पुरस्कार एवं अन्य लोकप्रिय पुरस्कार दिए गए है।

Karisma Kapoor

Grand-daughter of the master showman Raj Kapoor and daughter of actor-filmmaker Randhir Kapoor and former actress Babita, Karisma had taken to acting while still in college, which she quit soon after. Karisma joined the unit of producer D. Rama Naidu and director K. Murali Mohan's "Prem Qaidi" in 1991. Rama Naidu and Murali Mohan again repeated Karisma two years later in "**Anari**".

Karisma, now 24, has come a long way since then. She has acted in over forty films in the last seven years. And while some have been good and some have been bad, it was been lucky for Karisma that she has given at least one or two hits every year. Her films include "**Raja Babu**", "**Andaz Apna Apna**", "**Coolie no. 1**", "**Hero no. 1**", "**Raja Hindustani**", "**Jeet**" and "**Judwa.**" Her role in "**Dil to Pagal hai**" has won her the National Award and also several popular awards.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

धनराज

बाल कलाकार : **धनराज** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशंस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1997 का पुरस्कार **धनराज** को हिन्दी फिल्म **धन्ना** में अपंग व्यक्ति के वास्तविक अभिनय के लिए दिया गया है। उसकी जिज्ञासा तथा रुचि उसे सामाजिक तौर पर बहिष्कृत से अपने समुदाय में आत्म शिक्षित सदस्य के रूप में बदल देती है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

DHANRAJ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Child Artist: **DHANRAJ**

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1997 is given to **DHANRAJ** in the Hindi Film **DHANNA** for the Actor's natural portrayal of a disabled person. His curiosity and interests make him turn from a social outcaste into a self-learning member of his community.

धनराज

दिल्ली के एक मध्यम वर्गीय परिवार का धनराज जोनवर जन्म से मानसिक रूप से अपंग है। अब 16 वर्षीय धनराज एक बड़े परिवार जिसमें चार भाई और चार बहनें हैं, का सदस्य है। उसने राजधानी में इनैबलिंग सेंटर में अध्ययन किया। उसने इस पुरस्कार को भगवान की देन माना है। फिल्म में अभिनीत चरित्र की तरह वह वास्तविक जीवन में भी सीखने में काफी रुचि रखता है।

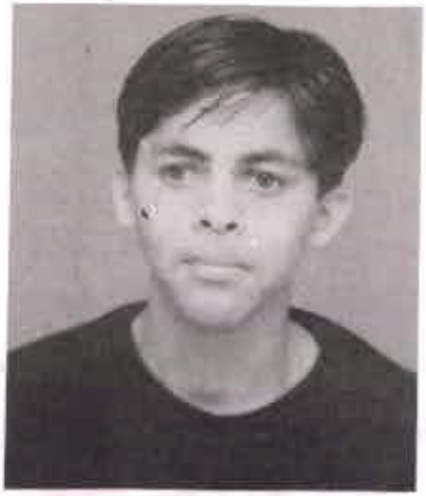

Dhan Raj

Coming from a middle class family in Delhi, Dhan Raj Jonwar is mentally handicapped from birth. Now 16 years old, Dhan Raj belongs to a large family of four brothers and four sisters. He studied in the Enabling Centre in the capital.

He considers the award as a blessing of the almighty. Like the character he portrayed in the film, he is anxious to learn.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

हरिहरन

पार्श्व गायक : हरिहरन को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1997 का पुरस्कार हरिहरन को हिन्दी फिल्म बार्डर में गीत ''मेरे दुश्मन, मेरे भाई'' के भावपूर्ण गायन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

HARIHARAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Male Playback Singer: **HARIHARAN**

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1997 is given to **HARIHARAN** for his melodious rendering of the heartwarming song, "MERE DUSHMAN, MERE BHAI" in the Hindi film Border.

हरिहरन

सुप्रसिद्ध कर्नाटकी संगीतकार अलामेलु मणि एवं स्वर्गीय एच.ए.एस. मणि के पुत्र हरिहरन ने कर्नाटकी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत दोनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। विज्ञान में स्नातक एवं एक प्रशिक्षित विधिवक्ता ने प्रारंभ में ही संगीत से अपना जीवन चलाने का निर्णय लिया। उन्होंने दक्षिण भारत में गजल गाना प्रारंभ किया जिसका आठवें दशक में काफी प्रचलन था। उनकी पहली अलबम "**गजल का मौसम**" आई जिसके बाद "**सुकून**" आई।

शीघ्र ही वे उर्दू भाषा के विशेषज्ञ हो गये तथा आठवें दशक के अंतिम वर्षों में "**रिफ्लेक्शन्स**" एवं "**होराइजन**" तथा नवें दशक के प्रारंभ में "**दिल की बात**" आई। "**हाजिर**" में उन्होंने सुप्रसिद्ध तबलावादक उस्ताद जाकिर हुसैन के साथ काम किया, गजल के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ था। "**गुलफाम**" और "**पैगाम**" को अनेक पुरस्कार मिले।

उन्होंने हिन्दी और तमिल फ़िल्मों में 300 से अधिक गीत गाये तथा अनेक पुरस्कार प्राप्त किये जिसमें "**हकीकत**" के लिए प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है। बाद में उन्होंने लेसली लेविस के साथ "**कर्नल कज़न**" के रूप में एक टीम बनाई और उनके पहले प्रस्तुतीकरण "**सा नी दा पा**" को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार दिये गये। "**बार्डर**" में 'मेरे दुश्मन, मेरे भाई' के लिए उनको दिया जाने वाला पुरस्कार उनका दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Hariharan

Son of wellknown Carnatic musicians Alamelu Mani and the late H. A. S. Mni, Hariharan trained in both Carnatic and Hindustani Classical music. A science graduate and trained lawyer, he decided early in life to make music his life vocation. He startled the purists in South India by taking to singing ghazals which were in vogue in the eighties. His first album was **"Ghazal ka mausam"** followed by **"Sukoon."**

He soon mastered the nuances of the Urdu languages and followed up with **"Reflections"** and **"Horizon"** in the late eighties and **"Dil ki Baat"** in the early nineties. In **"Hazir"**, he teamed up with tabla wizard Ustad Zakir Hussain, a never-before event in Ghazals. **"Gulfam"** and **"Paigham"** won several awards.

He has also sung over 300 songs in Hindi and Tamil films and won several awards, including his first National Award for **"Haqeeqat"**. Later, he teamed up with Leslie Lewis as **"Colonial Cousins"** and their first number **"Sa ni da pa"** won several national and international awards. The award for **"Mere Dushman, mere Bhai"** in **"Border"** is his second National Award.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

चित्रा

पार्श्व गायिका : **चित्रा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1997 का पुरस्कार **चित्रा** को हिन्दी फिल्म **विरासत** में गीत ''पायले छुन-मुन छुन-मुन, झांझरें रुन झुन रुन झुन, कितना मधुर है यह मिलन'' के भावपूर्ण एवं हृदयग्राही ढंग से गायन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

CHITHRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Female Playback Singer: **CHITHRA**

Citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1997 is given to **CHITHRA** for her effortless and Playful rendering of the song 'PAYALEN CHHUN-MUN, JHHANJHHAREIN RUN JHHUN RUN JHHUN, KITNA MADHUR HAI YE MILAN' in the Hindi Film Virasat.

चित्रा

संगीतज्ञों के घराने में पैदा हुई श्रीमती के.एस. चित्रा, जहां उसके पिता स्व. कृष्णन् नायर जो एक प्रसिद्ध गायक थे तथा माता एक वीणा वादक थीं, ने संगीत में स्नातकोत्तर तक शिक्षा विशेषता के साथ की। उन्होंने कर्नाटक की शैली में गहन प्रशिक्षण डा. के. प्रोमनाकुट्टी, केरल विश्वविद्यालय में गायन के प्रोफेसर से नेशनल टेलैंट सर्च स्कालरशिप के तहत हासिल की। उन्हें श्री एम.जी. राधाकृष्णन् "**अटट्हासम**" से चलचित्रों में लेकर आये बाद में उन्होंने के.डी. यशुदास के साथ कुछ आयोजनों में भी भाग लिया।

उन्हें तमिल फ़िल्मों में गाने का मौका इलियाराजा के द्वारा "**नी थाना अन्था कुइल**" में मिला। उन्हें पहला राष्ट्रीय पुरस्कार '**सिन्धु भैरवी**" के लिए मिला जिसका संगीत इलियाराजा ने दिया था। उन्होंने अभी तक तकरीबन 1100 गाने दक्षिण की चारों भाषाओं तथा हिन्दी, बंगाली व उड़िया भाषा में गाये हैं। अब तक उन्हें पांच राष्ट्रीय पुरस्कार, 1986 (**सिन्धु भैरवी**), 1987 (**नरवक्षतांगल**), 1989 (**वैशाली**) 1996 (**मिन्सारा कणवु**) तथा पहला हिन्दी पार्श्व गायन पुरस्कार इस वर्ष "**पायलें छुन मुन, छुन मुन, झांझरें रुन झुन रुन झुन**", के लिये मिला है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 1985 से 1995 तक लगातार पार्श्वगायन में केरल सरकार का पुरस्कार पाने का कीर्तिमान स्थापित किया है जिसमें 1989 उन्हें दो गानों के लियें पुरस्कृत किया जाना शामिल है। अन्य दक्षिणी राज्यों ने भी उन्हें उनके गानों के लिये सम्मानित किया है तथा उन्हें अन्य लोकप्रिय पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

Chitra

Born in a family of musicians with her father the late Krishnan Nair a wellknown singer and her mother a veena player, Mrs K. S. Chithra postgraduated in music with honours. She received comprehensive training in Carnatic Classical music from Dr K. Omnakutty, Professor of Music at Kerala University under the National Talent Search Scholarship. She was initiated into film music by M. G. Radhakrishnan through films like "**Attahasam**", and then joined K. J. Yesudas on some of his concerts.

She got her break in Tamil films through Ilayraja in "**Nee Thana Antha Kuil**". She got her first National Award for "**Sindhu Bhairavi**" which had music by Ilayraja. She has since sung about 11000 songs in all the four south Indian languages and also in Hindi, Bengali and Oriya. She has so far won five National Awards in 1986 ("**Sindhu Bhairavi**"), 1987 ("**Nakhashatangal**"), 1989 ("**Vaishali**"), 1996 ("**Minsara Kanavu**") and her first Hindi playback singing award this year for the song "**Payaliya Chun-chum chun-chum, jhanjahari run-jhun run-jhun.**"

Apart from this, she has an all-time record by winning the Kerala State's playback singing award without a break from 1985 to 1995, including awards for two songs in 1989. The other southern states have also awarded her for her songs, in addition to a large number of popular prizes received by her.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

संतोष सिवन

कैमरामैन : **संतोष सिवन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

फ़िल्म प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला : **प्रसाद फ़िल्म लैबोरेट्रीज़** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1997 का पुरस्कार **संतोष सिवन** को तमिल फ़िल्म **इरुवर** में समान शैली तथा प्रतिमान बनाये जाने वाले युग के उत्तम छायांकन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

SANTOSH SIVAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman: **SANTOSH SIVAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the laboratory processing the film : **PRASAD FILM LABORATORIES**

Citation

The Award for the Best Cinematography of 1997 is given to **SANTOSH SIVAN** in the Tamil film IRUVAR for maintaining a consistent style and pattern that does justice to the period and scale that the narrative deals with.

संतोष सिवन

भारतीय फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान से छायांकन सीखे हुए सिवान ने शीघ्र ही अपने लिये रंगों की संवेदनशीलता के कारण बड़ा नाम कमा लिया है। अपनी वर्तमान फ़िल्म ''**इरुवर**'' से पहले, उन्होंने विभिन्न भाषाओं की फ़िल्मों में छायाकार के रूप में कार्य किया है तथा तीन राष्ट्रीय तथा चार राज्य पुरस्कार छायांकन के लिये जीते हैं। उनकी कुछ पुरस्कार प्राप्त फ़िल्में ''**पेरुनाथायन**'', ''**मोहिनीअट्टम**'', ''**रोजा**'', ''**इंदिरा**'' तथा ''**बरसात**'' है। कुछ हिन्दी फ़िल्में जिनका उन्होंने छायांकन किया है वे हैं ''**योद्धा**'', ''**रुदाली**'', ''**दलपति**'', तथा ''**गर्दिश**''।

एक बहुत ही सफल छायाकार के कार्यकाल के पश्चात्, सिवान ने निर्देशन का कार्य किया तथा अपनी पहली फ़िल्म ''**हलो**'' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार पाया। इस फ़िल्म को विदेश में होने वाले कई फ़िल्म समारोहों में भी भेजा गया। सिवन ने राष्ट्रीय फ़िल्म जूरी में भी कार्य किया। फ़िल्म ''**टेररिस्ट**'' का उन्होंने निर्देशन किया है, जिसे प्रादेशिक भाषाओं की फ़िल्मों की श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है।

Santosh Sivan

After learning cinematography at the Film and Television Institute of India, Sivan soon made a name for himself with an excellent sense of colour. He has worked as cameraman in films made in different languages, and won three national and four state awards for cinematography before his present film **"Iruvar."** Some of his award-winning films are **"Perunthachan"**, **"Mohiniyattam"**, **"Kaalapani"**, **"Roja"**, **"Indira"**, and **"Barsaat."** Some of the Hindi films he photographed are **"Yoddha"**, **"Dalpathi"**, **"Rudaali"** and **"Gardish."**

After a very successful career as a cinematographer, Sivan has now tried his hand at direction, and won a National award with his very first film, **"Halo"**. The film was also sent to some festivals abroad. Sivan has also served on the National Film Jury. Another film directed by him, **"The Terrorist"**, has also won a National Award this year in the regional film category.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

ऋतुपर्णो घोष

पटकथा लेखक : ऋतुपर्णो घोष को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1997 का पुरस्कार **ऋतुपर्णो घोष** को बंगाली फ़िल्म **दहन** में सामाजिक जिम्मेदारियों तथा व्यक्तिगत जानकारियों के ताने बाने को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

RITUPARNO GHOSH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Screenplay Writer: **RITUPARNO GHOSH**

Citation

The Award for the Best Screenplay of 1997 is given to **RITUPARNO GHOSH** in the Bengali Film **DAHAN** , for tactfully crafting a sensitive theme that dwells upon an incident which raises issues of social responsibility and personal awareness.

ऋतुपर्णो घोष

लघु फिल्म निर्माता सुनील घोष के पुत्र ऋतुपर्णो को सिनेमा से लगाव उस समय हुआ जब वे अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर कर रहे थे और वे एक कापीराइटर के रूप में एक विज्ञापन एजेंसी से जुड़ गये। ऋतुपर्णो को अपनी विज्ञापन फिल्मों के लिए अठारह पुरस्कार मिले हैं।

फीचर फिल्मों में उन्होंने पहला प्रयास बच्चों के लिए "**हिरेर अंग्ति**" से किया। उनको राष्ट्रीय ख्याति उनकी दूसरी फिल्म "**उनीशे अप्रिल**" से मिली जिसे वर्ष की सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मिला तथा इसकी अभिनेत्री देबा श्री राय को सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। इसे भारतीय पैनोरमा के लिए भी चुना गया तथा अनेक अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में भी शामिल किया गया। ऋतुपर्णो ने टेलिविजन के लिए एक धारावाहिक - "**बहन्नो एपिसोड**" भी बनाया। अपनी दूसरी फिल्म की तरह "**दहन**" में भी उसकी अभिनेत्री को पुरस्कार मिले हैं।

Rituparno Ghosh

Son of short filmmaker Sunil Ghosh, Rituparno had shown an interest in cinema even when he was completing his post-graduation in economics when he joined an advertising agency as copywriter. Rituparno won eighteen awards for his advertising films.

His first venture in feature films was through "Hirer Angti" for children. He gained National recognition with his second **"Unishe April"** which won the best Indian film of the year award with its heroine Debasree Roy getting the Best Actress Award. It was also selected for the Indian Panorama and entered in several international festivals. Rituparno has also made a serial for television - **"Bahanno Episode"**. Like his second film, **"Dahan"** also receives awards for its actresses.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

सम्पत

ध्वनि आलेखक : **सम्पत** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1997 का पुरस्कार **कृष्णस्वामी सम्पत** को मलयालम फिल्म **एनु स्वंथम जानकी कुट्टी** में सपनों के संसार में फंसे अकेले मन से संबंधित विषय को बिना ध्वनि के प्रयोग के प्रस्तुत करने है के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

SAMPATH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer: **SAMPATH**

Citation

The Award for the Best Audiography of 1997 is given to **KRISHNASWAMY SAMPAT** in the Malayalam Film **ENNU SWANTHAM JANAKIKUTTY** for using silence creatively to enhance a subject that deals with the isolation of a mind trapped in fantasy.

के. सम्पत

कई फ़िल्मों के अनुभवी, चौंसठ वर्षीय सम्पत ने छायांकन तथा ध्वनि अभियांत्रिकी पाँचवें दशक में टेक्नोलॉजीकल डिप्लोमा एक्जामिनेशन बोर्ड, चिन्नई से सीखा। शीघ्र ही ए.वी.एम. स्टूडियों में कार्य प्रारम्भ करके, वे ए.वी.एम.आर.आर. थियेटर में मुख्य ध्वनि आलेखक बन गये है। उनका ध्वनि आलेखक के रूप में पहला कार्य फ़िल्म **''प्रतिभान कणवू''** में था।

सम्पत ने अलग अलग संगीत निर्देशकों के साथ विभिन्न भाषाओं में जिनमें कन्नड़, उड़िया, बंगाली, हिन्दी, तेलुगु, तमिल तथा मलयालम की फ़िल्में शामिल हैं, करीब 5000 गाने रिकार्ड किये हैं। अधिकतर ए.वी.एम की फ़िल्में जिनमें उन्होंने काम किया पुरस्कृत की गई हैं।

42 वर्ष की सेवा में, सम्पत ने वर्ष 1989, 1991 तथा 1993 में कम्पेक्ट डिस्क एल्बम भी बनाई जिसे बहुत सराहा गया है। राष्ट्रीय पुरस्कारों की ज्यूरी ने पाया कि सम्पत ने **''एनु स्वंथम जानकी कुट्टी''** में मौन का सक्षम प्रयोग किया है।

K. Sampath

A veteran of many films, the 64-year old Sampath learnt cinematography and sound engineering in the fifties from the Technological Diploma Examination Board, Chennai. Joining AVM Studios as an apprentice soon after, he has risen to be the chief audiographer in the AVM 'RR' theatre. His first independent work as audiographer was in the film **"Parthiban Kanavu".**

Sampath has recorded more than 5000 songs under different music directors in different languages including Kannada, Oriya, Bengali, Hindi, Telugu, Tamil, and Malayalam pictures. Most of the AVM films for which he worked won awards.

Backed by a service of 42 years, Sampath has won state awards in 1989, 1991 and 1993. He has also recorded a special Compact Disc album of K. J. Yesudas, which has been highly acclaimed. The jury for the National Awards found that Sampath used even silence to great advantage in the film **"Ennu Swantham Janakikutty".**

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

ए. श्रीकर प्रसाद

संपादक : **ए. श्रीकर प्रसाद** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संपादक का 1997 का पुरस्कार **ए. श्रीकर प्रसाद** को तमिल फिल्म **दि टेररिस्ट** में उसके उत्कृष्ट, स्वच्छ एवं पैने संपादन के लिए दिया गया है जिससे फिल्म दिलचस्प, अपने आप में बंधी हुई तथा विचारणीय हो गई है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

A. SREEKAR PRASAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **A. SREEKAR PRASAD**

Citation

The Award for the Best editing of 1997 is given to **A SREEKAR PRASAD** for the Tamil Film **THE TERRORIST,** for his sleek, efficient and sharp editing which gives the film an absorbing pace, making it gripping and thought-provoking.

ए. श्रीकर प्रसाद

साहित्य में डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् श्रीकर ने अपने पिता ए संजीवी से संपादन के मूलतत्वों को समझना शुरू किया। 25 फ़िल्मों में अपने पिता के सहायक के रूप में कार्य करने के पश्चात् उन्होंने अपना संपादन स्टूडियों आधुनिक उपकरणों के साथ शुरू किया। उन्होंने देशव्यापी फ़िल्म निर्माताओं के लिए अनेक वृत्तचित्रों एवं 100 से अधिक फीचर फ़िल्मों का संपादन किया।

पिछले वर्ष श्रीकर को दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए : एक असमिया फ़िल्म **''राग विराग''** के लिए तथा दूसरा गैर कथा चित्र **''नौका करितरामु''** के लिए। उन्होंने बहुपुरस्कृत असमिया फ़िल्म अदाज्या का भी संपादन किया है। हिन्दी फिल्म **''सुख''** के संपादन से उन्होंने दक्ष संपादन की नई परम्परा की शुरूआत की और उन्हें पहला राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्रीकर ने सहजो सिंह द्वारा निर्देशित **''कोल टेल्स''** का संपादन भी किया है जिसे मुम्बई अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ है। कई राज्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए है।

A. Sreekar Prasad

After graduating in literature, Sreekar learnt the rudiments of editing from his father A. Sanjivi who is held in great esteem in the film industry. He worked as his father's associate for about twenty films. Subsequently, he started his own editing studio and installed the latest equipment. He has edited a large number of documentaries and more than 100 feature films for filmmakers from all over the country.

Last year, Sreekar — now 35 — won two National Awards: one for the Assamese feature **"Rag Birag"** and the other for the documentary **"Nauka Caritramu."** He also edited the Assamese **"Adajya"** which has won many awards. His edited film **"Raakh"** in Hindi had set a trend for slick editing and got him his first National Award, and he also edited the documentary **"Kol Tales"** by Sehjo Singh which won a Special Jury Award at the Mumbai International Film Festival for Short Films this year. He has also received several state awards.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

रमेश देसाई

कला निर्देशक : **रमेश देसाई** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1997 का पुरस्कार **रमेश देसाई** को कन्नड़ फ़िल्म **थाई साहेब** में फ़िल्म के युग, रहन सहन, तथा दशक से दशक के बदलते माहौल को बारीकी एवं प्रत्येक विवरण के साथ और उपयुक्त वातावरण में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION

RAMESH DESAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Art Director: **RAMESH DESAI**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1997 is given to **RAMESH DESAI** for the Kannada Film **THAI SAHEB** for his meticulous attention to minute details creating the exact atmosphere and aura of the film's period life-style and its changing perspective decade to decade.

रमेश देसाई

रमेश ने फ़िल्मों से हटकर भवन एवं सड़क निर्माण पाठ्यक्रम में डिप्लोमा तथा सिविल इंजीनियरी में डिप्लोमा किया। किन्तु बाद में वे थियेटर, सिनेमा और टेलिविजन से जुड़ गये। स्टेज पर वे कला निर्देशक, वेशभूषा डिजाइनिंग, प्रकाश की व्यवस्था, मेक अप एवं अभिनय करते थे। वे 1993-94 में एक अभिनेता के रूप में फ़िल्म उद्योग में आए, किन्तु बाद में कला निर्देशन के रूप में काम किया और अब तक चार फ़िल्मों के लिए काम कर चुके हैं। उन्होंने कुछ टेलिविजन कार्यक्रमों के लिए कला निर्देशक एवं सहायक निर्देशक के रूप में भी काम किया है। चौंतीस वर्षीय रमेश को 1994-95 को उनकी प्रथम फ़िल्म **''गंगला गंगा माई''** जिसका निर्देशन बसन्त मोकाशी ने किया, में सर्वोत्तम कला निर्देशन के लिए कर्नाटक राज्य पुरस्कार मिला। वर्तमान का पुरस्कार उनका पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Ramesh Desai

Ramesh trained in a vocation completely removed from films: Diploma course in building and road construction and Diploma in civil engineering. But then he drifted into theatre, cinema and television. On stage, he was involved as art director. Costume designing, light arrangements, make-up and acting. He entered the film industry in 1993-94 as an actor but later took up art direction, and has worked for four films. He has also worked as art director and associate director for some television programmes.

Thirtyfour years old, Ramesh has won the Karnataka state award for best art direction in his very first film, **"Gangavva Ganga Maai"** directed by Vasant Mokashi in 1994-95. The present award is his first National Award.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

वैशाली कासरवल्ली

वेशभूषाकार : **वैशाली कासरवल्ली** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषाकार का 1997 का पुरस्कार **वैशाली कासरवल्ली** को कन्नड़ फ़िल्म **थाई साहेब** में चित्रित काल के अनुरूप उच्च वर्ग से साधारण व्यक्ति तक के लिए खूबसूरत एवं प्रामाणिक वेशभूषा तैयार करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

VAISHALI KASARAVALLI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Costume Designer: **VAISHALI KASARAVALLI**

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1997 is given to **VAISHALI KASARAVALLI** for the Kannada Film **THAISAHEB** for her care and perception in designing the period costuming required for a film that covers a demanding range encompassing the upper-class to the common man.

वैशाली कासरवल्ली

200 से अधिक फ़िल्मों एवं टेलिविजन कार्यक्रमों के अतिरिक्त 150 के लगभग नाटकों में अभिनय करने वाली वैशाली को गिरीश कासरवल्ली द्वारा निर्देशित फ़िल्म "**अकरामाना**" में सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। गिरीश कासरवल्ली की कुछ फ़िल्मों में उन्होंने सहायक निर्देशक और वेशभूषाकार के रूप में भी काम किया। "**हयवदन**" नाटक में अभिनय के लिए उन्हें अखिल भारतीय आलोचना का पुरस्कार भी प्राप्त किया। अपनी फ़िल्मों के लिए अनेक बार उन्हें फैन्स एसोसिएशन का पुरस्कार भी मिला।

वैशाली ने कुछ डाक्यूमेंटरी-फ़िल्मों और टेलिविजन के लिए कन्नड़ धारावाहिक "**गुडीनिन्डया बगनक्के**" का निर्देशन भी किया। उन्होंने कर्नाटक सरकार के सूचना और प्रचार विभाग के लिए कुछ सांस्कृतिक वीडियो पत्रिकाओं का निर्माण एवं निर्देशन किया। वैशाली ने हिन्दी और मराठी के लगभग दस नाटकों का कन्नड़ में अनुवाद भी किया।

Vaishali Kasaravalli

A seasoned actress of more than 200 films and television programmes apart from about 150 plays, Vaishali has won the best actress award for "**Akramana**" directed by Girish Kasaravalli, in some of whose films she has been involved as associate director and costume designer. She had won an All india Critics Award for acting in the play **"Hayavadana"**. She has received awards for fans associations for several of her films.

Vaishali has also directed some documentaries and the television serial **"Goodinindia Baganakke"** in Kannada. She produced and directed some cultural video magazines for the Karnataka Government's Information and Publicity Department. Vaishali has translated about ten plays from Hindi and Marathi into Kannada.

Jayamala (Special Jury Award)

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

एम.एम. कीरवाणी

संगीत निर्देशक: **एम.एम. कीरवाणी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशक का 1997 का पुरस्कार **एम.एम. कीरवाणी** को तेलुगु फिल्म **अन्नामैया** में उत्तम शास्त्रीय संगीत तथा भक्तिमय उत्साह के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

M.M. KEERAVANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director: **M.M. KEERAVANI**

Citation

The Award for the Best Music Director of 1997 is given to **M.M. KEERAVANI** for the Telugu Film **ANNAMAYYA** for the film's rich, classical music scores, and its devotional fervour.

एम.एम. कीरवाणी

कीरवाणी ने दक्षिण की सभी भाषाओं की सौ से अधिक फ़िल्मों में संगीत दिया है तथा वर्ष 1991 और 1992 में विभिन्न राज्य सरकारों तथा निजी संस्थाओं से आठ-आठ पुरस्कार प्राप्त करने का कीर्तिमान स्थापित किया है। 37 वर्षीय कीरवाणी ने संगीत में कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की।

संगीत निर्देशक के रूप में उनकी पहली फ़िल्म तेलुगु में थी "**मानस ममता**" तथा तमिल में पहली फ़िल्म थी "**वानमे इलाई**", मलयालम में "**नीलगिरि**" एवं कन्नड़ में "**मैसूर हुली**"। सभी भारतीय भाषाओं में संगीत देने की कीरवाणी की आकांक्षा है।

उन्होंने संगीत निर्देशक के रूप में वर्ष 1990 से कार्य शुरू किया तथा उनके संगीत से सज्जित बीस फ़िल्में बाक्स आफिस पर सौ दिन से अधिक चल चुकी है।

M. M. Keeravani

Having given music in more than a hundred films in all the languages of south India, Keeravani holds the record of having won as many as eight awards each in 1991 and 1992 from different state governments and private organisations. Though he did not have any formal education in music, this 37-year old is self-taught. His first film as music director was in Telugu in **"Manasu Mamatha"** and the first in Tamil was **"Vaname Ellai,"** in Malayalam **"Neelagiri"** and in Kannada **"Mysore Huli."**

Keeravani's ambition is to score music in all Indian languages. He began as a music director in 1990 and almost twenty of the films in which he gave music have had a run of more than a hundred days.

एम.एम. कीरवाणी

कीरवाणी ने दक्षिण की सभी भाषाओं की सौ से अधिक फ़िल्मों में संगीत दिया है तथा वर्ष 1991 और 1992 में विभिन्न राज्य सरकारों तथा निजी संस्थाओं से आठ-आठ पुरस्कार प्राप्त करने का कीर्तिमान स्थापित किया है। 37 वर्षीय कीरवाणी ने संगीत में कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की।

संगीत निर्देशक के रूप में उनकी पहली फ़िल्म तेलुगु में थी "**मानस ममता**" तथा तमिल में पहली फ़िल्म थी "**वानमे इलाई**", मलयालम में "**नीलगिरि**" एवं कन्नड़ में "**मैसूर हुली**"। सभी भारतीय भाषाओं में संगीत देने की कीरवाणी की आकांक्षा है।

उन्होंने संगीत निर्देशक के रूप में वर्ष 1990 से कार्य शुरू किया तथा उनके संगीत से सज्जित बीस फ़िल्में बाक्स आफिस पर सौ दिन से अधिक चल चुकी है।

M. M. Keeravani

Having given music in more than a hundred films in all the languages of south India, Keeravani holds the record of having won as many as eight awards each in 1991 and 1992 from different state governments and private organisations. Though he did not have any formal education in music, this 37-year old is self-taught. His first film as music director was in Telugu in **"Manasu Mamatha"** and the first in Tamil was **"Vaname Ellai,"** in Malayalam **"Neelagiri"** and in Kannada **"Mysore Huli."**

Keeravani's ambition is to score music in all Indian languages. He began as a music director in 1990 and almost twenty of the films in which he gave music have had a run of more than a hundred days.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

जावेद अख्तर

गीतकार: **जावेद अख्तर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम गीतकार का 1997 का पुरस्कार **जावेद अख्तर** को हिन्दी फिल्म **बार्डर** में ऐसे भावुक एवं संवेदनशील शब्दों के प्रयोग के लिए दिया गया जिससे राष्ट्र और सभी मानव जाति प्रभावित हों।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

JAVED AKHTAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Lyricist: **JAVED AKHTAR**

Citation
The Award for the Best Lyrics of 1997 is given to **JAVED AKHTAR** for the Hindi Film **BORDER** for its evocative wording that is imbued with compassion for our nation and for human beings at large.

जावेद अख्तर

सुप्रसिद्ध कवि एवं गीतकार जां निसार अख्तर के पुत्र तथा उर्दू लेखकों के वंश से संबंध रखने वाले जिनमें मजाज़ तथा मुजतर ख़ैराबादी शामिल हैं, जावेद को फ़िल्म उद्योग में पहली ख्याति एक पटकथा लेखक के रूप में प्राप्त हुई। सलीम के साथ युगलबन्दी की तथा इस जोड़ी ने अनेक प्रसिद्ध एवं विख्यात फ़िल्में जिनमें "**जंजीर**", "**दीवार**", "**शोले**", "**सीता और गीता**", "**डान**", और "**त्रिशूल**" शामिल हैं, की पटकथा लिखी। सलीम से अलग होने के बाद भी जावेद ने "**बेताब**", "**सागर**" और "**मिस्टर इण्डिया**" जैसी फ़िल्मों की पटकथा लिखी। उन्हें उनकी पटकथा के लिए अनेक पुरस्कार मिले। जावेद ने अनेक फ़िल्मों के गीत लिखे और उनके "**सिलसिला**", "**मिस्टर इण्डिया**" तथा "**तेजाब**" का 'एक दो तीन' के गीत अत्यन्त लोक प्रिय हुए और उन्हें "**1942 : एक लव स्टोरी**" तथा "**पापा कहते हैं**" के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें "**साज**" के गीतों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

उन्होंने उर्दू कवितायें 1980 से लिखना प्रारंभ किया तथा चुनिंदा कविताओं की एक पुस्तक "**तरकश**" बाद में प्रकाशित हुई जिसका अब छठा संस्करण चल रहा है। बाद में वे स्वर्गीय उस्ताद नुसरत अली खां से जुड़ गये तथा "**संगम**" आई जो भारत और पाकिस्तान दोनों में अत्यन्त प्रचलित हुई।

प्रसिद्ध अभिनेत्री और राजनीतिज्ञ शबाना आजमी के साथ विवाह किया और उनके साथ जावेद सामाजिक एवं राजनीतिक मामलों में बहुत सक्रिय रहते हैं।

Javed Akhtar

Son of the renowned poet and lyricist Jan Nisar Akhtar and hailing from a lineage of Urdu writers among them Majaz and Muzter Khairabadi, Javed first achieved fame in the film industry as a script writer. Forming a team with Salim, the duo wrote several top films including **"Zanjeer", "Deewar", "Sholay", "Seeta aur Geeta", "Don", and "Troshul"**. Even after the split with Salim, Javed wrote scripts for films like **"Betaab", "Sagar"**, and **"Mr India."** He won several popular awards for his scripts. Javed also wrote lyrics for many films and his songs for **"Silsila", "Sagar", "Mr India"** and the **"Ek Do teen"** number from **"Tezaab"** proved very popular and he won several awards for **"1942: A love story"** and **"Papa Kehte Hain."** He got the National Award for songs in **"Saaz."**

Writing Urdu poetry since 1980, he later published his choice poetry in "Tarkash", which is now in its sixth edition. He later joined with the late Ustad Nusrat Fateh Ali Khan and brought out **"Sangam"** which is very popular in both India and Pakistan.

Married to the actress-politician Shabana Azmi, Javed along with her is very active in social and political causes.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

जयमाला

जयमाला को रजत कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मंडल का 1997 का विशेष पुरस्कार निर्देशक **जयमाला** को कन्नड़ फिल्म **थाई साहेब** में एक महिला की नियंत्रित एवं सम्मोहक भूमिका के लिए दिया गया है, जो जीवन की यात्रा शालीनतापूर्वक एवं सन्तुलन के साथ बिताती है।

SPECIAL JURY AWARD

JAYAMALA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to **JAYAMALA**

Citation

The Special Jury Award of 1997 is given to the Actress JAYAMALA in the Kannada Film **THAI SAHEB** for her restrained and compelling portrayal of a woman who silently goes through the journey of life with grace and poise.

जयमाला

प्रतिष्ठित अभिनेत्री जयमाला ने तुलु, कन्नड़, मलयालम एवं तेलुगु भाषाओं की 75 से अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है। इनमें "**कासु दाये कन्दानें**" जो तुलु भाषा में है, को सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार, मलयालम फ़िल्म "**देवलोखम**" तेलुगु फ़िल्म "**रक्षा सुदु**" एवं कन्नड़ फ़िल्म "**चांदी चमुदी**", "**अन्त**" और "**प्रेमद कणिके**" शामिल हैं।

एक निर्माता के रूप में यह उनकी चौथी फ़िल्म है, इसके अतिरिक्त उन्होंने "**अग्निपरीक्षा**", "**महेन्द्रवर्मा**", और "**मिस्टर महेश कुमार**" बनाई जो सभी कन्नड़ में थी।

Jayamala

An actress of repute, Jayamala has acted in over 75 films in Tulu dialect and the Kannada, Malayalam and Telugu languages. These include **"Kasu Daye Kandaane"** in tulu for which won the best actress award, the Malayalam film **"Devalokham"**, the Telugu film "Rakshasudu", and the Kannada films **"Chandi Chamudi"**, **"Antha"** and **"Premada Kanike"**.

This is her fourth film as producer, the others — all Kannada —being **"Agnipareeksha"**, **"Mahendravarma"**, and **"Mr Mahesh Kumar"**.

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन पुरस्कार

श्यामक दावर

नृत्य संयोजक : **श्यामक दावर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का 1997 का पुरस्कार **श्यामक दावर** को हिन्दी फ़िल्म **दिल तो पागल है** में आश्चर्यजनक एवं सौन्दर्यपरक रंगों एवं डिजाइनों के प्रयोग के लिए दिया गया है जिससे नृत्य में ताल और गति दोनों ही अलंकृत हो जाते हैं।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHY

SHIAMAK DAVAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Choreographer **SHIAMAK DAVAR**

Citation

The Award for the best choreography of 1997 is given to Shiamak Davar for the Hindi film **DIL TO PAGAL HAI** for the striking and aesthetic use of colour and design in the film with both elements enriching its phythm and dance movement

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन पुरस्कार

श्यामक दावर

नृत्य संयोजक : **श्यामक दावर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का 1997 का पुरस्कार **श्यामक दावर** को हिन्दी फ़िल्म **दिल तो पागल है** में आश्चर्यजनक एवं सौन्दर्यपरक रंगों एवं डिजाइनों के प्रयोग के लिए दिया गया है जिससे नृत्य में ताल और गति दोनों ही अलंकृत हो जाते हैं।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHY

SHIAMAK DAVAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Choreographer **SHIAMAK DAVAR**

Citation

The Award for the best choreography of 1997 is given to Shiamak Davar for the Hindi film **DIL TO PAGAL HAI** for the striking and aesthetic use of colour and design in the film with both elements enriching its phythm and dance movement

श्यामक दावर (नृत्य संयोजक)

यूनाइटेड किंगडम एवं यूनाइटेड स्टेटस के लन्दन स्कूल आफ कन्टेम्प्रेरी डांस, तथा न्यूयार्क में ब्राडवे डांस सेंटर, जहां उन्होंने अन्य बातों के अलावा जाज़ और बैलट सीखा, से प्रशिक्षण प्राप्त करके अब श्यामक अपना नृत्य स्कूल तथा इंस्टिट्यूट ऑफ पर्फामिंग आर्ट, मुम्बई में चला रहे हैं।

उन्होंने पचास से अधिक प्रदर्शन प्रस्तुत किये और संगीत थियेटर पर एक अभिनेता, गायक और नर्तक के रूप में भी काम किया। उन्होंने टेलिविजन के लिए अनेक विज्ञापन तथा प्रदर्शन प्रस्तुत करने के साथ-साथ अपने प्रदर्शन के साथ विदेश भी गये। "**दिल तो पागल है**" में एक नृत्य निर्देशक के रूप में उनकी पहली फ़िल्म है जिसके द्वारा उन्हें अनेक विख्यात एवं लोकप्रिय पुरस्कार प्राप्त हुए।

Shiamak Dawar (choreographer)

Trained in the United Kingdom and the United States in institutions like the London School of Contemporary Dance and the Broadway Dance Centre in New York where he learnt jazz and ballet among other things, Shiamak now runs his own dancing shcools and the Institute for Performing Arts in Mumbai.

He has more than fifty shows to his credit and has also worked as actor, singer and dancer in musical theatre. He has several television commercials and shows to his credit and has also been abroad with his shows. **"Dil to Pagal hai"**, his debut as dance director in feature films, has won him several popular awards as well.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

दहन (बंगला)

निर्माता : **विजय अग्रवाल एवं कल्पना अग्रवाल** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ऋतुपर्णो घोष** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **दहन** को दो ऐसी महिलाएं के सजीव चित्रण के लिए दिया गया है। जो अपनी परिस्थितियों एवं समाज के कटु सत्य का पता चलाती है एवं संघर्ष करती हैं।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

DAHAN (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **BIJAY AGARWAL** and **KALPANA AGARWAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **RITUPARNO GHOSH**

Citation

The Award for the Best feature film in Bengali of 1997 is given to **DAHAN** for the way in which the film portrays two young women who undergo the agony of discovering the harsh realities of their situation and society.

विजय अग्रवाल एवं कल्पना अग्रवाल

मूल रूप से वे एक गैर बंगला समुदाय के हैं किन्तु विजय समझता है कि उसकी जड़े बंगला में बहुत गहरी हैं। व्यापार प्रशासन में स्नातकोत्तर करने के बाद उसने अनेक व्यापार करने का प्रयास किया तथा उसकी पत्नी कल्पना अग्रवाल ने उसका भरपूर साथ दिया जो स्वयं एक चाटर्ड एकाउन्टेन्ट है।

वे तीन वर्ष पूर्व एक टेलिविजन धारावाहिक "**जीवन सेतु**" के साथ फ़िल्म संसार में आये, जिसके बाद "**प्राचीर**" आया जिसे सर्वोत्तम टी.वी. धारावाहिक का पुरस्कार मिला। उनकी प्रथम फीचर फ़िल्म विजय की कहानी पर "**मित्तिर बरीर चोटो बाऊ**" थी जिसको सुशील मुखर्जी ने निर्देशित किया तथा जो गत वर्ष प्रदर्शित की गई

"**दहन**" को अनेक पुरस्कार पहले ही मिल चुके हैं तथा इसे कुछ अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में प्रदर्शित भी किया गया है।

ऋतुपर्णो घोष

लघु फिल्म निर्माता सुनील घोष के पुत्र ऋतुपर्णो को सिनेमा से लगाव उस समय हुआ जब वे अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर कर रहे थे और वे एक कापीराइटर के रूप में एक विज्ञापन एजेंसी से जुड़ गये। ऋतुपर्णो को अपनी विज्ञापन फिल्मों के लिए अठारह पुरस्कार मिले हैं।

फीचर फिल्मों में उन्होंने पहला प्रयास बच्चों के लिए "**हिरेर अंग्ति**" से किया। उनको राष्ट्रीय ख्याति उनकी दूसरी फिल्म "**उनीशे अप्रिल**" से मिली जिसे वर्ष की सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मिला तथा इसकी अभिनेत्री देबा श्री राय को सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। इसे भारतीय पैनोरमा के लिए भी चुना गया तथा अनेक अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में भी शामिल किया गया। ऋतुपर्णो ने टेलिविजन के लिए एक धारावाहिक - "**बहन्नो एपिसोड**" भी बनाया। अपनी दूसरी फिल्म की तरह "**दहन**" में भी उसकी अभिनेत्री को पुरस्कार मिले हैं।

Bijay Agarwal & Kalpana Agarwal

Though originally from a non-Bengali community, Bijay considers himself a hard-core Bengali. After his masters in Business Administration, he tried his hand in different types of businesses supported by his wife Kalpana Agarwal, herself a qualified chartered accountant. They entered the film world three years ago with a television serial, "**Jeebon Setu,**" followed by "**Pracheer**" which got the best tv serial award. Their first feature film was "**Mittir Barir Choto Bou**" on Bijay's story and directed by the late Sushil Mukherjee which was released last year.

"**Dahan**" has already won several several awards and been shown in some international festivals.

Rituparno Ghosh

Son of short filmmaker Sunil Ghosh, Rituparno had shown an interest in cinema even when he was completing his post-graduation in economics when he joined an advertising agency as copywriter. Rituparno won eighteen awards for his advertising films.

His first venture in feature films was through "Hirer Angti" for children. He gained National recognition with his second "**Unishe April**" which won the best Indian film of the year award with its heroine Debasree Roy getting the Best Actress Award. It was also selected for the Indian Panorama and entered in several international festivals. Rituparno has also made a serial for television - "**Bahanno Episode**". Like his second film, "**Dahan**" also receives awards for its actresses.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

हजार चौरासी की मां (हिन्दी)

निर्माता : **गोविन्द निहलानी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गोविन्द निहलानी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **हजार चौरासी की मां** को एक हृदय स्पर्शी ऐसी मां की कथा जो अपने पुत्र की दुखद मृत्यु के बाद उसकी गरिमा तथा विचारों को समझना प्रारंभ करती है तथा इस प्रयास में वह और प्रभावशाली बन जाती है, के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

HAZAAR CHAURASI KI MAA (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **GOVIND NIHALANI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **GOVIND NIHALANI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1997 is given to **HAZAAR CHAURASI KI MAA** for a moving depiction of the story of a mother who begins to realise her son's values and beliefs only after his tragic death and in the process emerges a stronger being.

गोविन्द निहलानी

गोविन्द निहलानी भारत के विख्यात फ़िल्माकारों में से एक हैं। उन्होंने 1962 में बंगलौर के श्री जय चाम राजेन्द्र पोलीटेक्नीक से सिनेमाटोग्राफी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और अपना कैरियर शुरू किया। सत्यदेव दुबे निर्देशित "**शांतता : कोर्ट चालू आहें**" से अपना कैरियर शुरू किया। गोविन्द ने श्याम बेनेगल के साथ अनेक वृतचित्रों और दस फ़िल्मों में कार्य किया। जुजून इस क्रम में उल्लेखनीय है जिसे रंगीन चलचित्रकी के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है। गोविन्द, बेनेगल के साथ किए कार्य को बहुत महत्व देते है।

निर्देशक और सिनेमाटोग्राफर के रूप में गोविन्द की पहली फ़िल्म "**आक्रोश**" थी जिसने उन्हें एक प्रतिभावान फिल्कार के रूप में स्थापित किया। इस फ़िल्म को 1981 के अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में स्वर्ण मयूर पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके बाद उन्होंने रिचर्ड एटनबरो की प्रसिद्ध फ़िल्म "**गांधी**" में दूसरी यूनिट के निर्देशक सिनेमाटोग्राफर के रूप में कार्य किया।

विजेता उनकी दूसरी फ़िल्म थी। इसके बाद उन्होंने "**अर्द्धसत्य**" बनाई जिसमें ओमपुरी को अपने अभिनय के लिए कारलोवी वेरी फ़िल्म फेस्टिवल में पुरस्कार मिला। गोविंद की चौथी फ़िल्म "**पार्टी**" को भी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। मांट्रियल वर्ल्ड फ़िल्म फेस्टिवल में भारत की प्रविष्टि के रूप में उनकी फ़िल्म "**आघात**" को भेजा गया। **तमस** जजीरे (दूरदर्शन के लिए), **दृष्टि, रूक्मावती की हवेली** और **द्रोहकाल** उनकी अन्य उल्लेखनीय फ़िल्में है जिन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए।

Govind Nihalani

One of the best known filmmakers in the country, Govind began his career as a cinematographer after graduating in that subject from the Shri Jayachamrajendra Polytechnic in Bangalore in 1962, and the very first film he worked on was **"Shantata! Court chalu aahe"** by Satyadev Dubey. This was followed by what Govind describes as the highly rewarding experience with Shyam Benegal for whom he photographed various documentaries and ten feature films including **"Junoon"** which got the National Award for Colour Cinematography.

Govind's own first film as director cinematographer was **"Aakrosh"** which established his emergence as a serious filmmaker as the film shared the Golden Peacock Award at the International Film Festival of India in January 1981. He then worked as the second unit director cinematographer for Richard Attenborough for the celebrated **"Gandhi."**

"Vijeta" was Govind's second film, followed by the trend setting **"Ardh Satya"** which got Om Puri an award at the Karlovy Vary Film Festival. **"Party"**, Govind's fourth film, also won a National Award and an international award. **"Aghaat"** was India's competition entry at the Montreal World Film Festival. His other films include **"Tamas"**, **"Jazeere"**. (for Doordarshan), **"Drishti"**, **"Rukmavati ki Haveli"**, and **"Drohkaal"** which won several awards.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

मूंगरिना मिनचू (कन्नड़)

निर्माता : **जय जगदीश - आर. दुश्यन्त सिंह** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **एस.वी. राजेन्द्र सिंह बाबू** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **मूंगरिना मिनचु** को ऐसे पारिवारिक नाटक जिसमें सभी चरित्रों का जीवन अप्रत्याशित घटनाओं की श्रंखला के कारण बदल जाता है के अद्‌भुत एवं दिलचस्प चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

MOONGARINA MINCHU (KANNADA)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **JAI JAGDISH - R. DUSHYANTH SINGH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **S.V. RAJENDRA SINGH BABU**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1997 is given to **MOONGARINA MINCHU** for its interesting and amusing portrayal of the unexpected series of events that change the lifes of all the character in this family drama.

आर. दुश्यन्त सिंह

वे फ़िल्म के निर्देशक एस.वी. राजेन्द्र सिंह (बाबू) के पुत्र हैं। दुष्यंत ने फ़िल्मों में निर्माता के रूप में 3 वर्ष पूर्व 17 वर्ष की आयु में श्री जय जगदीश के साथ संयुक्त रूप से पदार्पण किया। उन्होंने सम्मिलित रूप से तीन फ़िल्मों का निर्माण किया। "**हूवुहन्नु**" और "**कल्याणोत्सव**" उनकी दो अन्य फ़िल्में है। उनकी पहली फ़िल्म को दो राज्य स्तरीय पुरस्कार भी मिले है।

जय जगदीश

वरिष्ठ पुट्टना कनागल ने फ़िल्म "**पलितमसा**" के लिए जय जगदीश को युवा दिनों में ही चुन लिया था। उसके बाद उन्होंने विभिन्न निर्देशकों के साथ लगभग दो सौ फ़िल्मों में कार्य किया। "**बंदना**", "**गली मधु**" और "**बेंक्कियल्ली अरलिधा हूवु**" उनकी हिट फ़िल्में है।

एस.वी. राजेन्द्र (बाबू)

बाबू के नाम से प्रसिद्ध, राजेन्द्र सिंह स्व. डी. शंकर सिंह के पुत्र है। वे स्वतंत्रता सेनानी होने के अलावा विख्यात निर्माता और निर्देशक भी थे। बाबू की माताजी एस. प्रतिमा देवी भी अग्रणी फ़िल्म कलाकार थी। वे खुद भी दर्जन भर फ़िल्मों में बाल-अभिनेता के रूप में कार्य कर चुके है। उन्होंने वार्नर ब्रदर्स की फ़िल्म "**माईटी हिमालयन मैन**" की दूसरी यूनिट में भी कार्य किया था जिसकी शूटिंग भारत में हुई थी। 1974 में उन्होंने "**नगरहोल**" नामक पहली फ़िल्म का निर्देशन किया। उसके बाद उन्होंने कन्नड़, तेलुगु और हिंदी में अनेक प्रसिद्ध फ़िल्मों का निर्देशन किया।

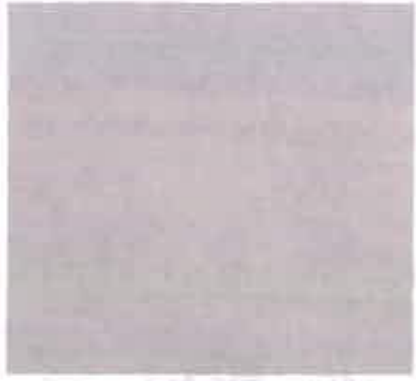

R. Dushyanth Singh

Son of S.V. Rajendra Singh (Babu) who has directed the film, Dushyanth entered the film industry as producer three years ago at the age of seventeen in a joint venture with Jai Jagdish. Together, they have produced three films, the other two being **"Hoovu Hannu"** and **"Kalyanotsava."** Their first film had won two state awards.

Jai Jagdish

Interested in films from a young age, Jai was picked up by the veteran Puttanna Kanagal for **"Palithamsha".** Since then, he has acted in more than 200 films with various directors and given various boxoffice hits like **"Bandana", "Gali Mathu"** and **"Benkiyalli Arlidha Hoovu."**

S.V. Rajendra Singh (Babu)

Popularly known as Babu, Rajendra Singh is the son of the late D. Shankar Singh who was a veteran producer and director apart from being a renowned freedom fighter. Babu's mother S. Pratima Devi is also a former film artiste. He himself acted in over a dozen films as a child artiste.

He also worked in the second unit for the Warner Brothers **"Mighty Himalayan Man"** shot in India. He made his directorial debut in 1974 with **"Nagarhole"** and has since directed a large number of notable films in Kannada, Telugu and Hindi.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

मंगम्मा (मलयालम)

निर्माता : **राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम (लि.)** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **टी.वी. चन्द्रन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **मंगम्मा** को एक बहादुर मध्यम वर्गीय महिला की कथा के लिए दिया गया है जो अपने जीवन में चुनौती पर चुनौती स्वीकार करती है। प्रत्येक मुकाबले में सामाजिक ढांचे की आलोचना करती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

MANGAMMA (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **T.V. CHANDRAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in **MALAYALAM** for the 1997 is given to **MANGAMMA.** The film tells the story of a remarkably courageous middle class woman who takes challenge upon challenge in her stride Each confrontation makes a comment on social structures.

टी.वी. चन्द्रन

यद्यपि 1981 से अब तक उन्होंने केवल छः फ़िल्मों का निर्देशन किया है, परंतु उनका नाम फ़िल्म की गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। 48 वर्षीय चन्द्रन ने अनेक पुरस्कार जीते है।

''**अलिसिंते अन्वेषणम्**'', ''**पोन्थन मडा**'' तथा ''**ओरमाकालुन्डी इरीकेन्नम**'' आदि उनकी फ़िल्मों ने राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार जीते है। ''**पोन्थन मडा**'' ने चार राष्ट्रीय और तीन राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त किए तथा विदेशी समारोहों में भी भागीदारी की। ''**मंगम्मा**'' सामाजिक व्यवस्था पर उनका व्यक्तिगत आक्षेप है।

T.V. Chandran

Although he has directed only six films since 1981 when he first took up direction, Chandran has become wellknown for the quality of his films. Now 48, he has already won several awards.

His films **"Alicinte Anweshanam"**, **"Ponthan Mada"** and **"Ormakalundayirikkanam"** won National and State awards. **"Ponthan Mada"** won as many as four National and three state awards and also participated in foreign festivals. **"Mangamma"** is his personal comment on social structures.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

शेष दृष्टि (उड़िया)

निर्माता : **राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम (लि.)** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ए.के. बीर** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **शेष दृष्टि** को दो पीढ़ियों की कथा की सजीव प्रस्तुति के लिए दिया गया है जो एक ऐसे जाल में फंस गये हैं - एक जो अपने भूत से निकल नहीं सकता - तथा दूसरा जो वर्तमान से जूझ रहा है किन्तु उसका कोई भविष्य नहीं है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ORIYA

SHESHA DRUSHTI (ORIYA)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **A.K. BIR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in **ORIYA** for 1997 is given to **SHESHA DRUSHTI** for effectively portraying two generations trapped in a web - one that can't break away from its past - the other that tries to deal with a present with no future.

ए.के. बीर

अपूर्व किशोर बीर ने भारतीय फ़िल्म और टेलिविजन संस्थान, पुणे से सिनेमाटोग्राफी में कोर्स करने के बाद सिनेमा में अपना कैरियर आरंभ किया। उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। "**मा ऊरू**", "**बोर्न इक्वल**" और "**नो स्मोकिंग**" उनकी पुरस्कृत लघु फ़िल्में है। उन्होंने राष्ट्रीय साक्षरता अभियान पर भी फ़िल्में बनाई हैं। अन्य फ़िल्मकारों के साथ उन्होंने कई फ़िल्मों में कार्य किया है जिन्हें पुरस्कार मिले। स्वतंत्र निर्देशक के रूप में "**आदि मीमांसा**" और "**लावण्य प्रीति**" उनकी प्रसिद्ध फ़िल्में है। जिसमें पटकथा, छायांकन, निर्देशन उन्हीं ने किया था। इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। हिन्दी में "**अरण्यक**" को कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में प्रदर्शित किया गया। वे बाल तथा युवाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह के संगठन से भी सम्बद्ध है।

A. K. Bir

Apoorba Kishore Bir began his career in cinema as a cinematographer after a course from the Film andTelevision Institute of India. He received several awards nationally and internationally for his work. His awarded short films include **"Maa Ooru"**, **"Born Equal"** and **"No Smoking."** He also made films on the National Literacy Mission. Many films he photographed for other filmmakers also went on to win awards. As an independent filmmaker, he has scripted, photographed and directed **"Adi Mimansa"** and **"Lavanya Preeti"**, both of which have gone on to win National Awards, and **"Aranyaka"** in Hindi which was screened at several international film festivals in India and abroad. He has also been associated with the organisation of the International Film Festivals for Children and Young People held in India.

सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र पुरस्कार

मैं मां पंजाब दी (पंजाबी)

निर्माता : **देवेन्द्र वालिया** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **बल्वन्त दुल्लत** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **मैं मां पंजाब दी** को एक पीड़ित मां के अन्वेषण के लिए दिया गया है जो अपने लड़कों द्वारा ही पहुंचाये गये आघात सहन करती है तथा वह अपनी योग्यताओं को पुन: प्राप्त करती है तथा स्वयं को पुन:स्थापित करती है।

AWARDED FOR THE BEST FEATURE FILM IN PUNJABI

MAIN MAA PUNJAB DEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **DEVENDER WALIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **BALWANT DULLAT**

Citation

The Award for the Best Feature Film in PUNJABI of 1997 is given to **MAIN MAA PUNJAB DEE** for the film's exploration of a suffering mother who undergoes the trauma created by her own sons and rediscovers her creative talent and rehabilitates herself.

देविन्दर वालिया

देविन्दर के पिता रघबीर सिंह विभाजन से पूर्व फ़िल्म प्रदर्शनी में थे। बाद में वे लाहौर से रोपड़ आ गए और स्थानीय थियेटर का कार्य संभाला। देविन्दर भारतीय वायु सेना से एयरोनोटिकल इंजीनियरिंग करने के बाद वहीं कार्य करने लगे। 1972 में फ़िल्म-प्रदर्शन के कार्य से जुड़े। चण्डीगढ़ में उनका थियेटर है। निर्माता के रूप में "**मैं मां पंजाब दी**" उनकी पहली फ़िल्म है।

Devinder Walia

Devinder's father Raghbir Singh Walia was in film exhibition before partition and later emigrated from Lahore to Ropar where he took charge of a local theatre.

Devinder joined the Indian Air Force and completed his Aeronautical Engineering, joining the film exhibition business after discharge in 1972, taking over the management of a theatre in Chandigarh. **"Main maa Punjab dee"** is his first film as producer.

बलवन्त दुल्लत

मनोविज्ञान तथा समाज-विज्ञान में स्नातकोत्तर बलवंत दुल्लत ने बिजनेस मेनेजमेंट में भी डिप्लोमा किया है। बलवंत फ़िल्मों रुचि रखते थे। वे रमन कुमार निर्देशित "**साथ-साथ**" में बतौर सहायक निर्देशक रहे जिसका निर्माण रा.फि.वि. निगम ने किया था।

उसके बाद उन्होंने इण्डियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन के तत्वाधान में अनेक वरिष्ठ लोगों के साथ किया। के. बालाचन्द्र, स्व. बासु भट्टाचार्य, एस.पी. राजेन्द्र सिंह (बाबू) और मुजफ्फर अली इसमें उल्लेखनीय है। "**मैं मां पंजाब दी**" उनकी पहली स्वतंत्र निर्देशक के रूप में फ़िल्म है।

Balwant Dullat

A double postgraduate in psychology and sociology with a Diploma in business management, Balwant was attracted to films and started his career as Associate Director in the National Film Development Corporation's **"Saath Saath"** directed by Raman Kumar.

He then worked with the Indian People's Theatre Association (IPTA) under several veterans and also in films with notable filmmakers like K. Balachander, the late Basu Bhattacharya, S.V. Rajendra Singh (Babu) and Muzaffar Ali. **"Main maa Punjab dee"** is his first independent feature film.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

दि टेररिस्ट (तमिल)

निर्माता : **ए. श्री राम** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सन्तोष सिवान** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **दि टेररिस्ट** को सुरुचिपूर्ण, आह्वानप्रद प्रस्तुतीकरण जिसमें बड़े शान्त एवं सूक्ष्म ढंग से हिंसा को मना किया गया है, के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

THE TERRORIST (TAMIL)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **A. SRIRAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **SANTOSH SIVAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tamil for 1997 is given to **TERRORIST**. The film's stylised, evocative presentation of a theme that introspectively and in a silent, subtle manner says a loud "NO" to violence.

ए. श्रीराम

ए. श्रीराम ने चेन्नई में प्रसाद प्रोडक्शन्स में वर्ष 1963 से विभिन्न पदों पर कार्य किया। 1992 से वे जेमिनी कलर लेबोरेटरी, चेन्नई के मुख्य अधिकारी के पद पर कार्यरत है।

उन्होंने कुछ तमिल, तेलुगु एवं उड़िया फ़िल्मों में सह निर्देशन करने के पश्चात् वर्ष 1978 में उड़िया भाषा में "**सती अनुसूया**" फ़िल्म का सह निर्माण किया। वर्ष 1982 से वह चेन्नई से एक आउटडोर यूनिट भी चला रहे हैं।

संतोष सिवन

भारतीय फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान से छायांकन सीखे हुए सिवन ने शीघ्र ही अपने लिये रंगों की संवेदनशीलता के कारण बड़ा नाम कमा लिया है। अपनी वर्तमान फ़िल्म "**इरुवर**" से पहले, उन्होंने विभिन्न भाषाओं की फ़िल्मों में छायाकार के रूप में कार्य किया है तथा तीन राष्ट्रीय तथा चार राज्य पुरस्कार छायांकन के लिये जीते हैं। उनकी कुछ पुरस्कार प्राप्त फ़िल्में "**पेरुनाथायन**", "**मोहिनीअट्टम**", "**रोजा**", "**इंदिरा**" तथा "**बरसात**" है। कुछ हिन्दी फ़िल्में जिनका उन्होंने छायांकन किया है वे हैं "**योद्धा**", "**दलपति**", तथा "**गर्दिश**"। एक बहुत ही सफल छायाकार के कार्यकाल के पश्चात्, सिवन ने निर्देशन का कार्य किया तथा अपनी पहली फ़िल्म "**हलो**" के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार पाया। इस फ़िल्म को विदेश में होने वाले कई फ़िल्म समारोहों में भी भेजा गया। सिवन ने राष्ट्रीय फ़िल्म जूरी में भी कार्य किया। ऐ और फ़िल्म "**टेररिस्ट**" का उन्होंने निर्देशन किया है, प्रादेशिक भाषाओं की फ़िल्मों की श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है।

A. Sriram

Joining Prasad Productions in Chennai in 1963, Mr Sriram worked in various capacities in the office. However, he has been working as Chief of the Gemini Colour Laboratory in Chennai since 1992.

He had worked as associate director for a few films in Tamil, Telugu and Oriya languages, and later co-produced the feature film **"Sati Ansuya"** in Oriya in 1978. He has also been running an out-door unit from Chennai since 1982.

Santosh Sivan

After learning cinematography at the Film and Television Institute of India, Sivan soon made a name for himself with an excellent sense of colour. He has worked as cameraman in films made in different languages, and won three national and four state awards for cinematography before his present film **"Iruvar."** Some of his award-winning films are **"Perunthachan", "Mohiniyattam", "Kaalapani", "Roja", "Indira",** and **"Barsaat."** Some of the Hindi films he photographed are **"Yoddha", "Dalpathi", "Rudaali"** and **"Gardish."** After a very successful career as a cinematographer, Sivan has now tried his hand at direction, and won a National award with his very first film, **"Halo".** The film was also sent to some festivals abroad. Sivan has also served on the National Film Jury. Another film directed by him, **"The Terrorist"**, has also won a National Award this year in the regional film category.

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

सिन्दूरम (तेलुगु)

निर्माता : **कृष्णा वंशी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **कृष्णा वंशी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **सिन्दूरम** को भ्रष्टाचार की समस्या जिससे युवाओं में असन्तोष एवं समाज में हिंसा आती है, के विश्लेषण का प्रयास करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

SINDOORAM (TELUGU)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **KRISHNA VAMSI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **KRISHNA VAMSI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in TELUGU for the year 1997 is given to **SINDOORAM** for the film's sincere effort at analysing, the problem of corruption which leads to disillusionment among the young and perpetuates violence within a society.

कृष्णा वंशी

कृष्णा वंशी कृषि अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर है। 1988 में वे तेलुगु सिनेमा में आए और लगभग 10 फ़िल्मों में राम गोपाल वर्मा के साथ मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में कार्य किया। ए.बी.सी.एल. तथा वर्मा के साथ, संयुक्त रूप से उनकी पहली निर्देशित फ़िल्म "**गुलाबी**" है। इसके लिए उन्हें राज्यस्तरीय पुरस्कार भी मिला। कृष्णा निर्देशित "**निल्ले पेल्लाडुता**" (बाद में हिन्दी संस्करण : जब दिल किसी पे आता है) ने बेहद सफलता प्राप्त की है और राष्ट्रीय तथा अनेक अन्य पुरस्कार जीते।

कृष्णा ने पिछले वर्ष अपनी स्वतंत्र निर्माण संस्था खोली। "**सिंदूरम**" इस क्रम में उनकी पहली फ़िल्म है। इसे एक राष्ट्रीय तथा अनेक राज्य स्तरीय पुरस्कार मिले है।

Krishna Vamsi

A postgraduate in agricultural economics, Krishna entered Telugu cinema in 1988 and was chief assistant director to Ram Gopal Varma for over ten films. He made his directorial debut with the Hindi **"Gulabi"**, a joint venture of Amitabh Bachchan Corporation Limited and Varma Creations. He won the state directorial debut award for this.

"Ninne Pelladutha" directed by Krishna (later dubbed in Hindi as **"Jab Dil kisise pe aata hai"**) was a huge success and won a National and several popular awards.

Krishna started his own independent production house last year and **"Sindooram"** is his maiden venture. It has received one National and seven state awards.

विशेष उल्लेख

अन्नामैया में नागार्जुन और इनु स्वंथम जानकीकुट्टी में जोमोल

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल ने 1997 में तेलुगु फिल्म अन्नामैया में नागार्जुन (अभिनेता) के प्रभावशाली अभिनय तथा अनेक परिस्थितियों में अनेक जटिल भाव प्रस्तुत करने का विशेष उल्लेख किया है। और निर्णायक मण्डल ने 1997 में मलयालम फिल्म इनु स्वंथम जानकीकुट्टी में जोमोल (अभिनेत्री) जो अकेलेपन एवं बहिष्कार के कारण मनोवैज्ञानिक रूप से अशान्त हो जाती है, अन्ततः अपने मानसिक मनोभाव में संतुलन बना लेती है, का विशेष उल्लेख किया है।

SPECIAL MENTION

NAGARJUNA IN ANNAMAYYA AND JOMOL IN ENNU SWANTHAM JANAKIKUTTY

Citation

The Feature Film Jury makes Special Mention for 1997 of **Nagarjuna** (Actress) in the Telugu Film **Annamayya** for his fine acting depicting various complex moods in wide-ranging situations and The Feature Film Jury also makes special mention of the **Jomol** (Actress) in the Malayalam Film **Ennu Swantham Janakikutty** for her natural portrayal of an innocent adolescent who becomes psychologically distrurbed due to loneliness and rejection, finally finding her mental and emotional balance..

नागार्जुना अकिनेनी

दस वर्ष से ऊपर के कार्यकाल में नागार्जुन ने चालीस से अधिक फ़िल्में बनाई हैं। उनकी शुरूआत 1986 में "**विक्रम**" के साथ बहुत ही सफल रही जिसने उन्हें रातोंरात प्रसिद्ध कर दिया। परन्तु नागार्जुन अपनी फ़िल्मों को बहुत ध्यान से चयन करते हैं। उनकी दूसरी फ़िल्म "**गीतांजली**" जाने माने मणिरतनम् के साथ की तथा सम्पूर्ण दक्षिण भारत में सराही गई थी। वे वर्ष 1992 में हिन्दी फ़िल्म जगत में अमिताभ बच्चन द्वारा अभिनीत फ़िल्म "**खुदा गवाह**" से आये परन्तु वह तब्बू द्वारा अभिनीत तेलुगु फ़िल्म "**नीन्ने पल्लाडुथा**" (जिसे बाद में हिन्दी फ़िल्म "**जब दिल किसी पे आता है**") थी जिसने उन्हें राष्ट्रव्यापी ख्याति दी।

अमरीका से यांत्रिकी में स्नातक नागार्जुन, अन्नापूर्णा स्टूडियों के मैनेजिंग पार्टनर हैं जो हैदराबाद में 22 एकड़ में फैला है। 1995 में नागार्जुन ने फ़िल्म निर्माण का कार्य शुरू किया, तथा सैशेल्स में उसी वर्ष पूर्ण रूप से क्रियाशील फ़िल्म यूनिट की स्थापना की और वे एक कार्टून फ़िल्म कम्पनी के डायरेक्टर भी हैं जिसकी स्थापना उन्होंने अमरीका के एक बड़े "**एम्मी**" पुरस्कार जीतने वाले समूह की सहायता से की है।

जोमोल

सोलह वर्षीय जोमोल कोज़िकोड़, केरल में प्री-डिगरी के प्रथम वर्ष की छात्रा हैं। उन्होंने भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम तथा कुचिपुड़ी नृत्य पहले से सीख लिया है। उनका मनोवैज्ञानिक तौर पर अशान्त तथा स्वप्निल दुनिया में रहने वाली किशोरी की वास्तविक अभिव्यक्ति के लिये, निर्णायक मंडल द्वारा, विशेष उल्लेख किया गया है।

Nagarjuna Akkineni

In a career just over a decade old, Nagarjuna has given more than forty films. His debut in 1986 with **"Vikram"** was very successful as he became an overnight celebrity. But Nagarjuna has been very selective with his films. His second film **"Geetanjali"** was with the wellknown Mani Ratnam and was acclaimed all over south India. He entered the Hindi film industry in 1992 with the Amitabh Bachchan starrer **"Khuda Gawah"**, but it was the Telugu film **"Ninne Pelladutha"** opposite Tabu (later dubbed in Hindi as **"Jab dil kisi pe aata hai"**) which gave him recognition all over the country.

From 1995, Nagarjuna turned to filmmaking, and in the same year set up a fully functional film equipment unit in Seychelles, and is also the Director of a film animation company set up by him in collaboration with a major Emmy award-winning group in the United States.

Jomol

Sixteen years old, Jomol is a student of first year, pre-degree in Kozhikode in Kerala.

She has already learnt the Bharat Natyam, Mohiniyattom and Kuchipuddi dance forms.

पुरस्कार जो नहीं दिये गये

1. विशेष प्रभाव
2. सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र
3. सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र
4. सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र
5. सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र
6. सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र

AWARD NOT GIVEN

1. Special Effects
2. Language-wise Award : Assamese
3. Language-wise Award : English
4. Language-wise Award : Manipuri
5. Language-wise Award : Marathi
6. Language-wise Award : Urdu

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

जातानेर जामी (बंगला)

निर्माता : **राजामित्रा तथा एसोसियेट्स** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **राजामित्रा** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **जातानेर जामी** को, भूमिहीन कृषक के अधिकारों तथा अन्ततोगत्वा उसके साथ विश्वासघात होने का भावुक चित्रण प्रस्तुत करने पर दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

JATANER JAMI(BENGALI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **RAJA MITRA AND ASSOCIATES**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **RAJA MITRA**

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1997 is given to **JATANER JAMI,** for its moving portrayal of a landless peasant's empowerment and his ultimate betrayal.

राजा मित्रा

1979 में डाकुमेंटरी तथा लघु फ़िल्म निर्माता के रूप में अपना जीवन शुरू करते हुए राजा मित्रा ने फीचर "**एकती जीबन**" जिसे 1988 में निर्देशक की सर्वोत्तम फ़िल्म के लिये इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसे पी सी बरुआ पुरस्कार भी मिला। उनकी लघु फ़िल्म "**स्क्रॉल पेंटर्स आफ बीर भूमि**" को कला/संस्कृति में 1989 में सर्वोत्तम डाकुमेंटरी के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला, तथा इसे अनेक अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों के अतिरिक्त भारतीय पैनोरमा में भी प्रदर्शित किया गया। अगले वर्ष 'बहुला' को सर्वोत्तम लघु फ़िल्म पुरस्कार मिला तथा इसे कैन्स में आमंत्रित किया गया। उनकी दूसरी फीचर फ़िल्म "**नयनतारा**" 1996 के भारतीय पैनोरमा में थी। "**जातनेर जामी**" उनकी लघु फ़िल्म है। उन्होंने अब तक ग्यारह गैर फीचर तथा तीन फीचर फ़िल्मे बनाई हैं।

इस 51 वर्षीय कला स्नातक ने निर्णायक मण्डल के एक सदस्य के रूप में भारत का अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह 1989, राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह 1992 तथा 1990 में भारतीय पैनोरमा में चयनकर्त्ता के रूप में सेवायें की हैं। उन्हें इन्साइक्लोपेडिया ब्रिटानिका द्वारा एक विख्यात फ़िल्म निर्माता के रूप में भी जाना जाता है।

Raja Mitra

Beginning his career as a documentary and short filmmmaker in 1979, Raja Mitra switched to feature films with **"Ekti Jiban"** which in 1988 won him the Indira Gandhi National Award for the Best Film of a Director. It also won him the P.C. Barua award. His short film **"Scroll Painters of Birbhum"** also won a national award for the Best Documentary in Art/Culture in 1989, and was featured in the Indian Panorama apart from being screened in several International Film Festivals. **"Behula"** in the following year won the Best Short Fiction Award and was invited to Cannes. His second feature, **"Nayantara"**, was in the Indian Panorama for 1996. **"Jataner Jami"** is his latest short fiction film. He now has eleven non-feature and three feature films to his credit.

This 51-year old Arts Graduate has served as a member of the jury in the International Film Festival of India in 1989, the National Film Festival in 1992, and the selection panel for the Indian Panorama in 1990. He has also been recognised by the Encyclopaedia Britannica as a known filmmaker.

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र पुरस्कार

मिझावू – ए साइलेंट ड्रम बीट (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **पी.डी. राफ़ेल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **के.आर. सुभाष** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र का 1997 का पुरस्कार **मिझावू - ए साइलेंट ड्रम बीट** को, एक एक अनूठे व कम पहचाने जाने वाले तालवाद्य के नितांत व आकर्षक चित्रण प्रस्तुत करने पर दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

MIZHAVU-A SILENT DRUM BEAT (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **P.D. RAPHEL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **K.R. SUBHASH**

Citation

The Award for the First Non-Feature Film of a Director is given toMIZHAVU-A SILENT DRUM BEAT, for its total and absorbing cinematic presentation of a unique and little-known percussion instrument

पी.डी. रफैल

रफैल पेशे से सामान्य व्यावसायी हैं और यह इनकी पहली फिल्म है।

के.आर. सुभाष

तीस वर्षीय के.आर. सुबाष केरला में रंग चेतना थियेटर ग्रुप द्वारा थियेटर आंदोलन के एक सक्रिय कार्यकत्ता बने, बाद में वे फ़िल्म समाज आंदोलन से जुड़ गये तथा एक अभिनेता, गीतकार एवं छायाकार के रूप में अपनी प्रतीभा प्रदर्शित की। उन्होंने 1991 में मलयालम दैनिक **''एक्सप्रेस''** में सम्पादकीय कर्मचारी के रूप में भी काम किया।

यद्यपि **'मिजहावु'** बड़े पर्दे पर उनकी प्रथम फ़िल्म है, सुबाष ने टेलिविजन फ़िल्म निर्देशक के रूप में दूरदर्शन केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम में अपने कार्य के द्वारा स्वयं को स्थापित कर लिया है तथा उन्होंने 32 डाकुमेंटरीज एवं दो टी.वी. धारावाहिक का निर्देशन किया है। उनकी कुछ फ़िल्मों में **''थ्रिसूर पूरम'' ''अरन्मुला बोट फेस्टिवल'', ''लाथूर-ए हीप आफ ब्रोकेन इमेजेज'', ''निमन्जन्म'' (राइचुअल्स आफटर डेथ) तथा नागरकजचाकल'' (वियूज आफ दि सिटी)** आदि शामिल है। उनकी फ़िल्म **''अरनमुला वोट फेस्टिवल''** को मुम्बई में तीसरे अंतर्राष्ट्रीय समारोह में डाकुमेंटरी एवं लघु फिल्म के रूप में प्रदर्शित किया गया। **'मिजहावु'** को सर्वोत्तम डाकुमेंटरी फ़िल्म के लिये केरल राज्य आलोचना पुरस्कार भी दिया गया है। **'कोंकन टैक्स आफ रियलिटी'** को 1997 की सर्वोत्तम विकासात्मक फ़िल्म का राज्य पुरस्कार दिया गया।

P.D. Raphael

For Raphael, making this film was a big decision, since he is a general merchant by profession. This is Raphael's first film as producer,

K.R Subhash

Thirty years old, K R Subhash became an active worker in the theatre movement in Kerala through the theatre group Ranga Chethana, and later joined the film society movement and showed his calibre as actor, lyrics writer and photographer. He also served on the editorial staff of the Malayalam daily -Express" in 1991.

Although Mizhavu is his debut film for the large screen, Subhash had established himself as a director of television films through his work for the Doordarshan Kendra in Thiruvananthapuram and directed 32 documentaries and two TV serials. Some of his films include **"Thrissur Pooram", "Aranmula Boat Festival", "Lathoor - a Heap of Broken Images", "Nimanjanam" (Rituals after Death), and "lagarakazhchakal" (Views of the City)**. His film **"Aranmula Boat Festival"** was featured in the Third Mumbai International Festival for Documentary and Short films. **"Mizhavu"** has also won the Kerala State Critics Award for the Best Documentary Film. **"Konkan-Tracks of reality"** had won him a State Award for best Development Film of 1997.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म पुरस्कार

इन द लैंड ऑफ लेप्चाज (अंग्रेजी)

निर्माता : **निदेशक सांस्कृतिक अनुसंधान एस.एल. एण्ड टी. डब्ल्यू डिपार्टमैंट, पश्चिम बंगाल** सरकार को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अंजन बोस** तथा **मानस कमल चौधरी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानव-शास्त्रीय/मानव जातीय फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **इन द लैंड ऑफ लेप्चाज** को लेप्चा जनजाति के जीवन तथा मूल्यों के सहज व सहृदयपूर्ण प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

IN THE LAND OF LEPCHAS (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **THE DIRECTOR, CULTURAL RESEARCH INSTITUTE, S.L. AND T.W. DEPTT. GOVERNMENT OF WEST BENGAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ANJAN BOSE AND MANAS KAMAL CHOWDHURI**

Citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1997 is given to **IN THE LAND OF LEPCHAS** for the simple and humane depiction of the life and values of THE LEPCHA TRIBE

डॉ. मानस कमल चौधरी

मानवविज्ञान में अनुसंधान करने के पश्चात पचास वर्षीय डॉ. मानस कमल चौधरी वर्तमान में पश्चिम बंगाल सरकार के अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण विभाग के सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान में निदेशक हैं। विगत 32 वर्षों के दौरान उन्होंने भारत के विभिन्न भागों में जनजाति एवं अन्य समुदायों का विभिन्न प्रकार का अध्ययन किया। उन्होंने विभिन्न विषयों पर सात पुस्तकें एवं अनेक शोध पत्र लिखे।

Dr Manas Kamal Chowdhuri

Holding a Doctorate in Anthropology, fifty-year old Dr Manas Kamal Chowdhuri is presently Director of the Cultural Research Institute in the West Bengal Government's Department for Scheduled Caste and Tribes Welfare. In the last 32 years, he has conducted various types of studies among tribes and other communities in different parts of India. He has authored seven books and innumerable research papers on different subjects.

अंजन बोस

यद्यपि वकालत का प्रशिक्षण प्राप्त किया किन्तु अंजन का जन्म सिनेमा संसार में हुआ क्योंकि वे स्वर्गीय अनादिनाथ बोस, जिन्होंने अरोरा फ़िल्म निगम की कलकत्ता में 1914 में स्थापना की, के पौत्र हैं। उनके पिता अजित बोस सुप्रसिद्ध फ़िल्मनिर्माता तथा भारतीय फ़िल्म फेडरेशन के पूर्व अध्यक्ष थे।

51 वर्षीय अंजन 1986 में भारतीय पैनोरमा के क्षेत्रीय चयन पैनेल में तथा 1989 में भारतीय पैनोरमा के अखिल भारतीय पैनेल में सदस्य थे। उन्होंने भारत सरकार, पश्चिम बंगाल सरकार तथा दूरदर्शन के लिये 60 से अधिक फ़िल्मों एवं धारावाहिकों का निर्माण एवं निर्देशन किया।

''ए लिविंग लीजेंड'' को 43 वें राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में सर्वोत्तम जीवनी पुरस्कार एवं अन्य पुरस्कार प्रदान किये गये।

Anjan Bose

Though a lawyer by training, Anjan was born into the world of cinema, as he is the grandson of the late Anadinath Bose who founded the Aurora Film Corporation in Calcutta as far back as 1914. His father Ajit Bose was also an eminent filmmaker and a former president of the Film Federation of India.

Anjan, 51, was a member of the Regional Selection Panel for the Indian Panorama in 1986, and the All India Selection Panel for Indian Panorama in 1989. He has produced and directed more than sixty short films and serials. Some of his more important films are: "Tribal Craft of West Bengal", "Purulia Chhow"and "Ganga Action Plan".

"A living legend" won the award for the Best Biographical Film in the 43rd National Film Festival, and also won other awards.

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी पुरस्कार

मौनम् सौमनस्यम् (मलयालम)

निर्माता : **रवीन्द्रनाथ** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रवीन्द्रन** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **मौनम् सौमनस्यम्** को शर्मीले व संकोची फ़िल्म निर्माता अरविन्दन के गहन अन्तर्दृष्टिपूर्ण आह्वान व उनकी चलचित्रिकी भाषा के पांडित्यपूर्ण मूल्यांकन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

MOUNAM SOWMANASYAM(MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **RAVINDRANATH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAVINDRAN**

Citation

The Award for the Best Biographical Film of 1997 is given to **MOUNAM SOWMANASYAM** for an insightful evocation of the shy and retiring film maker Arvindan, and the erudite assessement of his cinematic idiom

रवीन्द्रनाथ

केरल के विख्यात निर्माता श्री रवीन्द्रनाथ ने **'वस्तुहारा'** नामक फ़िल्म बनाई थी, जिसका निर्देशन स्व. जी. अरविन्द्रन ने किया था। बाद में उन्होंने पुरस्कार विजेता **'पोंथानमडा'** का निर्माण भी किया। दूरदर्शन ने पिछले वर्ष उन्हें भारतीय स्वतंत्रता के 50 वर्षों के उपलक्ष्य के सम्बन्ध में तीन वृतचित्रों के निर्माण का कार्य भी दिया था।

Ravindranath

An eminent producer from Kerala, Ravindranath had produced **"Vasthu Hara"**, which was directed by the late G. Aravindan. He later produced the award-winning **"Ponthanmada"**. Doordarshan had commissioned him over the last year to produce three documentaries relating to the Celebration of Fifty Years of Indian Independence.

रवीन्द्रन

देश-विदेश में यात्रा करने वाले लेखक और फ़िल्म मेकर रवीन्द्रन ने अब तक तीन फ़िल्मों का निर्देशन किया है। **''ओरा नूवल पादीकल''** फ़िल्म को केरल सरकार ने सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार भी प्रदान किया। फिलहाल वे एशियानेट सेटेलाईट टीवी चैनल के लिए **''एंते केरलम''** नामक वृत्तचित्र के निर्माण में व्यस्त हैं।

Ravindern

A widely travelled writer and filmmaker, Ravindran has so far directed three films. **"Ora Thooval Pakshikal"** won the best film award of the Kerala Government. He is currently engaged in making a documentary, **"Eente Keralam"**, for the Asianet Satellite TV Channel.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार

द ऑफिशियल आर्ट फॉर्म (अंग्रेजी)

निर्माता : **राष्ट्रीय आधुनिक कला संकाय** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सुहासिनी मुले** तथा **एच.एम. घरेखान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **द ऑफिशियल आर्ट फार्म** को हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख संक्रांतिकाल के महत्वपूर्ण प्रलेखन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

THE OFFICIAL ART FORM (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer:NATIONAL GALLARY OF MODERN ART

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **SUHASINI MULAY** and **H.M. GHAREKHAN**

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1997 is given to **THE OFFICIAL ART FORM** for an important documentation of a vital transitional period of our cultural heritage.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म पुरस्कार (विज्ञान की पद्धति, प्रक्रिया एवं वैज्ञानिकों का योगदान सहित)

आयुर्वेद (अंग्रेज़ी) तथा कैंसर (हिन्दी)

निर्माता : **डी. गौतमन, फ़िल्म प्रभाग (आयुर्वेद)** तथा **भानुमूर्ति अलूर, फ़िल्म प्रभाग (कैंसर)** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **भानुमूर्ति अलूर (आयुर्वेद)** तथा **सी.के.एम. राव (कैंसर)** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म 1997 का पुरस्कार **आयुर्वेद** को पुरानी आयुर्वैद्धिक पद्धति तथा उसकी दवाइयों के मुख्यधारा में पुन: समाविष्ट होने के प्रभावी चित्रण के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म 1997 का पुरस्कार **कैंसर** को भी दिया गया है। यह फ़िल्म कैंसर के विषय में पुरानी धारणाओं को खण्ड खण्ड करती है तथा इसके रोगरोधी व आरोग्यकर उपचार के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देती है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM (INCLUDING METHOD AND PROCESS OF SCIENCE, CONTRIBUTION OF SCIENTISTS ETC.)

AYURVEDA(ENGLISH) and CANCER (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **D. GAUTMAN, FILMS DIVISION (AYURVEDA)** AND **BHANUMURTHY ALUR, FILMS DIVISION (CANCER)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **BHANUMURTHY ALUR (AYURVEDA) AND C.K.M. RAO (CANCER)**

Citation

The Award for the Best Scientific Film of 1997 is given to the film **AYURVEDA** for an effective depiction of our ancient ayurvedic tradition, and its reabsorption into mainstream medicine.

The Award for the Best Scientific Film of 1997 is also given to Cancer. The film shatters many outdated beliefs about cancer, and gives useful information about its prophylactic and curative treatment.

सुहासिनी मुले

एक अभिनेत्री के रूप में अपने जीवन की शुरूआत करते हुए सुहासिनी ने जल्द ही समाज पर आधारित एवं खोजी फ़िल्मों का निर्माण प्रारंभ किया। सुप्रसिद्ध फ़िल्मकार विजय मुले की पुत्री सुहासिनी ने फ़िल्म निर्देशक सत्यजीत रे तथा मृणाल सेन के अधीन 1975 से 1977 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। एक अभिनेत्री के रूप में उनकी फ़िल्में ''**भुवन शोम**'' (1969), ''**कलकत्ता 71**'', ''**रामनगरी**'', ''**अपरुपा**'' तथा 1983 में ''**भवानी भवई**'' हैं।

एक निर्माता के रूप में उनकी प्रथम फ़िल्म ''एन इण्डियन स्टोरी'' बहुत प्रसिद्ध हुई जिसे 1981 में सर्वोत्तम सूचनात्मक फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

Suhasini Mullay

Beginning her career as an actress, Suhasini soon switched over to producing socially relevant and investigative films. Daughter of the well known filmologist Vijaya Mullay, Suhasini trained under the filmmmakers Satyajit Ray and Mrinal Sen from 1975 to 1977. Her films as an actress were **'Bhuvan Shome"** (1969), **"Calcutta 71", "Ramnagri", "Aparoopa"** and **"Bhavani Bhavai"** in 1983.

Her first film as producer to hit the headlines was **"An Indian Story"** which won the National Award for the best Information Film in 1981, and **"Bhopal: Beyond Genocide"** which she co-directed with Tapan K. Bose and Salim Shaikh in 1988.

हृदयनाथ ग़रेघान

श्री घरेखान ने अपने कैरियर की शुरूआत विज्ञापन और संयुक्त फ़िल्म मेकर के रूप में की। साथ ही वे दूरदर्शन के लिए कार्यक्रम निर्माता के रूप में तथा कौंसिल फॉर एडवांसमेंट ऑफ पीपुल्स एक्शन एंड रूरल टेक्नोलोजी के नामित निर्माता के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। उत्तरकाशी भूकंप पर आधारित फ़िल्म ''मकान हो तो ऐसा'' में उन्होंने सुहासिनी मुले प्रोडक्शंस के साथ काम किया। रसोई गैस संरक्षण पर एक फ़िल्म के अलावा उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा विभाग के लिए भी दो लघु वृतचित्रों का निर्माण किया।

Hridaynath Gharekhan

Beginning his career as an advertisement and corporate filmmaker, Gharekhan has also worked as programme producer for Doordarshan and as an empannelled producer for the Council for Advancement of People's Action and Rural Technology (CAPART). His films for Suhasini Mullay Productions include **"Makaan ho to aisa"** on the Uttarkashi Earthquake, a film on cooking gas conservation, and two short documentaries for the Department of Adult Education.

डी. गौतमन

श्री गौतमन भारतीय फ़िल्म और टेलिविजन संस्थान, पुणे के प्रथम श्रेणी के डिप्लोमा प्राप्त हैं। अपने कैरियर के आरंभ में वे विख्यात रामू करियात के साथ बतौर सहायक रहे। अक्तूबर 1994 से फ़िल्म प्रभाग में मुख्य निर्माता के रूप में उन्होंने देश की लगभग सभी भाषाओं में 16 एस.एम. फीचरेट के निर्माण का योगदान किया है। 1997 में वे सेवानिवृत हुए तथा यह उनका दसवां राष्ट्रीय पुरस्कार है।

भानूमूर्ति अलूर

भानूमूर्ति अलूर चलचित्रिकी में डिप्लोमा प्राप्त तथा स्वर्ण पदक विजेता होने के साथ-साथ अन्य अनेक पुरस्कारों के विजेता रहे हैं। उन्होंने भारतीय फ़िल्म और टेलिविजन संस्थान पुणे में 1977 से 1981 तक व्याख्याता के पद पर कार्य किया तथा 1981 में फ़िल्म प्रभाग में निदेशक के रूप में सम्बद्ध हो गए। फिलहाल वे फ़िल्म प्रभाग में निर्माता के रूप में प्रतिष्ठित है।

सी.के.एम. राव

श्री राव चलचित्रिकी में डिप्लोमा प्राप्त होने के अलावा युद्ध संवाददाता का कौर्स भी कर चुके हैं। वे 1963 में फ़िल्म उद्योग में जुड़े तथा कुछ समय बाद फ़िल्म प्रभाग में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए जुलाई 1994 में निर्देशक के पद पर सेवानिवृत हुए। फिलहाल वे स्वतंत्र निर्देशक तथा चलचित्रिक के रूप में कार्य कर रहे है। उन्होंने "पोट्रेट ऑफ ए प्राइम मिनिस्टर", "दुवर्डस ए नॉनअलाइन्ड न्यूज पूल", "नान अलाइन्ड ब्यूरो मीट", "स्टार्स एंड ए सुपर स्टार्स", "द स्टोरी आफ वीट", और "व्हेयर इज ही नाउ ? मिहिर सेना" आदि लगभग 35 फ़िल्मों में चलचित्रिको का कार्य किया। निर्देश के तौर पर "कैंसर" उनकी तीसरी फ़िल्म है।

D. Gautaman

A first rank Diploma Holder from the Film and Television Institute of India, Pune, Gautaman started his career as assistant to the renowned Ramu Kariat. As Chief Producer in the Films Division from October 1994, he contributed to production of 16 mm featurettes in almost all the languages of the country. He retired in 1997. This is his tenth National Award.

Bhanumurty Alur

Winner of several awards, Bhanumurty Alur holds a Diploma in Cinematography and is a Gold Medallist. He worked as a lecturer at the Film and Television Institute of India (FTII) in Pune from 1977 to 1981, and joined as a director in the Films Division in 1981. He is presently producer in the Films Division.

C. K M. Rao

A Diploma holder in cinematography, Rao has also done a course as a War Correspondent. He joined the film industry in 1963 and after some time, joined the Films Division where he has served in various capacities. Now he is working as a freelance filmmaker and cinematographer. He was involved with over 35 films as cinematographer, including "Portrait of a Prime Minister", "Towards a Nonaligned News Pool", "Non-aligned Bureau meet", "Stars and Super Stars", "The story of Wheat" and "Where is he now? Mihir Sen". As Director,

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म पुरस्कार (जानकारी सहित)

नेचर्स सेन्टीनल्स – बिश्नोई (हिन्दी)

निर्माता : **वाई.एन. इंजीनियर फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **स्व. पी.सी. शर्मा** तथा **शंकर पटनायक** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **नेचर सेन्टीनल्स - बिश्नोई** को कम पहचानी जाने वाली जाति के पर्यावरण संरक्षण सम्बंधी लम्बे समय से चलाए जा रहे जेहाद के सशक्त चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/ CONSERVATION/PRESERVATION FILM (INCLUDING AWARENESS)

'NATURE'S SENTINELS' - BISHNOI (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **Y. N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **LATE P.C. SHARMA AND SHANKAR PATNAIK**

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film of 1997 is given to **NATURE'S SENTINELS' - BISHNOI** for a forceful portrayal of a little known community's longstanding crusade for environmental conservation.

वाई.एन. इंजीनियर

भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान 1968 बैच में छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त इंजीनियर ने हिन्दी फ़िल्म उद्योग में जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में कुछ समय तक काम किया। उन्होंने फ़िल्म प्रभाग में 40 डाकुमेंटरीज बनाई। अब उसी संस्थान में वे निर्माता हो गये है।

Y.N. Engineer

A Diploma holder in Cinematography from the Film and Television Institute of India from the 1968 batch, Engineer had worked for some time as an assistant to Jal Mistry in the Hindi film industry. He made forty documentaries as a Director in the Films Division. He is now a producer in the same organisation.

पी.सी. शर्मा

एक बुजुर्ग डाकुमेंटरी एवं लघु फ़िल्म निर्माता, शर्मा ने एक दर्जन से अधिक फ़िल्मों का निर्माण किया जिसे भारत एवं विदेशों में पुरस्कार प्राप्त हुए। जब उनकी मृत्यु हुई तो वे इस फ़िल्म का निर्माण कर रहे थे। इस फ़िल्म को शंकर पटनायक ने पूरा किया।

P.C. Sharma

A veteran documentary and short filmmaker, Sharma had made over a dozen films which won awards in India and abroad. He was in the process of making this film when he passed away. The film was completed by Shankar Patnaik

शंकर पटनायक

एक कैमरामैन के रूप में प्रशिक्षित, शंकर पटनायक 1975 में फ़िल्म उद्योग से जुड़े तथा अनेक फीचर फ़िल्मों में सहायक कैमरामैन के रूप में काम किया। विगत बीस वर्षों से फ़िल्म प्रभाग के लिये काम करते हुए 1988 में आठवें अंटार्कटिका साइंटिफिक एक्सपेडिशन टू अंटार्कटिका के सदस्य थे, इस दौरान उन्होंने ''फ्रोजेन कांटिनेन्ट'' बनाई। उन्होंने समुद्र तट से 21,000 फुट ऊपर सियाचेन ग्लेशियर पर ''फार्मिडबल फ्रन्टियर्स'' का चित्रांकन किया(

Shankar Patnaik

Trained as a cameraman, Shankar Patnaik joined the film industry in 1973 and was assistant cameraman in a number of feature films. Working with the Films Division for the past twenty years, he was member of the Eighth Antarctica Scientific Expedition to Antarctica in 1988, during which time he made "Frozen Continent." He shot "Formidable Frontiers" on the Siachen Glacier at 21,000 feet above sea level. He has so far won five national and four international awards for his films.

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म (पर्यटन, निर्यात, कारीगरी, उद्योग विषयों को शामिल करना) पुरस्कार

सारंग - सिम्फनी इन कोकोफोनी (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **वाई.एन. इन्जीनियर, फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **जोशी जोसेफ, फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **सारंग-सिम्फनी इन कोकोफनी** को, एक युवा युगल के जैविक खेती द्वारा निष्क्रिय घाटी को पुनर्जीवित करने की वचनबद्धता को दर्शाने वाले प्रेरणाप्रद को दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM (TO COVER TOURISM, EXPORTS, CRAFTS, INDUSTRY ETC.)

SARANG-SYMPHONY IN COCOPHONY(ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: JOSHY JOSEPH. FILMS DIVISION

Citation

The Award for the Best Promotional Film of 1997 is given to the film SARANG-SYMPHONY IN COCOPHONY for an inspiring documentary about a young couple's commitment to revive the silent valley through organic farming.

वाई.एन. इंजीनियर

भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान 1968 बैच में छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त इंजीनियर ने हिन्दी फ़िल्म उद्योग में जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में कुछ समय तक काम किया। उन्होंने फ़िल्म प्रभाग में 40 डाकुमेंटरीज बनाई। अब उसी संस्थान में वे निर्माता हैं।

Y.N. Engineer

A Diploma holder in Cinematography from the Film and Television Institute of India from the 1968 batch, Engineer had worked for some time as an assistant to Jal Mistry in the Hindi film industry. He made forty documentaries as a Director in the Films Division. He is now a producer in the same organisation.

जोशी जोज़ेफ

मलयालम भाषा में स्नातक करने के पश्चात 36 वर्षीय जोशी 1985 में फ़िल्म प्रभाग से जुड़ गये तथा उन्होंने 9 डाकुमेंटरी की पटकथा एवं निर्देशन का कार्य किया। उन्होंने मलयालम फीचर फ़िल्म "**कथापुरुषन**" के निर्माण में अदूर गोपालकृष्णन के साथ सहायक के रूप में भी काम किया।

Joshy Joseph

A graduate in Malayalam literature, thirtysix-year old Joshy joined the Films Division in 1985, and has scripted and directed nine documentaries. He also assisted Adoor Gopalakrishnan in the making of the Malayalam feature film **"Kathapurushan."**

सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म (पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, आदि जैसे कृषि से संबंधित विषयों को शामिल करना) पुरस्कार

पोस्ट हारवेस्ट मैनेजमेंट ऑफ पोटेटो (हिन्दी)

निर्माता : **वाई.एन. इंजीनियर, फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **वी. पैकिरिस्वामी, फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **पोस्ट हारवेस्ट मैनेजमेंट ऑफ पोटेटो** को अति उत्तम शोध कार्य, सूचनात्मक तथा सुचारू संप्रेषण, जो दर्शकों को बहुत व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करेगी, के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AGRICULTURAL FILM (TO INCLUDE SUBJECT RELATED TO AND ALLIED TO AGRICULTURE LIKE ANIMAL HUSBANDARY, DAIRYING ETC.)

POST HARVEST MANAGEMENT OF POTATO (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **V. PACKIRISAMY, FILMS DIVISION**

Citation

The Award for the Best Agricultural Film of 1997 is given to the film POST HARVEST MANAGEMENT OF POTATO for a very well researched, informative and effectively communicated film which will be of immense practical value to viewers.

वाई.एन. इंजीनियर

भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान 1968 बैच में छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त इंजीनियर ने हिन्दी फ़िल्म उद्योग में जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में कुछ समय तक काम किया। उन्होंने फ़िल्म प्रभाग में 40 डाकुमेंटरीज बनाई। अब उसी संस्थान में वे निर्माता हैं।

Y.N. Engineer

A Diploma holder in Cinematography from the Film and Television Institute of India from the 1968 batch, Engineer had worked for some time as an assistant to Jal Mistry in the Hindi film industry. He made forty documentaries as a Director in the Films Division. He is now a producer in the same organisation.

वी. पैकिरिस्वामी

एक पिछड़े हुए गांव के रहने वाले चौतीस वर्षीय पैकिरिस्वामी मद्रास विश्वविद्यालय से अर्थ शास्त्र में स्नातक हैं। तमिलनाडु फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान, चेन्नई से 1986 में फ़िल्म निर्देशन एवं पटकथा का तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा कर लेने के पश्चात उन्होंने चेन्नई में सिनेमा के लिए कुछ समय तक काम किया। 1989 में फ़िल्म प्रभाग से जुड़ जाने के पश्चात उन्होंने अनेक फ़िल्म समाचार पत्रिकाएं एवं डाकुमेंटरी बनाई। भिवांडी घटना पर उनकी समाचार पत्रिका भारतीय पैनोरमा 1997 में शामिल थी तथा इसे सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म का पुरस्कार मिला। इस वर्ष डाकुमेंटरी एवं लघु फ़िल्म के लिए मुम्बई अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में इसे गोल्डेन कोंच से पुरस्कृत किया गया है। उनके द्वारा बनाई गई अनेक फ़िल्मों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में शामिल किया गया। बाल मजदूरी पर उनकी फ़िल्म, ''लॉस्ट चाइल्डहुड'' को सीरिया में नवें डमस्कस फ़िल्म समारोह में कांस्य पदक एवं 1000 डालर का पुरस्कार मिला।

V. Packiriswamy

Coming from a remote village, thirtyfour-old Packiriswamy is an Economics Graduate from Madras University. After completing a three-year Diploma course in film direction and screenplay from the Film and Television Institute of Tamil Nadu, Chennai, in 1986, he worked for some time in mainstream cinema in Chennai. Joining the Films Division in 1989, he has made several news magazines and documentaries. His news magazine on the Bhiwandi Tragedy was on the Indian Panorama 1997 and bagged the best investigative film award. This film also bagged the Golden Conch at the Mumbai International film Festival for Documentary and Short films this year. Many other films made by him have been entered in national or international festivals. His film on child labour, "Lost Childhood", bagged the Bronze Medal with a cash prize of 1000 USDollars at the Ninth Damascus Film Festival in Syria.

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म पुरस्कार

अय्यनकली - आधिष्ठितारुढ विमोचकन (मलयालम)

निर्माता : **पी. शशिधरन** तथा **ए. कृष्णा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **आर.एस. मधु** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **अय्यनकली-आधिष्ठितारुढ विमोचकन** को दिया गया है। सतर्क शोध के अतिरिक्त फ़िल्म सामन्तशाही तथा जातिवाद के खिलाफ प्रथम उद्‌बोधन के उत्साह का पुनर्निमाण करती है।

AWARD FOR THE BEST HISTORICAL RECONSTRUCTION/COMPILATION FILM

AYYANKALI - ADHASTITHARUDE VIMOCHAKAN (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **P. SASIDHARAN** and **A. KRISHNA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **R.S. MADHU**

Citation

The Award for the Best Historical Reconstruction film of 1997 is given to the film AYYANKALI-ADHASTITHARUDE VIMOCHAKAN. Besides being meticulously researched the film also reconstructs the spirit of the first awakening against fuedalisms and casteis

पी. शशिधरन

अय्यनकली के पौत्र शशिधरन का जन्म वेंगानूर में 1937 में हुआ जब उनके प्रख्यात दादा अभी जीवित थे। उसने कृषि अधिकारी के रूप में अपना जीवन शुरू किया। खण्ड विकास अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए उन्हें केरल पुलिस के लिए चुन लिया गया और वे भारतीय पुलिस सेवा से जुड़ गये। उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य किया तथा पुलिस उप महानिरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए। वे अब उनके दादा द्वारा स्थापित सदजन परिपलोना संघोम के अध्यक्ष हैं। वे विरुवनन्तपुरम में रहते है तथ ललित कला में उनको काफी रुचि है। यह उनकी एक मात्र फ़िल्म है।

ए. कृष्णा

अययनकली का भतीजा कृष्णा बहुमुख प्रतिभा का अभिनेता है। उनका जन्म 1938 में वेंगानूर में हुआ। केरला विश्वविद्यालय से विधि में स्नातक करने के पश्चात वे 196 में केरला राज्य सेवा से जुड़ गये तथा 1933 में सरकार के अतिरिक्त सचिव के पद से सेवानिवृत हुए। वे. विरुवनन्तपुरम में रहते हैं।

आरएस. एधु

अध्यापन में विधिवत प्रशिक्षण प्रापत करने के बाद मधु 1958 से पटकथा, अभिनेता, सीनिक डिजाइनर, मेक-अप कलाकार तथा निर्देशक के रूप में अव्यवसायी थियेटर आंदोलन से जुड गये। उन्होंने 1972 में एक मलयालम फ़िल्म के कला विभाग में काम किया तथा बाद में कला निर्देशक के रूप में एक दूसरी फ़िल्म ''रुकमिणी'' जिसका राष्ट्रीय स्तर पर स्वागत हुआ, में काम किया। उन्होंने टेलिविजन धारावाहिकों एवं डाकुमेंटरी के लिए कला निर्देशक के रूप में भी काम किया है। उन्होंने इस फ़िल्म की पटकथा भी लिखी जो उनकी पहली डाकुमेंटरी फ़िल्म है।

P. Sasidharan

Grandson of Ayyankali, Sasidharan was born in Venganoor in 1937 when his illustrious grandfather was still alive. He began his career as an Agricultural Officer. While serving as Block Development Officer, he was selected to Kerala Police and joined the Indian Police Service. He worked in various capacities and retired as Deputy Inspector General of Police. He now chairs the Sadhjana Paripalana Sanghom founded by his grandfather. He lives in Thiruvananthapuram and has an abiding interest in fine arts. This is his maiden film.

A. Krishna

Grand-nephew of Ayyankali, Krishna is a versatile actor. He was born in 1938 in Venganoor. Graduating in Law from Kerala University, he joined Kerala Government Service in 1961 and retired as Additional Secretary to the Government in 1993. He resides in Thiruvananthapuram.

R S. Madhu

After formal training in teaching, Madhu had been involved in the amateur theatre movement since 1958 as scriptwriter, actor, scenic designer, make-up artist and director. He had worked in the art department of a Malayalam film in 1972 and was later art director of another film, **"Rukmini"**, which won national acclaim. He also worked as art director for television serials and documentaries.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

माटिर भांर (बंगला)

निर्माता : **अंजना घोष दस्तीदर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **देबानन्द सेन गुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **माटिर भांर** को अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत विशेषाधिकार हीन बालिका के प्रामाणिक चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, AND DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.)

MATIR BHANR (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ANJANA GHOSH DASTIDAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **DEBANANDA SENGUPTA**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues (such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc.) of the year 1997 is given to the film **MATIR BHANR** for an authentic portrayal of the struggle for identity empowerment by the underpriveleged girl child.

अंजना घोष दस्तीदर

कलकत्ता विश्वविद्यालय से कला स्नातक, अंजना ने 1996 में लघु फ़िल्म निर्माण का कार्य शुरू किया और '**माटिर भांर**' उनकी पहली फ़िल्म है। दूसरी 'मुख बदल गए' पूरी होने को है। दोनों फ़िल्में भारत में औरतों और लड़कियों से सम्बन्धित सामाजिक मुद्दे पर हैं, किंतु वे भविष्य में अन्य विषयों पर भी फ़िल्म बनाने में रुचि रखती है।

Anjana Ghosh Dastidar

A graduate in arts from Calcutta University, Anjana started producing short films in 1996, and **"Matir Bhanr"** is her first production. The second "Mukh badal gaye" is nearing completion. Both deal with the social issues of girls and women in India, but she is also eager to make films on other subjects as well.

देबानंद सेन गुप्ता

कलकत्ता विश्वविद्यालय से विधि-स्नातक हुए देबानंद विख्यात चलचित्रकार रामानंद सेन गुप्ता के पुत्र हैं। जिन्होंने जीन रेनॉपर के साथ '**द रिवर**' में कार्य किया।

स्वतंत्र फ़िल्म निर्देशक बनने से पहले वे एनीमेशन तथा फ़िल्म पत्रकारिता से जुड़े हुए थे। उन्होंने 1989 से अब तक वीडियो के लिए अनेक फ़िल्में बनाई हैं। बड़े पर्दे के लिए यह उनकी पहली फ़िल्म है।

Debananda Sengupta

A Law Graduate from Calcutta University, Debananda is the son of Ramananda Sengupta, a wellknown cinematographer who had worked with Jean Renoir in **"The River"**.

He was also involved with film journalism and animation, before beginning independent filmmaking. Though he has made several documentaries on video since 1989, **MATIR BHANR** is his first film on celluloid.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म पुरस्कार

निरकुंश (हिन्दी)

निर्माता : **वीनू अरोड़ा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **वीनू अरोड़ा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **निरकुंश** को उसके सशक्त नाटकीय प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है जिसमें एक युवा सामाजिक कार्यकर्त्ता का शिशुबालिका हत्या जैसे जघन्य अपराध के पीछे गहन सामाजिक पूर्वाग्रहों पर प्रहार करने का प्रयास है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM

NIRANKUSH (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **VENU ARORA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **VENU ARORA**

Citation

The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1997 is given to the film **NIRANKUSH**, a powerful dramatic narration of a young social worker's endeavours to attack the deeper social prejudices behind the heinous crime of female infanticide.

वीनू अरोड़ा

वीनू अरोड़ा ने दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कालेज से अंग्रेजी (आनर्स) करने के बाद मॉस कॅम्यूनिकेशन रिसर्च सेन्टर जामिया मिलिया इस्लामिया से स्नातकोत्तर किया।

वीनू के दो कविता संकलन प्रकाशित हो चुके है। वे भारतीय समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं की नियमित लेखिका भी हैं। 1995 से वे फैसल अलकाजी, अमाल अलाना और सईद नकवी के साथ बहुत से प्रोजेक्टों पर स्वतंत्र निर्देशक और संपादक के रूप में कार्य कर रही है। 35 मि.मि. में फ़िल्म "**निरकुंश**" उनकी पहली फ़िल्म है।

Venu Arora

After getting top honours from Hindu College of Delhi University in her English Honours, Venu postgraduated from the Mass Communication Research Centre of the Jamia Millia Islamia.

This 27-year old has published two volumes of poetry, besides being a regular writer and contributor to several Indian newspapers and magazines. Since 1995, she has been free-lancing as a director and editor working on several projects with Feisal Alkazi, Amal Allana, and Saeed Naqvi, besides being part of and producing films under the 'Ideosync' banner. **"Nirankush"** is her first project in 35 mm.

सर्वोत्तम गवेषणा/साहसी फ़िल्म (खेलों को शामिल करना) पुरस्कार

इन सर्च ऑफ एक्सीलेंस (हिन्दी)

निर्माता : **कुलदीप सिंह, फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रघु कृष्ण** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गवेषणा/साहसी फ़िल्म (खेलों को शामिल करना) का 1997 का पुरस्कार **इन सर्च ऑफ एक्सीलेंस** को दिया गया जो महाराष्ट्र के युद्ध से प्रेरित खेल, जिनमें मलखम्ब भी सम्मिलित है, का सशक्त व अनुप्रमाणित अवलोकन कराती है।

AWARD FOR THE BEST EXPLORATION/ ADVENTURE FILM

IN SEARCH OF EXCELLENCE (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **KULDEEP SINHA, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAGHU KRISHNA**

Citation

The Award for the Best Exploration/Adventure Film of 1997 is given to the film **IN SEARCH OF EXCELLENCE** - a vigorous and inspiring look at Maharashtra's martially inspired popular sports including malkhamb.

कुलदीप सिन्हा

कला में स्नातक, पत्रकारिता में डिप्लोमा तथा भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान से सिनेमा में स्नातक कुलदीप सिन्हा एक योग्य फ़िल्म निर्माता हैं। फ़िल्म प्रभाग में दस वर्षों का अनुभव शामिल करते हुए उन्हें संचार में बीस वर्षों से अधिक का अनुभव है।

सिन्हा 150 से अधिक फ़िल्मों से किसी न किसी प्रकार से जुड़े रहे और उन्हें अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। एक निर्देशक के रूप में उनकी फ़िल्म ''**थ्रू ए लेन्स स्टार्कली**'' 1996 के भारतीय पैनोरमा में शामिल थी उनकी फिल्में ''**तारानाथ शेनाय**'' तथा ''**सर्विसेज आन ट्रीज़**'' शामिल हैं। उन्होंने ''**अपना उत्सव**'' एवं भारत में सोवियत संघ समारोह पर कुछ फ़िल्में बनाईं।

रघु कृष्ण

भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान से सिनेमा में डिप्लोमा एवं टेलिविजन प्रशिक्षण प्रमाणपत्र दोनों प्राप्त, रघु ने दूरदर्शन में 1975 में सम्पादक के रूप में काम शुरू किया तथा 1983 में उप निदेशक के रूप में फ़िल्म प्रभाग चले गये। वर्तमान में वे फ़िल्म प्रभाग में निर्देशक हैं।

उन्होंने फ़िल्म प्रभाग में बीस से अधिक फ़िल्मों में निर्देशन का काम किया। कार्टूनिस्ट शंकर पर उनकी फ़िल्म, ''**दि डेविल ऑफ दिल्ली**'' 1988 में विरुवनन्तपुरम के फ़िल्मोत्सव में भारतीय पैनोरमा में थी और इसका प्रदर्शन किया गया। ''**आन माइन्स एण्ड मैन**'' के द्वारा उन्हें 1992 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

Kuldeep Sinha

Being a graduate in arts, diploma holder in journalism, and a graduate in cinema from the Film and Television Institute of India, Kuldeep Sinha is a highly qualified filmmaker. He has more than twenty years of experience in communication, including over ten years in the Films Division.

Sinha has been associated with over 150 films in one capacity or another, and has won a large number of national and international awards. His film **"Through a lens Starkly"** as director was in the Indian Panorama 1996. His films include **"Taranath Shenoy"** and **"Services on Trees"**. He also made some films on **"Apna Utsav"** and the Festival of the Soviet Union in India.

Raghu Krishna

Holding both a Diploma in Cinema and a Television Training Certification from the Film and Television Institute of India, Raghu began working as an editor with Doordarshan in 1975 and moved to Films Division as Deputy Director in 1983. He is currently a Director with the Films Division.

He has directed over twenty films in the Films Division. The film on the cartoonist Shankar, **"The Devil of Delhi"** was in the Indian Panorama and shown at the Filmotsav in Thiruvanthapuram in 1988. **"Of Mines and Men"** won him a National Award in 1992.

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म पुरस्कार

थर्स्ट (हिन्दी)

निर्माता : **वाई.एन. इंजीनियर, फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **स्वदेश पाठक, फ़िल्म प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **थर्स्ट** को दिया गया है जो ग्रामीण भारत में जल स्रोतों की अव्यवस्था की वास्तविकता को होशियारी से अभ्यारोपित करती है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

THIRST (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **SWADESH PATHAK, FILMS DIVISION**

Citation

The Award for the Best Investigative Film of 1997 is given to **THIRST** for a hard hitting indictment of the realities of water - resource mismanagement in rural India.

वाई.एन. इंजीनियर

भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान 1968 बैच में छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त इंजीनियर ने हिन्दी फ़िल्म उद्योग में जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में कुछ समय तक काम किया। उन्होंने फ़िल्म प्रभाग में 40 डाकुमेंटरीज बनाई। अब उसी संस्थान में वे निर्माता हैं।

Y.N. Engineer

A Diploma holder in Cinematography from the Film and Television Institute of India from the 1968 batch, Engineer had worked for some time as an assistant to Jal Mistry in the Hindi film industry. He made forty documentaries as a Director in the Films Division. He is now a producer in the same organisation.

स्वदेश कुमार पाठक

लखनऊ से यांत्रिकी इंजीनियरी में डिप्लोमा प्राप्त करने के बावजूद स्वदेश कुमार पाठक ने सिनेमा के लिए काम करना अच्छा समझा। उन्होंने फाइन आर्ट चित्रों के साथ स्वतंत्र कैमरामैन के रूप में काम किया, तथा बाद में 22 वर्ष की आयु में 1983 में फ़िल्म प्रभाग से सहायक अनुरक्षण अभियन्ता के रूप में जुड़ गये। वह अब इस प्रभाग में कैमरामैन के रूप में काम करते हैं। कार्टून फ़िल्म "**थ्रू इनोसेन्स**" जिसको उन्होंने 1990 में निर्देशित किया, को जापान में हिरोशिमा में अंतर्राष्ट्रीय कार्टून समारोह के लिए नामित किया गया।

Swadesh Kumar Pathak

Despite holding a Diploma in Mechanical Engineering from Lucknow, Swadesh Kumar Pathak preferred to work in cinema. He worked as a freelance cameraman with Fine Art Pictures, and later joined the Films Division as an Assistant Maintenance Engineer in 1983 when he was 22 years of age. He now works as a cameraman in the Division. The animation film **"Through Innocence"** directed by him in 1990 was nominated for the International Animation Festival in Hiroshima in Japan.

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म पुरस्कार

ट्रेड - कॉमर्स (एनीमेशन)

निर्माता : **भीमसेन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **किरीट खुराना** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **ट्रेड - कॉमर्स** को दिया गया है जो इस कौतुहलपूर्ण शीर्षक के द्वारा बाल-वेश्यावृति की बुराइयों को कार्टून के रूप में रचनात्मक तथा सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करती है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

TRADE - COMMERCE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **BHIMSAIN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **KIREET KHURANA**

Citation

The Award for the Best Animation Film of 1997 is given to the film **TRADE - COMMERCE** - this intriguingly titled expose of the evils of child prostitution uses the animation form in a creative and aesthetic manner.

भीमसेन

लखनऊ से ललितकला में स्नातक करने के बाद भीमसेन किसी अच्छे अवसर की तलाश में मुम्बई आ गये। यहां वे बैकग्राउंड कलाकार के रूप में फ़िल्म प्रभाग से जुड़ गये। यहां इन्होंने कार्टून की कला को सीखा। वे 1968 में प्रसाद प्रोडक्शन्स से जुड़ गये किन्तु ही जल्दी ही स्वतंत्र निर्माता के रूप में उससे अलग हो गये।

ट्रेड को कनाडा के राष्ट्रीय फ़िल्म बोर्ड के प्रायोजन से ''राइट फ्राम दि हार्ट'' श्रृंखला के भाग के रूप में बनाया गया है।

Bhimsain

After graduating in fine arts and classical music from Lucknow, Bhimsain had come to Mumbai in search of better opportunities. Here he joined the Films Division as a background artist. It is here that he learnt the art of animation. He joined Prasad Productions in 1968, but branched out as an independent filmmaker soon after.

"Trade" has been made in collaboration with the National Film Board of Canada, as part of the "Right from the Heart" series.

किरीट खुराना

किरीट खुराना अपने आरंभिक दिनों से कार्टून फ़िल्मों से अधिक रुचि रखते रहे हैं। उन्होंने 1987 में बीस वर्ष की आयु में ''अलफाकैट'' का उसके बाद 1989 में ''सीमा'' का निर्देशन किया। ''महागिरि'' को 1994 में मुम्बई अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में एक पुरस्कार मिला तथा 1995 में ''ओ'' को आस्ट्रिया में एक पुरस्कार मिला।

Kireet Khurana

Kireet Khurana has been interested in animation films from his early days. He directed his film "Alphacat" in 1987 when he was just twenty years of age, followed by "Seema" in 1989. "Mahagiri" in 1994 won an award at the Mumbai International Film Festival, and "O" in 1995 won an award in Austria.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म पुरस्कार

हिप्नोथीसिस (हिन्दी)

निर्माता : **भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रजत कपूर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **हिप्नोथीसिस** को जन सिनेमा की विडम्बनाओं के गंभीर अवलोकन के सहज प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

HYPNOTHESIS (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAJAT KAPOOR**

Citation

The Award for the Best Short Fiction Film of 1997 is given to the film **HYPNOTHESIS** for a serious look, light heartedly presented, of the travesties of mass cinema.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म पुरस्कार

हिप्नोथीसिस (हिन्दी)

निर्माता : **भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रजत कपूर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **हिप्नोथीसिस** को जन सिनेमा की विडम्बनाओं के गंभीर अवलोकन के सहज प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

HYPNOTHESIS (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAJAT KAPOOR**

Citation

The Award for the Best Short Fiction Film of 1997 is given to the film **HYPNOTHESIS** for a serious look, light heartedly presented, of the travesties of mass cinema.

रजत कपूर

रजत ने 1988 में भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान से फ़िल्म निर्देशन का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया। कुछ वर्षों बाद उन्होंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर अपनी प्रथम स्वतंत्र फ़िल्म "**तराना**" बनाई जिसे 1995 में सर्वोत्तम छायांकन पुरस्तार भी मिला। हिपनोथीसिस को भारतीय पैनोरमा 1997 के लिए चुना गया तथा इस वर्ष मुम्बई अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया। गत वर्ष रजत ने अपना प्रथम फीचर "**प्राइवेट डिटेक्टिव**" मुम्बई में एक सनसनीखेज फ़िल्म जिसमें नसीरुद्दीन शाह, केनेथ डेसाई, शम्बनी कौल, अली खान तथा कश्मीरा शाह ने अभिनय किया, को पूरा किया। वे रंगमंच पर भी बराबर काम करते हैं। उनकी फ़िल्मों में उनकी प्रथम फ़िल्म "**एक था राजा**", जो उनकी डिपलोमा फ़िल्म थी, शामिल है।

Rajat Kapoor

Rajat passed out from the Film and Television Institute of India after studying film direction in 1988. Some years later, he made his first independent film **"Tarana"** on Hindustani Classic Music, which in 1995 won the National Award as the Best Non-feature film. It also won the best cinematography award. **"Hypnothesis"** was selected for the Indian Panorama 1997 and was shown in the Mumbai International Film Festival this year.

Last year, Rajat completed his first feature **"Private Detective"**, a thriller set in Mumbai and starring Naseeruddin Shah, Kenneth Desai, Shambani Kaul, Aly Khan and Kashmira Shah. He has also been working regularly in the theatre. His films also include his first, **"Ek tha Raja"**, which was his Diploma film.

सर्वोत्तम परिवार कल्याण संबंधी फ़िल्म पुरस्कार

द सेवियर (हिन्दी) और बांगलार बाउल (बंगला)

निर्माता : **शैला परलकर (द सेवियर)** तथा **यश चौधरी (बांगलार बाउल)** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **शैला परलकर (द सेवियर)** तथा **के.जी. दास (बांगलार बाउल)** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **द सेवियर** को दिया गया है जो बाल स्वास्थ्य रक्षा के मूल अधिकारों को सहजता व दक्षता के साथ जनता तक सम्प्रेषित करती है।

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1997 का पुरस्कार **बांगलार बाउल** को स्थानीय लोकगीत तथा संगीत परम्पराओं के माध्यम से परिवार कल्याण के मुद्दों की खुली व्याख्या करने के लिए दिया गया है

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

THE SAVIOUR (HINDI) and BANGLAR BAUL (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **SHAILA PARALKAR (THE SAVIOUR)** and **YASH CHAUDHARY (BANGLAR BAUL)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **SHAILA PARALKAR (THE SAVIOUR)** and **K.G. DAS (BANGLAR BAUL)**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1997 is given to **THE SAVIOUR,** this film simply and dexterously communicates the fundamentals of child health care to the masses.

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1997 is given to the film **BANGLAR BAUL,** for its evocative exposition of family welfare issues employing the local folk and musical traditions.

श्रीमती शैला मोहन परलकर

श्रीमती परलकर अनुप्रयुक्त कला में डिप्लोमा प्राप्त है। कुछ वर्ष आकार स्टूडियों में कार्य करने के बाद वे फ़िल्म प्रभाग के कार्टून फ़िल्म एकक में पिछले 35 वर्षों से कार्य कर रही है।

वे अब तक 25 फ़िल्मों में कार्य कर चुकी हैं। 1982 में फ़िल्म '**थंकर**' के लिए उन्होंने सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है। 1992 में उनकी फ़िल्म '**द लास्ट ड्राप**' को महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार दिया गया था। फ़िल्म '**बाटल्ड कनाबिस**' को 1979 में एनेसी में दिखाया गया था, जिसका निर्देशन, संरचना, पटकथा तथा कार्टून चित्रण आदि सब उन्हीं ने किया था।

यश चौधरी

पचास वर्षीय यश चौधरी ने भारतीय फ़िल्म एवं टेलिविजन संस्थान में डिप्लोमा प्राप्त किया।

वे 1967 में फ़िल्म प्रभाग से एक निर्देशक के रूप में जुड़ गये तथा लगभग सत्तर डाकुमेंटरी फ़िल्मों में निर्देशन एवं पटकथा का काम किया जिनमें से अधिकतम फ़िल्मों को राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले या भारतीय पैनोरमा में शामिल किया गया।

के.जी. दास

कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक, तरेपन वर्षीय के.जी. दास प. बंगाल में अनेक प्रमुख फ़िल्म निर्देशकों के साथ सहायक अथवा संयुक्त निर्देशक के रूप में काम किया।

उन्होंने फ़िल्म प्रभाग के लिए अनेक डाकुमेंटरी एवं फीचर फ़िल्मों का निर्देशन किया, जिससे वे 1989 में जुड़ गये। उनकी फ़िल्म "कर्मवीर गौरीशंकर राय" जिसका निर्माण यश चौधरी ने किया भी 1996 के भारतीय पैनोरमा में शामिल थी, जबकि "नाबाकलेबर" 1997 के पैनोरमा में थी।

Mrs Shaila Mohan Paralkar

Mrs Paralkar holds a Diploma in Applied Arts. After working in Akar Studio for some years, she has been working in the Cartoon Film Unit of the Films Division for the past 35 years. She has twenty films to her credit. She received the National Award for Best animation for the film **"Thinker"** in 1982. Her film **"The Last Drop"** fetched her the Maharashtra State Award in 1992. The film **"Bottled Cannabis"** which was directed, designed, scripted and animated by her, was shown in Annecy in 1979.

Yash Choudhary

Now in his late fifties, Yash Chaudhary holds a Diploma in Film Direction from the Film and Television Institute of India.

He joined the Films Division in 1967 as director and has scripted or directed about seventy documentary films, of which a large number have won National or international awards or featured in the Indian Panorama.

K.G. Das

A graduate from Calcutta University, fifty three-year old K.G. Das has worked with several eminent film directors in West Bengal as assistant or associate director.

He has directed several documentary and feature films for the Films Division, which he joined in 1989. His film "Karamveer Gourishankar Roy" produced by Yash Chaudhary was also in the Indian Panorama for 1996, while "Nabakalebar" was in the Panorama in 1997.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

अशोक दासगुप्ता

छायाकार : **अशोक दासगुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायाकार का 1997 का पुरस्कार **अशोक दासगुप्ता** को उनके **द ट्रेल** के काम के लिए दिया गया है यह प्रयोगात्मक फ़िल्म मानसिक संघ जीविता जैसे विषय को सशक्त व कलात्मक दृश्यों के द्वारा प्रस्तुत करती है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

ASHOKE DASGUPTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman : **ASHOKE DASGUPTA**

Citation

The Award for the Best Cinematography for a Non-Feature Film of 1997 is given to **ASHOKE DASGUPTA** for his work in the film **THE TRAIL**. This experimental film deals with the decolonisation of the mind through its strong and artistic visual images.

अशोक दासगुप्ता

वे एक वरिष्ठ चलचित्रकार है। उन्होंने अनेक वृतचित्रों तथा धारावाहिकों में काम किया है, जिसमें से अनेक ने पुरस्कार जीते है।

एस. सेन द्वारा "**पेंटिंग्स इन टाईम**", एस. सरकार द्वारा निर्देशित "**द गेम्स वी प्लेड**" और अन्य उनके पुरस्कृत कार्यों में है। वे पर्यटन धारावाहिक "**दिग्दर्शन**" के निर्माता भी रहे हैं।

Ashoke Dasgupta

A veteran cinematographer who has worked for many serials and documentaries, many of which have won awards. These include **"Paintings in Time"** by S. Sen, **"The Games we played"** directed by S. Sarkar and so on. He also works as the producer for the tourism serial **"Dikdarshan."**

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

पंकज शील

ध्वनि आलेखक : **पंकज शील** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1997 का पुरस्कार **पंकज शील** को उनके **माटिर भांर** फ़िल्म में सक्षम ध्वनि संरचना के लिए दिया गया है जो फ़िल्म के ताने बाने में पूर्णत: रचा बसा है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

PANKAJ SHIL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer: **PANKAJ SHIL**

Citation

The Award for the Best Audiography in a Non-Feature Film of 1997 is given to **PANKAJ SHIL** for his work in the film **MATIR BHANR** for its strong sound structure which is woven and enmeshed into the fabric of the film.

पंकज शील

भारतीय फ़िल्म और टेलिविजन संस्थान, पुणे से ध्वनि अभियांत्रिकी तथा ध्वनि रिकार्डिंग में डिप्लोमा प्राप्त हैं। पंकज शील सुप्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशकों के साथ कार्य कर चुके है। श्याम बेनेगल "**सूरज का सातवा घोड़ा**", महेश भट्ट निर्देशित "**फिर तेरी कहानी याद आई**", के अलावा गोविंद निहलानी, केतन मेहता और कुंदन शाह इस क्रम में उल्लेखनीय है। उन्होंने शांति निकेतन पर बनी एक फ़िल्म में श्रीमती हेमंती बनर्जी के साथ भी काम किया है जिसने 1992 का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। फिलहाल वे भारतीय सत्यजित रे फ़िल्म तथा टेलिविजन संस्थान, कलकत्ता में व्याख्याता के रूप में कार्य कर रहे है।

Pankaj Shil

Holder of a Diploma in Sound Engineering and Sound Recording from the Film and Television Institute of India in Pune, Pankaj Shil has worked on several projects with renowned filmmakers like Shyam Benegal in **"Suraj ka saatwan ghoda"**, **"Phir teri kahani yaad aaayi"** with Mahesh Bhatt, and filmmakers like Govind Nihalani, Ketan Mehta, and Kundan Shah. He worked with Mrs Haimanti Banerjee on a film on Santiniketan which had won a National Award in 1992. He is currently a lecturer at the Satyajit Ray Film and Television Institute of India in Calcutta.

सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार

उज्जल नन्दी

संपादक : **उज्जल नन्दी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सम्पादन का 1997 का पुरस्कार **उज्जल नन्दी** को **जातानेर जामी** में आशा व निराशा के बंधन का सीवन रहित तथा लयात्मक दृश्यप्रवाह सुरुचिपूर्ण सुस्वर में करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

UJJAL NANDY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **UJJAL NANDY**

Citation

The Award for the Best Editing of a Non-Feature Film of 1997 is given to **UJJAL NANDY** for his work in the film **JATANER JAMI** (Bengali) for the seamless and rythmic flow of visual images, juxtaposing hope and despair in a harmonious aesthetic.

उज्जल नन्दी

पचास वर्षीय उज्जल एक स्वतंत्र सम्पादक के रूप में 1975 से काम कर रहे हैं। उन्होंने 110 फीचर एवं 120 डाकुमेंटरी फ़िल्मों का सम्पादन प्रमुख निर्देशकों जैसे बुधदेव दासगुप्ता, राजा मित्रा, चिदानन्द दास गुप्ता, ऋतुपर्ण घोष, मनोरंजन सूर, मनमोहन मोहापात्र तथा अन्य के साथ किया। मणिपुर फ़िल्म विकास निगम द्वारा निर्मित सभी फ़िल्मों के सम्पादन का काम उनके पास है। उन्होंने बड़ी संख्या में बहुमूल्य पुरस्कार जीते तथा सभी भाषाओं की फ़िल्मों के लिए काम किया।

Ujjal Nandy

Fifty years old, Ujjal has been working as an independent editor since 1975 and edited more than 110 feature and 120 documentary films made by eminent directors like Buddhadeb Dasgupta, Raja Mitra, Chidananda Das Gupta, Rituparno Ghosh, Manoranjan Sur, Manmohan Mohapatra, and others.

He had the exclusive assignment for editing all films produced by the Manipur Film Development Corporation. He has also won a large number of prestigious awards and has worked on films in all languages.

विशेष उल्लेख

गोटीपुआ (अंग्रेजी)

प्रशस्ति

वर्ष 1997 का विशेष उल्लेख **गलबहार सिंह** को उनकी फ़िल्म **गोटी पुआ** में ओडिसी परम्परा की सृजनात्मक पूर्णवर्ती नृत्य विधा, जो आज भी जीवित है, के सघन शोध के लिए दिया गया।

SPECIAL MENTION

GOTIPUA (ENGLISH)

Citation

The Special Mention for 1997 is given to **GULBAHAR SINGH,** for his film **GOTIPUA** - a well researched portrayal of the still-vital dance - form which is the predecessor and creative source of the Odissi tradition.

गुलबहार सिंह

विज्ञान में स्नातक गुलबहार ने पांच वर्षों तक फ़िल्म निर्माण का अध्ययन किया। उन्होंने 1980 में अपनी प्रथम फ़िल्म "**वीड्स**" बनाई, उसके बाद सामाजिक विषयों पर अनेक फीचरेट एवं डाकुमेंटरी बनाई।

उनकी फ़िल्म "**अनुकरण**" को 1986 के पुरस्कारों में विशेष उल्लेख से सम्मानित किया गया, "**बायोटेक्नालोजी सम पासिबिलिटीज**" को 1992 में पुरस्कृत किया गया, तथा "**भीत**" को 1996 की सर्वोत्तम परिवार कल्याण फ़िल्म के लिए सम्मानित किया गया। गोटीपुआ नृत्य पर शोधित फ़िल्म के लिए इस वर्ष विशेष उल्लेख से सम्मानित किया गया है। उन्होंने दूरदर्शन के लिए मुंशी प्रेमचन्द के जीवन, समय एवं कार्य के ऊपर एक लम्बी डाकुमेंटरी बनाई है, तथा राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम के लिए अपनी प्रथम फीचर फ़िल्म "**सुन्दरी**" अभी-अभी पूरी की है।

Gulbahar Singh

A science graduate, Gulbahar spent five years as an understudy in filmmaking. He made his first film **"Weeds"** in 1980, and has since made various documentaries and featurettes on social subjects.

His film **"Anukaran"** got a special mention in the National Awards in 1986, **"Biotechnology: some possibilities"** was awarded in 1992, and **"Bhit"** got the award for the best film on family welfare of 1996. He gets a special mention this year for the well-researched film on Gotipua dance. He has made a long documentary for Doordarshan on the life, times and works of noted writer Munshi Premchand, and has just completed his first feature film **"Sundari"** for the National Film Development Corporation.

पुरस्कार जो नहीं दिया गये।

1. निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
2. संगीत निर्देशक

AWARDS NOT GIVEN

1. Special Jury Award
2. Music Director

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

वर्ष 1997 का सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार

सिनेमाची गोष्ट लेखक अनिल झणकार **तथा**

हिन्दी सिनेमा और दिल्ली लेखक सविता भाखरी एवं आदित्य अवस्थी

लेखक: **अनिल झणकार** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार; **तथा सविता भाखरी एवं आदित्य अवस्थी** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रकाशक: **राजहंस प्रकाशन, पुणे (सिनेमाची गोष्टा के लिए)** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार; **तथा प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली (हिन्दी सिनेमा और दिल्ली के लिए)** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1997 का सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार संयुक्त रूप से (क) **सिनेमाची गोष्टा** के वास्तविक विश्लेशण के लिए जो अनुबोधक ढंग से सूचना को विश्वसनीयता के साथ लिखी सुविधा होती है, के लिए दिया गया है; **एवं** (ख) **हिन्दी सिनेमा और दिल्ली** को सामाजिक, आर्थिक पहलुओं के साथ दिल्ली क्षेत्र में विचारों के सर्वेक्षण के द्वारा हिन्दी सिनेमा पर अनुसंधान किया गया, जिससे यह पुस्तक अत्यन्त रुचिकर हो गई।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

CINEMACHI GOSHTA BY ANIL JHANKAR **and**

HINDI CINEMA AUR DELHI BY SAVITA BHAKHRI and ADITYA AWASTHI

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Author : **Anil Jhankar (for Cinemachi Goshta);** and **Savita Bhakhri** and **Aditya Awasthi (for Hindi Cinema aur Delhi)**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Publisher : **Rajhans Prakashan, Pune (for Cinemachi Goshta)** and **Praveen Prakashan, New Delhi (for Hindi Cinema aur Delhi)**

Citation

The Award for the Best Book on Cinema of 1997 is given jointly to (A) **Cinemachi Goshta** for a certain originality of Analysis written in perceptive style together with reliability of information which makes this book capable of enriching the readers understanding of Cinema and (B) **Hindi Cinema aur Delhi** for a well researched account of Hindi cinema with socio-economic aspects supported by extensive opinion surveys in the Delhi region which endows this book with considerable interest.

अनिल झनकर

वे फ़िल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त है। रा.फि.वि. निगम द्वारा संचालित फीचर फ़िल्म पटकथा लेखन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में उन्होंने हाल ही में एक पुरस्कार जीता है। उन्होंने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद तथा ई.एम.आर.सी., पुणे के लिए वीडियो कार्यक्रमों के लिए पटकथाएं लिखी हैं। उन्होंने एफ टी आई आई के छात्रों तथा मुंबई दूरदर्शन के लिए लघु फ़िल्में भी बनाई है। सिनेमाची गोश्त विश्व सिनेमा का ऐतिहासिक दस्तावेज है इसे राजहंस प्रकाशन - पुणे द्वारा प्रकाशित किया गया है।

Anil Jhankar

Holder of a Diploma in Film Direction, Anil Jhankar had earlier won an award in the National Competition held by the National Film Development Corporation for feature film scripts. He has written scripts for video programmes made by the National Institute of Design in Ahmedabad and EMRC of Pune. He has also made short films for Mumbai Doordarshan and the students of FTII. "Cinemachi Goshta" is a history of world cinema published by Rajhans Prakashan, Pune.

श्रीमती सविता भाखड़ी

श्रीमती सविता भाखड़ी एम.ए,एम.फिल तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से डाक्टरेट कर चुकी है। उन्होंने अपने केरियर की शुरूआत उपग्रह दूरदर्शन केन्द्र के आडियंस रिसर्च सेन्टर से की। फिलहाल वे नेशनल इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक को-ओपरेशन एंड चाईल्ड डेवलपमेंट में सहायक निर्देशक हैं।

Dr. (Mrs) Savita Bhakhri

A recipient of M.A. M. Phil. and Doctorate from the Jawaharlal Nehru University, Savita had begun her career in the Audience Research Centre of Upgrah Doordarshan Kendra. At present, she is Associate Director at the National Institute of Public Cooperation and Child Development.

आदित्य अवस्थी

वे कानपुर विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर हैं। 1977 से आदित्य पत्रकार के रूप में कार्य कर रहे है। दिल्ली के सांध्य टाइम्स के मुख्य संवाददाता हैं।

राजधानी में फैले प्रदूषण पर उनकी पहली पुस्तक 'काली धूप' है।

Aditya Awasthi

A postgraduate in Economics from Kanpur University, Aditya has been working as a journalist since 1977. He is presently Chief Correspondent in **"Sandhya Times"**, a Hindi Eveninger from Delhi.

His first book was on the pollution in the capital, **"Kaali Dhoop".**

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार

दीपा गहलोत

समीक्षक: **दीपा गहलोत** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का 1997 का पुरस्कार **दीपा गहलोत** को दिया गया है। उनके लेख ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा समकालीन सक्रियता के साथ सिनेमा की गंभीर सामाजिकता एवं कलात्मकता के समीप है। इससे प्रसिद्ध सम्प्रेषण को गंभीरता से समझने में सुविधा होती है, अत: इसका महत्व बड़ी संख्या के पाठकगणों के लिए है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC

DEEPA GAHLOT

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the film Critic : **Deepa Gahlot**

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1997 is given to **Deepa Gahlot.** Her writings reflect a serious social and artistic approach to cinema, embracing its historical background and contemporary dynamics. It combines seriousness of understanding with popular communication and is thus of significance to the wider audience.

दीपा गहलोत

वर्ष 1981-82 में टाइम्स ऑफ इण्डिया से पत्रकारिता का प्रशिक्षण लेकर, वे फ़िल्मफेयर में संवाददाता के रूप में जुड़ी 1983 में "**द इवनिंग न्यूज**" के अलावा मैगजीन के लिए फ़िल्म-समीक्षा भी की। "**संडे मिड-डे**", "**सेवी**", तथा "**सिनेमा इन इण्डिया**" में वरिष्ठ पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने "**मिड-डे**" तथा "**द इंडिपेंडेन्ट**" के लिए फ़िल्म-समीक्षा भी की। स्वतंत्र लेखक के रूप में उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं के लिए मनोरंजन, संस्कृति तथा मानवीय सरोकारों पर बहुत से लेख लिखे। फिलहाल, वे "**संडे-मिड-डे**" में फ़िल्म समीक्षक तथा "**प्लस न्यूज बैंक**" में परामर्श संपादक के रूप में कार्य कर रही है।

विकास तथा महिला सम्बन्धी मुद्दे उनके रुचिपूर्ण क्षेत्र है। अनेक लेखों पर सामाजिक तथा नारीवादी दृष्टिकोण की छाप है। वे फ़िल्म समारोहों की नियमित दर्शक है।

Deepa Gahlot

After training in journalism from the Times of India in 1981-82, Deepa worked as a Correspondent with Filmfare. She began reviewing films for the magazine as well as **"The Evening News"** in 1983. Subsequently, she worked in senior positions in "Sunday Mid-Day", **"Savvy"** and **"Cinema in India"**, while continuing to review films for **"Mid-day"** and **"The Independent"**.

As a free-lance writer, she contributes articles on entertainment, culture and human interest in several publications. She is currently film critic for **"Sunday Mid-Day"** and Consulting Editor at **"Plus News bank"**, a features syndicate.

As her areas of interest are women's issues and development, her reviews are written from the social and feminist point of view. She has been regularly attending film festivals and is a keen movie buff.

स्वतंत्रता की पचासवीं
वर्षगाँठ के
उपलक्ष्य में

Celeberating Fifty
Years of
Independence

श्यामची आई

मराठी/श्वेत-श्याम/1995

निर्माण-निर्देशन : पी.के. अत्रे, **पटकथा** : आचार्य अत्रे, **संगीतकार** : वसंत देसाई, **कैमरा** : आर.एम. रेले, **ध्वनि** : नायर, **संपादन** : नारायण राव, **कलाकार** : वनमाला माधव वाजे, बाबू राव पेंढारकर, सुमति गुप्ते, सरस्वती बेडास,

यह फिल्म साने गुरूजी के समान नाम वाले उपन्यास पर आधारित है। इस फिल्म में श्याम के नैतिक और बौद्धिक विकास का चित्रण किया गया है। बालक बचपन से ही शरारती और उतावला है। उसकी मां कुशलतापूर्वक उसके भीतर सेवा और त्याग का बीजारोपण करती है। कहानी स्कूल से घर और घर से स्कूल के बीच चलती है और बच्चे का व्यक्तित्व धीरे-धीरे आकार लेता जाता है। अंत में, यह सिद्ध होता है कि शिक्षा का सही स्थान घर है, जहां मां-बाप का प्रेम और निर्देशन उन्हें सब कुछ सिखाता है।

SHYAMACHI AAI

Marathi/Black & White/1953

Producer-Director : P.K. Atre, **Screenplay** : Acharya Atre **Music** : Vasant Desai, **Camera** : R.M. Rele **Sound** : Nayar, **Editor** : Narayan Rao, **Players** : Vanamala, Madhav Waze, Baburao Pendharker, Sumate Gupte, Saraswati Bedas.

Based on the late Sane Guruji's novel of the same name, this film is about the moral and intellectual development of Shyam. The child is by nature boisterous and impetuous. His mother skillfully canalises his energies to inculcate in him a spirit of service and sacrifice. The scene shifts from home to school and back as the personality of the child gradually takes shape. Ultimately it is the home that is the real place or education because of the love and guidance that the parents offer.

मिर्जा ग़ालिब

उर्दू/श्वेत-श्याम/1954

निर्माण-निर्देशन : सोहराब मोदी, **पटकथा** : जे.के. नन्दा, **संगीतकार** : गुलाम मोहम्मद, **छायांकन** : लच्छू महाराज, **कैमरा** : आर.एम. रेले, **ध्वनि** : नायर, **संपादन** : नारायण राव, **कलाकार** : सुरैया, भारत भूषण, उल्हास, दुर्गा खोटे, निगार सुल्ताना, मुकरी,

फिल्म में महान उर्दू कवि के जीवन के लगभग तीन अथवा वर्षों को प्रदर्शित किया गया है तथा एक गायिका मोती बेगम जिसको उन्होंने ''चौधवीं'' नाम दिया, का उल्लेख किया गया है।

मुगलों के अंतिम राजा बहादुर शाह जफर के दरबार में आयोजित एक मुशायरे में एक श्रोता जो पारम्परिक गजल में तल्लीन होता है गालिब की कविता उसे प्रभावित नहीं करती। वह टूटे हुए हृदय के साथ दरबार से चला जाता है। घर जाते हुए वह उसकी एक कविता को गाते हुए सुनता है और यह मालूम करता है कि गायक मोती बेगम है जो उसकी बहुत बड़ी प्रशंसक है।

आर्थिक स्थिति ठीक न रहने तथा ससुर के न झुकने वाले व्यवहार के कारण गालिब एक मित्र के साथ रहने का निर्णय लेते हैं। इस दौरान मोती बेगम से संबंध और गहरे हो जाते हैं किन्तु स्थानीय कोतवाल उसे अपने साथ शादी करने के लिए मजबूर करने का प्रयास करता है। उसके अनुरोध पर पर गालिब जुआ खेलकर पैसे कमाता है तथा उसे बचा लेता है। इससे कोतवाल गालिब का दुश्मन बन जाता है। इस दौरा किसी गलतफहमी के कारण गालिक का सम्पर्क चौधवीं से समाप्त हो जाता है। जब कवि अपनी गरीबी एवं हार से जूझ रहा होता है, चौधवीं एक अवसर पर गालिब की एक गजल बहादुर शाह जफर के समक्ष यह याद दिलाने के लिए गाती है कि कवि अभी जीवित है तथा उसके शासन में अच्छे व्यवहार पाने का पात्र है। अगले दिन राजा गालिब को अपने दरबार में बुलाता है तथा ''हजमुद्दौला, दबीरुल-मुल्क, निजाम जग'' की उपाधि प्रदान करता है।

उन्हें हिन्तु इसके तुरंत बाद कोतवाल एक योजना के अनुसार जुए के अभियोग में उन्हें गिरफतार कर लेता है तथा कुछ महीनों के लिए उन्हें भेजने में सफल हो जाता है। जब गालिब जेल से वापस आते हैं तो वह देखते हैं कि चौधवीं अपने जीवन की अंतिम सांस ले रही है।

MIRZA GHALIB

Urdu/Black & White/1954

Producer-Director : Sohrab Modi, **Screenplay** : J.K Nanda, **Music** : Ghulam Mohammed, **Choreography** : Lachhoo Maharaj **Camera** : V. Avadhut **Art** : Rusi K. Banker **Sound** : M. Edulji **Players** : Suraiya, Bharat Bhooshan, Ulhas, Durga Khote, Nigar Sultana, Mukri.

The film covers only about three or four years of the great Urdu poet's life and highlights his romance with a singing girl, Moti Begum, whom he has named "Chaudhavin "

At a symposium in the court of Bahadur Shah Zafar, the last Moghul, Ghalib's poetry fails to impress an audience immersed in the traditional form of ghazal. He leaves the court disheartened. On his way home, he hears someone singing one of his verses and discovers that the singer is Moti Begum, one of his most ardent admirers

His unfavourable pecuniary condition and the unbending attitude of his father-in-law make Ghalib decide to move to the house of a friend. Meanwhile, his attachment to Moti deepens but the local Kotwal tries lo force her to marry. At her request, Ghalib raises money by gambling and saves her. This turns the Kotwal into a sworn enemy of Ghalib. Meanwhile, due to a misunderstanding Ghalib loses contact with Chaudhavin. As the poet languishes in poverty and frustration, Chaudhavin uses an opportunity to sing one of Ghalib's ghazals before Bahadur Shah to remind him that the poet is alive and deserves a better fate under his rule. Next day, the King invites Ghalib to his court and confers on him the titles of Hajmud-daula Dabir-ul-mulk. Nizam Jang.

But soon thereafter, the scheming Kotwal frames him in a gambling charge and succeeds in sending him to prison for a few months. When Ghalib comes out of jail he witnesses Chaudhavin, breathe her last.

पाथेर पांचाली

बंगाली/श्वेत-श्याम/1955

निर्देशन-पटकथा : सत्यजित रे, **संगीतकार** : रवि शंकर, **कैमरा** : सुब्रत मित्रा, **कलाकार** : करुणा बनर्जी, कनू बनर्जी, चुन्नीबाला, पिनाकी सेनगुप्ता, उमा दासगुप्ता

फिल्म की कहानी इसी नाम से प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित है। कहानी में एक गरीब ब्राह्मण है जो सन् 1920 के आस पास बंगाल में अपने पूर्वजों के गांव में रहता है। पिता कवि और पुरोहित है। आशावादी और स्वप्नदर्शी है। जिसके जीवन के प्रति अव्यावहारिक दृष्टिकोण के कारण पूरा परिवार गरीबी की आग में झुलस रहा है। मां एक व्यावहारिक महिला है जो परिवार की जरूरतों के लिए संघर्ष कर रही है। बेटी दुर्गा को पड़ोसियों के बाग में आम चुराने का चस्का है। बेटा अपू बेहद बुद्धिमान है तथा मां, बहन और बूढ़ी बुआ का लाड़ला है। बुआ का मां से रोज झगड़ा होता है, पर दुर्गा से बहुत प्यार मिलता है।

फिल्म के शुरूआत में अपू का जन्म होता है। पिता पत्नी को खजाने में मिली नई नौकरी का जिक्र करता है और दु:खों के खत्म होने का स्वप्न देखता है। छः वर्ष बीत जाते है। रात को पिता लौटता है और दूर गांव में होने वाले दीक्षा समारोह में जाने को कहता है, जहां से उसे अच्छा रुपया मिलने की आशा होती है। वह गांव के लिए चल पड़ता है। बाद में उसका एक पोस्टकार्ड आता है जिसमें समारोह के न हो पाने और शहर जाकर धन कमाने की बात लिखी होती है। कई महीने बीत जाते है, मां गरीबी के खिलाफ एक हारी हुई लड़ाई लड़ती रहती है। फिर वह एक दूसरा पोस्टकार्ड भेजता है जिसमें पर्याप्त धन कमाने और लौटने की खुशखबरी होती है। पर अब बहुत देर हो चुकी होती है। इस बीच दुर्गा का देहांत हो चुका होता है। पिता को यथार्थ का आभास होता है और वह अपने परिवार को बनारस ले जाने का निश्चय कर लेता है। परिवार नवजीवन के लिए पुराने घर छोड़कर चल देता है।

PATHER PANCHALI

Bengali/Black & White/1955

Director-Screenplay : Satyajit Ray, **Camera** : Subrata Mitra, **Music** : Ravi Shankar, **Players** : Karuna Bannerjee, Kanu Banerjee, Chunibala, Pinaki Sen Gupta, Uma Das Gupta

Adapted from a famous Bengali novel of the same name, the film tells the story of a poor Brahmin family living in its ancestral village in Bengal sometime in the twenties. The father, poet and priest, optimist and dreamer, whose unrealistic approach to life keeps his family in humiliating poverty; the mother, a practical woman who copes with the everyday struggle of the family; Durga, their daughter, whose one bad habit is stealing mangoes from the neighbour's orchard; Apu, their son, an intelligent boy greatly indulged by mother and sister; and aged aunt, who lives in a hut in the garden, constantly bickering with the mother, but deeply loved by Durga.

Early in the film Apu is born. The father tells his wife of his new job in the Treasury and his hopes for the future. Six years pass. The father returns with his overdue wages and speaks of a remunerative offer to officiate at an initiation ceremony in a distant village. He sets out for the village, but soon sends a postcard to say that the ceremony has been cancelled, that he is going to the city and will not return until he has earned enough money to repair the house. Months pass.... The mother fights a losing battle against poverty second postcard from her husband brings good news; he has earned the necessary money and is returning. But too late. Durga has meanwhile died. The father at last faces reality and decides to take his family to Benaras. The family leaves its ancestral home for a new life ....

काबुलीवाला

बंगला/श्वेत-श्याम/1956

निर्देशन-पटकथा : तपन सिन्हा, **संगीतकार** : रवि शंकर, **कैमरा** : अनिल बंद्योपाध्याय, **ध्वनि** : मणि बसु, **कला** : सुनिति मिश्रा, **संपादन** : सुबोध राय, **कलाकार** : छबि बिश्वास, टिंकु ठाकुर, राधा मोहन भट्टाचार्य, मंजू डे, जीवन बसु, जौहर राय, काली बनर्जी

यह फिल्म इसी नाम की टैगोर की प्रमुख लघु कहानी पर आधारित एक पठान रहमत शेख की कहानी से संबंध रखती है जिसने अफगानिस्तान में अपना घर छोड़ दिया तथा कलकत्ता में रोजी रोटी की तलाश में घूमता है।

उसका यह मोह उसे बच्चों, विशेष रूप से छोटी बच्चियों के नजदीक ले जाता है, जिनमें वह अपनी बेटी के चित्र देखता है। एक दिन वह एक लेखक की पांच वर्षीय पुत्री मिनी से मिलता है तथा उससे दोस्ती कर लेता है। यह मित्रता उस समय तक जारी रहती है जब रहमत अपने मकान मालिक को उसकी नमकहरामी के आरोप पर आक्रमण करने के लिए कैद कर लिया जाता है। अपनी सजा पूरी करने के बाद वह मेवे का एक पैकेट लेता है और मिनी से मिलने चला जाता है। प्रारंभ में उसका पिता उससे मिलने के लिए मना कर देता है किन्तु जब उसे यह महसूस होता है कि फेरीवाले को उसकी बेटी से विशेष स्नेह है वह उससे मिलने के लिए कहता है। रहमत ठगा सा उसे देखता रहा जाता है... उस बच्ची को जिसे वह जानता था अब एक सुन्दर युवती में बदल जाती है। वह दुल्हन का कपड़ा पहने होती है क्योंकि उस दिन उसकी शादी होने वाली होती है। मिनी को सामने खड़ा देख काबुलीवाले को याद आता है कि उसकी अपनी बेटी शादी की आयु की हो गई है। उसकी आंखों में आँसू आ जाते हैं। मिनी का पिता उसे शादी के अवसर पर घर की सजावट के उद्देश्य से रखे हुए पैसे उसे देता है ताकि वह अपने देश वापस लौट सके।

KABULIWALA

Bengali/Black & White/1956

Director-Screenplay : Tapan Sinha, **Music** : Ravi Shankar, **Camera** : Anil Bandhopadhyay, **Sound** : Mani Basu, **Art** : Suniti Mitra, **Editor** : Subodh Roy, **Players** : Chhabi Biswas, Tinku Thakur, Radha Mohan Bhattacharya, Manju Dey, Jivan Basu, Johar Roy, Kali Banerjee.

Based on a famous Tagore short story of the same name, the film relates the tale of Rahmat Sheikh, a Pathan, who has left his home in Afghanistan and wandered to Calcutta in search of a living.

His longing for affection makes him see the company of children, particularly little girls, in whom he looks for a resemblance to his own daughter. One day, he meets Mini, the five year old daughter of a writer and makes friends with her. The friendship continues until Rahmat is sent to prison for assaulting his landlord on the grounds that the latter had accused him of ingratitude.

After completing his prison term, he collects a packet of dry fruit and goes to call on Mini. At first her father refuses to let him meet her but when he realises that the peddlar has a genuine affection for his daughter, he asks her to see him. Rahmat is stunned ... the child he once knew has grown up into a beautiful girl. Dressed as a bride--for it is her wedding day. She stands before her old friend, the Kabuliwala, reminding him that his own daughter, Rabea, must also have grown up to be of marriageable age Tears well up in his eyes. Mini's father presents him the money kept aside for the adornment of the house at the time of the wedding ceremony and asks him to use it to return to his child.

दो आंखें बारह हाथ

हिन्दी/श्वेत-श्याम/1957

निर्देशक : वी. शान्ताराम, **पटकथा** : जी.डी. मदगुलकर, **संगीतकार** : वसन्त देसाई, **कैमरा** : जी. बाला कृष्णा, **ध्वनि** : मंगेश देसाई, **कलाकार** : वी. शांताराम, संध्या, उल्हास, बी.एम. व्यास, बाबुराव पेंढारकर

आदिनाथ एक आदर्शवादी जेलर है। वह कत्ल के छः कैदियों को चुनता है और निर्णय लेता है कि उन्हें कानूनपालक नागरिक बना देगा। वह उन्हें एक बन्जर व टूटे फूटे स्थान अजादनगर ले जाता हैं तथा वह महान प्रयोग करता है। कैदी खेतों की जुताई करते हैं तथा उपज को बाजार भाव से कम दाम पर बेचते हैं। गांव का जमीदार इसका बुरा मानता है। वह आदिनाथ के काम खराब करने के उद्देश्य से कैदियों को शराब पिलाकर पिटाई कराता है। किन्तु आदिनाथ द्वारा किया गया प्रयोग पूरा हो चुका होता है। घोर आपत्ति के समय भी वे जुर्म की कोई प्रवृत्ति प्रकट नहीं करते हैं। आदिनाथ अपने प्रयोग में सफल होता है तथा जेल अधीक्षक उनसे प्रसन्न हो जाता है। किन्तु दुष्टता के अंतिम अध्याय में नाथुभाई एक क्रुद्ध बैल को छोड़ देता है जो आदिनाथ को मार डालता है। अंत में कैदी जो सुधर चुके हैं छोड़ दिये जाते हैं किन्तु वे आजादनगर से जाने के लिए तैयार नहीं होते।

DO ANKHEN BARAH HAATH

Hindi/Black & White/1957

Director : V. Shantaram, **Screenplay** : G.D. Madgulkar, **Music** : Vasant Desai, **Camera** : G. Balakrishna, **Sound** : Mangesh Desai, **Players** : V. Shantaram, Sandhya, Ulhas, B.M. Vyas, Baburao Pendharkar.

Adinath is an idealistic jailor. He selects six convicts held for murder and decides to turn them into law-abiding citizens. He takes them to a barren and dilapidated place, Azad Nagar, and starts his great experiment. The convicts cultivate the land and sell the produce in the market at lower than the prevalent rate. The village landlord resents this and, seeking to undo Adinath's work, gets the convicts drunk and then beaten. But the conversion brought about in them by Adinath is complete. They no longer show any criminal tendencies even in the face of grave provocation. Adinath succeeds in his experiment and the Jail Superintendent is pleased .But in a final act of villainy, Nathubhai lets loose an angry bull which tramples Adinath to death. Nevertheless, the convicts, having been reformed, are set free. But they are in no mood to leave Azad Nagar.

सागर संगमे

बंगला/श्वेत-श्याम/1958

निर्देशन-पटकथा : देवकी कुमार बोस, **संगीतकार** : आर.सी. बोरल, **कैमरा** : विमल मुखोपाध्याय, **कला** : सौरेन सेन, **ध्वनि** : सत्येन चट्टो, **संपादन** : गोवर्धन अधिकारी, **कलाकार** : भारती दास, मंजु अधिकारी, नितेश मुखोपाध्याय, जौहर राय, तुलसी लहरी, सैलेन मुखर्जी

एक समुद्र ब्राह्मण परिवार की एक अकेली बची हुई सदस्या एक निःसंतान 40 वर्षीय विधवा है। वह अपने गांव में मान और मर्यादा के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हुए एक रुढ़िवादी हिन्दु की घरेलू परम्पराओं तथा पवित्रता को बनाये रखने का प्रयास करती है।

वह एक पवित्र स्थान "सागर संगमे" जहां गंगा नदी समुद्र में गिरती है, की यात्रा के लिए निकलती है। नाव में वह वेश्याओं से टकराती है। इस भीड़ की एक अपरिपक्व लड़की की बदतमीजी से वह परेशान हो जाती है और उसके मन में पवित्रता एवं अपवित्रता के बीच का संघर्ष जो ब्राह्मणों के मन को सदैव परेशान करता है है, प्रारंभ हो जाता है। अंधेरे में एक बड़ी नाव से उसकी नाव टकरा जाती है। यात्रियों में बहुत कम यात्री बच पाते हैं। विधवा और वह लड़की अपना जीवन बचाने के लिए पानी में संघर्ष करते हैं तथा एक ही तख्ते को पकड़े रहते हैं। विधवा के पहले धक्के में ही लड़की तख्ते से दूर होकर डूबने लगती है। सभी वर्जना के बावजूद उसका हृदय दया से भर जाता है तथा वह स्वयं बच्ची को बचाने के लिए पानी में चली जाती है। साथ साथ दोनों किनारे पहुंचते हैं। उस लड़की, बताशी का उस बचाने वाले के अतिरिक्त कोई नहीं होता। दूसरी ओर विधवा भय से पीछे हटती है और निर्णय लेती है कि अपने गन्तव्य पर पहुंच कर वह उसे पुलिस के हवाले कर देगी। किन्तु दोनों में स्नेह हो जाता है जिससे विधवा स्वयं को दूर रखने का असफल प्रयास करती है। अन्त में वह उस अनाथ लड़की को अपने मृत पति का नाम प्रदान कर देती है तथा दावा करती है कि बताशी उसकी अपनी संतान है तो एक टूटे हुए हृदय की मरम्मत में बहुत देर हो चुकी होती है। गरीब लड़की इस मानसिक झटके एवं परेशानी के कारण वह निमोनिया से पीड़ित हो जाती है और अपनी उस जीत के क्षणों में वह इस निर्दयी संसार से कूच कर जाती है।

SAGAR SANGAME

Bengali/Black & White/1958

Direction-Screenplay : Debaki Kumar Bose, **Music** : R.C. Boral, **Camera** : Bimal Mukhopadhyay, **Art** : Souren Sen, **Sound** : Satyen Chatto, **Editor** : Govardhan Adhikari, **Players** : Bharti Das, Manju Adhikari, Nitesh Mukhopadhyay, Johar Roy, Tulsi Lahiri, Sailen Mukherjee.

The sole surviving member of a well-to-do Brahmin family is a childless widow of 40. She lives a dignified life in her village, trying her utmost to preserve the traditions and sanctity of a conservative Hindu household

She sets out on a pilgrimage to "Sagar Sangame", the confluence of the River Ganges and the sea. On the boat, she encounters a crowd of harlots. The misbehaviour of a precocious girl from this crowd upsets her and brings to the fore the conflict between purity and impurity which has always troubled Brahmin minds.

The boat is smashed in a collision with a bigger vessel in the darkness. Very few of the passengers survive. The widow and the girl struggle for their lives in the water, holding on to the same floating plank. The first impulse of the widow is to dislodge the girl who sinks into the water with a cry. But her heart is touched despite all taboos and she plunges into the waters herself to save the child. Together they reach the shore. Batashi, the girl now has no one but her rescuer to turn to The latter recoils in horror, deciding to make her over to the police on reaching their destination But gradually a link of kinship is forged between the two, from which the widow tries desperately but unsuccessfully to free herself. When at last she succumbs and lends her dead husband's name to the orphaned girl, claiming Batashi as her own daughter, it is too late to mend a broken heart. The poor girl, suffering from great mental shock and disappointment, has already fallen a victim to pneumonia and at the supreme moment of her triumph-- love asserting itself over blind prejudice-- she makes her exit from the cruel world.

अपूर संसार

बंगला/श्वेत-श्याम/1959

निर्देशन-पटकथा : सत्यजित रे, **संगीतकार** : रवि शंकर, **कैमरा** : सुब्रत मित्रा, **कला** : बंसी चन्द्र गुप्त, **संपादन** : दुलाल दत्ता, **कलाकार** : सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर

रे की यह फिल्म बहुत ही गहन और गंभीर है। नवयुवक अपू की शादी होती है। वह एक उपन्यास लिखता है। इसी बीच प्रसव के दौरान उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है। यह दुखपूर्ण घटना उसे विक्षिप्त कर देती है। उसकी यह त्रासदी उसके कागजों में उतर आती है। वह एक पहाड़ी में घूमता रहता है और संगीत अवर्णनीय अवसाद को उत्पन्न करता है। अपू गृह-विरह से भरकर अपने यौवन के सुखों को याद करता रहता है। अंतत: अपने छोटे बेटे के साथ वह फिर जुड़ता है, जो उसे पुन: जीवेषणा और आनंद प्रदान करता है। जिससे वह भविष्य के प्रति सजग होता है। इस प्रकार नाटकत्रयी उस बिंदू पर आकर समाप्त होती है, जहां अपू अपने बच्चे को ले जा रहा होता है, जैसे बचपन में उसकी दादी मां उसे पालने में ले जाती थी।

APUR SANSAR

Bengali/Black & White/1959

Direction-Screenplay : Satyajit Ray, **Music** : Ravi Shankar, **Camera** : Subrata Mitra, **Art** : Bansi Chandragupta, **Editor** : Dulal Dutta, **Players** : Soumitra Chatterjee, Sharmila Tagore.

In many ways, this is the most mature and profoundly felt film of the Ray trilogy. Apu is a young man who marries, writes his first novel and then loses his wife in childbirth This grievous blow sends him staggering into the wilderness, as it were. His tragedy is summed up in one magnificent image as he casts away the pages of his novel. They flutter down the hillside in the luminous dawn and the music evokes an indescribable melancholy. Apu is filled with nostalgia for the happiness of his youth When at last he is reunited with his little son it gives him a new vitality and joy with which to face the future. Thus the wheel has turned full circle, and the trilogy closes with Apu carrying his child, just as it began with his grandmother rocking him in his cradle.

अनुराधा

हिन्दी/श्वेत-श्याम/1960

निर्देशन : ऋषिकेश मुखर्जी, **पटकथा** : सचिन भौमिक, डी.एन. मुखर्जी, समीर चौधरी, **संगीतकार** : रवि शंकर, **छायांकन** : सचिन शंकर, **कैमरा** : जयवंत आर. पाथरे, **कला** : अजित बनर्जी, **ध्वनि** : जार्ज ड'क्रूज, **संपादन** : दास धर्मादे, **कलाकार** : बलराज साहनी, लीला नायडू, अभि भट्टाचार्य, नजीर हुसैन, हरि शिव दासनी, असित सेन, मुकरी, राशिद खां, रानु

एक धनी जमींदार की प्रतिभाशाली पुत्री अनुराधा, दीपक के विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा देती है तथा एक आदर्शवादी डॉ. निर्मल से विवाह कर लेती है। दस वर्ष बीत जाते हैं। उनके एक पुत्री होती है। निर्मल अपनी पत्नी के अकेलेपन के बारे में सोचे बिना जनता की सेवा में लगा रहता है। सड़क पर हुई एक कार दुर्घटना के कारण दीपक बेहोशी की स्थिति में निर्मल के घर आता है। जब वह ठीक हो जाता है तो अनुराधा में आये परिवर्तन को देखकर चौंक जाता है।

अनुराधा निर्मल को छोड़ देने का निर्णय लेती है, निर्मल को धक्का लगता है किन्तु वह उसके रास्ते में नहीं आना चाहता। जाने से पहले एक शाम को कर्नल त्रिवेदी जो एक प्रसिद्ध सर्जन है, रात्रि भोज के लिए आते हैं। वह एक स्थापित प्रयोगशाला एवं अनुराधा के धूल से भरे वीणा की विषमता पर टिप्पणी करता है। वह मेजबान की दशा और अपने स्वयं के जीवन की समानता को देखता है। अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठा के कारण उसने अपनी पत्नी की उपेक्षा की है। वह इस युगल द्वारा लिये गये दु:खदायी समाधान को रोकने का प्रयास करता है। वह बताता है कि किस प्रकार अनुराधा की श्रद्धा एवं त्याग से निर्मल एक डाक्टर के रूप में सफल हुआ है, वह सोचने के लिए उन दोनों को छोड़ देता है तथा उनके जीवन में पुन: खुशियां वापस लाता है।

ANURADHA

Hindi/Black & White/1960

Director: Hrishikesh Mukherjee, **Screenplay** : Sachin Bhowmic, B.N. Mukherjee, Samir Chowdhary, **Music** : Ravi Shankar , **Choereography** : Sachin Shanker, **Camera** : Jaywant R. Pathere, **Art:** Ajit Bannerjee, **Sound** : George D'Cruz , **Editor** : Das Dharmade, **Players** : Balraj Sahni, Leela Naidu, Abhi Bhattacharya, Nazir Hussein, Hari Shivdasani, Asit Sen, Mukri, Rashid Khan, Ranu.

The talented daughter of a rich Zamindar, Anuradha rejects a marriage proposal from Deepak and marries the idealistic Dr. Nirmal, who works in a village with no medical facilities. Ten years pass. They have a daughter. Nirmal continues to work for the people, unmindful of the loneliless of his wife. A wayside car accident brings Deepak in an unconscious state to Nirmal's house. When he recovers, he is shocked to see the change that has come over Anuradha

Anuradha decides to leave Nirmal. Nirmal is hurt but does not wish to stand in her way. The evening before she leaves, however, Col. Trivedi, a famous Surgeon, comes to dinner He remarks at the contrast between the well-maintained laboratory and Anuradha's dust-laden veena. He notices a parallel between the predicament of his hosts and that of his own life. His ardent devotion to his profession had led him to neglect his wife. He decides to prevent the tragic solution chosen by the couple. By pointing out how Anuradha's devotion has contributed towards the success of Nirmal as a doctor he sets them thinking and brings happiness back into their home.

भगिनी निवेदिता

बंगला/श्वेत-श्याम/1961

निर्देशन : बिजय बासु, **पटकथा :** नृपेन्द्र कृष्ण चट्टोपाध्याय, **संगीतकार :** अनिल बागची, **कैमरा :** बिजय घोष, **कला :** सत्येन रॉय चौधरी, **संपादन :** बिश्वनाथ मित्रा, **कलाकार :** अरुंधती मुखोपाध्याय, चन्द्र आदित्य, शोभा सेन, असित बरन, राबिन मजुमदार, अवरेगदास

मार्गरेट इ. नोबल का जन्म आयरिश प्रतिनिधि के घर में हुआ। अपने अस्वस्थ पिता से वह असंख्य प्रश्न पूछती थी। परंतु उनके पिता बहुत समय तक जीवित नहीं रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके मन में और अधिक प्रश्नों और जिज्ञासाओं का जन्म हुआ।

लंदन की एक सभा में एक भारतीय संयासी भारत की अजेय शक्ति पर प्रवचन कर रहे थे। उन्होंने बताया कि भारत ने विश्वभर को तथा इंग्लैंड जैसे देश को भी ज्ञान का प्रकाश दिया है। प्रवचन के पश्चात् उन्होंने श्रोताओं को अपनी शंकाओं को पूछने के लिए कहा। मार्गरेट नोबल ने भी अपनी जिज्ञासाओं के बारे में विस्तृत रूप में बातचीत की। ये उनकी स्वामी विवेकानंद से पहली भेंट थी। कुछ वर्ष बीत गए। मार्गरेट भारत आई और उन्हें नया नाम विदेवित मिला।

अपने गुरू के सान्निध्य में उन्होंने भारत के लोगों की सेवा आरंभ की। कोई भी कार्य उनके लिए घृणास्पद नहीं रहा। वह गलियां साफ करती, अनपढ़ों को पढ़ाती और बीमारों की सेवा करती। एक दिन वह अपने गुरू से मिलने बेलूर पहुंची। गुरूजी उपवास पर थे किंतु अपने अनुयायियों को स्वयं भोजन करा रहे थे। निवेदिता ने गुरूजी को ध्यानपूर्व देखा। उस दिन गुरू ने ईसा मसीह पर प्रवचन दिया और कहा कि वे अपने शिष्यों के हाथ पैर धुलाते हैं। निवेदिता को ध्यान आता है कि वह ईसा का अंतिम दिन था। वह बेलूर से भरे मन लौटती हैं और समझ जाती है कि यह गुरू जी से उनकी आखिरी भेंट थी।

गुरू के अवसान से उनके उत्साह में जरा भी कमी नहीं आई। स्थानीय लोगों के पूर्वाग्रहों के बावजूद भगिनी निवेदिता अपने जीवन पर्यन्त समर्पण भाव से जन-साधारण की सेवा करती रही।

BHAGINI NIVEDITA

Bengali/Black & White/1961

Director : Bijoy Basu, **Screenplay** : Nripendra Krishna Chattopadhyay, **Music** : Anil Bakchi, **Camera** : Bijoy Ghosh, **Art** : Satyen Roy Chowdhury, **Editor** : Biswanath Mitra, **Players** : Arundhati Mukhopadhyay, Chandra Aditya, Shoba Sen, Asit Baran, Rabin Majumdar, Awaresh Das.

Margaret E. Noble, born into an Irish Vicar's home, has interminable questions to put to her ailing father. But her father does not live long, His death raises new and graver questions in her mind.\At a London meeting, an Indian Sanyasi is speaking about the invincible strength of India and the lessons it has to teach even to a progressive country like England. After his address, he invites questions from the audience. Margaret Noble is unconvinced. The ensuing discussion makes her wiser; she realises what price the people of other towns and countries have had to pay to make London and England great. Those were the days of the first encounter between the great Sanyasi, Swami Vivekananda, and his disciple.

Some years pass. Margaret reaches India as the disciple of the great Guru. She gets her new name, "Nivedita."

Under the fatherly care of her Guru, she leads a life of service to the people of India. No job is humiliating for her. She cleans streets, teaches the uneducated and nurses the sick.

The day comes when she goes to see her Guru at Belur; the Guru is fasting but will feed his disciple personally. She looks enquiringly at him. He speaks about Jesus washing the feet and hands of his disciples. Nivedita remembers that it was the last day of the life of Christ. She returns from Belur with a heavy heart, realising that she has had her last meeting with her Guru.\

The death of her Guru does not diminish her zeal for service to the people. Undaunted by the difficulties caused by local prejudice, Sister Nivedita continues her life of dedicated service.

दादा ठाकुर

बंगला/श्वेत-श्याम/1962

निर्देशन : सुधीर मुखर्जी, **निर्माता** : एस.एल. जालान, **पटकथा** : नृपेन्द्र कृष्ण चट्टोपाध्याय, **संगीतकार** : हेमंत मुखर्जी, **कैमरा** : बिभूति चक्रवर्ती, **कला** : सत्येन रॉय चौधरी, **ध्वनि** : सत्येन चटर्जी, **संपादन** : वैद्यनाथ चटर्जी, **कलाकार** : छवि बिस्वास, बिश्वजीत चटर्जी, भानु चटर्जी, तरूण कुमार, स्नेहलता चौधरी, छायादेवी

शरतचन्द्र पण्डित, जिन्हें बंगाली आदरपूर्वक दादा ठाकुर कह कर बुलाते है, ने अपना मुद्रण व्यवसाय का कार्य एक पुरानी जीर्ण-शीर्ण, हाथ से चलने वाली प्रेस से आरंभ किया। उनकी पत्नी उनकी एक मात्र सहायिका थी। बाद में भूमिगत क्रांतिकारी नलिनीकांत सरकार ने भी उनका सहयोग किया। दादा ठाकुर ने सामाजिक बुराईयों के खिलाफ अपना जिहाद छेड़ा। उन्होंने जंगीपुर संघबाद का प्रकाशन किया, जिसके संपादक,, कम्पोजिटर और प्रूफ शोधक वे स्वयं ही थे। उन्होंने स्थानीय जमींदारों और निगम के आयुक्त के खिलाफ भी लोगों को तैयार किया।

दादा ठाकुर ने युवा जमींदार दर्पणनारायण से ग्रामीण युवती लता की रक्षा भी की। कुछ समय बाद, उन्होंने उसे नलिनीकांत सरकार के नेतृत्व में चलने वाले क्रांतिकारी दल में सदस्य बनवा दिया। बाद में दर्पणनारायण को भी उन्होंने सुधार दिया। दर्पण नारायण राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष के कारण गिरफ्तार हुए।

निगम आयुक्त के पद पर एक नेक दुकानदार को जिताने के लिए मदद करने की वजह से वे जमींदार और शासन के कोप का शिकार होते हैं। उन्हें 'जंगीपुर संघबाद' बंद करना पड़ता है, पर शीघ्र ही वे 'बिदुषक' का प्रकाशन करने लगते है। कलकत्ता की सड़कों पर पत्रिका बेचते हुए उन्हें पुलिस पकड़ लेती है। परंतु नेताजी सुभाषचंद्र बोस उन्हें बचा लेते है।

राष्ट्रीय ध्वज को फहराने की कोशिश में दर्पणनारायण को गोली लगती है और वह लता की बाहों में दम तोड़ देता है, जो उसके इस पवित्र मिशन में साथ आ गई थी। पहली बार, दादा ठाकुर की आंखों में उसकी मृत्यु पर आंसू आते हैं। वे दुख में भरकर प्रार्थना करते है कि बंगाल की भूमि पर ऐसे वीरपुत्र और पैदा हो क्योंकि अंत में जीत इन्हीं लोगों के प्रयास से प्राप्त होगी।

DADA THAKUR

Bengali/Black & White/1962

Director : Sudhir Mukherjee, **Producer : S.L. Jalan, Screenplay** : Nripendra Krishna Chattopadhyay, **Music** :Hemanta Mukherjee, **Camera** : Bhibhuti Chakraborthy, **Art** : Satyen Roy Chowdhury, **Sound** : Satyen Chatterjee, **Editor** : Vaidyanath Chatterjee , **Players** : Chhabi Biswas, Biswajit Chatterjee, Bhanu Chatterjee, Tarun Kumar, Snehlata Chowdhury, Chhayadevi.

Sarat Chandra Pandit, whom Bengal respectfully calls Dada Thakur, starts his career in the printing business with an old, worn-out hand press. His wife is his only assistant. Later, Nalini Kanta Sarkar, an underground revolutionary, joins him.

Dada Thakur campaigns against social evils. He starts publishing 'Jangipur Sangbad' of which he is not only the editor but also the compositor and proof-reader. He champions the cause of the people against the local zamindar and the municipal commissioner

Dada Thakur saves Lata, a village maiden, from young Zamindar Darpanarayan and recruits her to the ranks of freedom fighters working under Nalini Kanta Sarkar. Before long, Darpanarayan is also reformed by the Dada and he courts arrest in the cause of national independence.

Dada Thakur invites the wrath of the Zamindar and the ruling clique for helping a humble shop-keeper to win the post of municipal commissioner. He has to close down the 'Jangipur Sangbad' but soon starts another publication 'Bidusak'. While hawking the journal in the streets of Calcutta, he is charged by the police but rescued by Netaji Subash Chandra Bose.

Darpanarayan is shot while trying to hoist the national flag and falls dead into the bleeding arms of Lata who had joined him in the holy mission. His death brings tears in the eyes of Dada Thakur for the first time. He prays in agony that the soil of Bengal may produce more such devoted young fighters, for ultimate victory can be achieved only through their efforts.

शहर और सपना

हिन्दी/श्वेत-श्याम/1963

निर्देशन-पटकथा : के.ए. अब्बास, **संगीतकार** : जे.बी. कौशिक, **कैमरा** : रामचन्द्र, **कला** : अजित बनर्जी, **ध्वनि** : मद्धनु कार्तिक, **संपादन** : मोहन राठौर, **कलाकार** : अनवर हुसैन, डेविड, मनमोहन कृष्ण, नाना पलसीकर, दिलीप राज, सुरेखा

एक युवा किसान नौकरी करने पंजाब से बम्बई आता है, तो उसे यह मालूम होता है कि यहां आवास प्रमुख समस्या है। शहर में घूमने के दौरान वह फुटपाथ पर रहने वालों के साथ साथ शहर के बदमाशों से टकरा जाता है। उन बेघर लोगों में वह अपने पसंद की एक लड़की से मिलता है और उससे शादी कर लेता है, किन्तु मुख्य समस्या वैसी ही बनी रहती है - यह समस्या गरीबी की नहीं है बल्कि अपर्याप्त आवासीय सुविधाओं की समस्या है।

SHEHAR AUR SAPNA

Hindi/Black & White/1963

Director-Screenplay : K.A. Abbas, **Music** : J.B. Kaushik, **Camera** : Ramachandra, **Art** : Ajit Bannerjee, **Sound** : Minoo Katrak, **Editor** :Mohan Rathod , **Players** : Anwar Husain, David, Manmohan Krishna, Nana Palsikar, Dileep Raj, Surekha.

A young peasant comes to Bombay from the Punjab in quest of a job, and finds that housing is his major problem. In the course of his adventures in the city, he encounters a cross-section of Bombay's pavement dwellers, as well as some of the less savoury underworld characters in the city. Among these homeless ones he finds a girl of his choice and marries her, but the main problem remains unsolved--the problem not so much of poverty, as of inadequate housing facilities.

चारूलता

बंगला/श्वेत-श्याम/1962

निर्देशन-पटकथा-संगीत : सत्यजित रे, **कैमरा :** सुब्रत मित्रा, **कलाकार :** माधवी मुखर्जी, सौमित्र चटर्जी, शैलेन मुखर्जी

भूपति दत्त एक धनी तथा बुद्धिमान युवक है। उसने खुद को एक साप्ताहिक में तल्लीन कर लिया है। जिसका संपादन तथा प्रकाशन वह स्वयं करता है। इससे उसकी पत्नी चारू भी उपेक्षित रह जाती है। इसके लिए, वह चारू के भाई उमापाद तथा उसकी पत्नी को भी बुला लेता है। पर चारू के एकाकी जीवन में इससे कोई बदलाव नहीं आ पाता।

इसी बीच भूपति का चचेरा भाई अमाल छुट्टियों में वहां आता है। धीरे-धीरे, चारू और अमाल समान रुचियों के कारण एक-दूसरे के समीप आ जाते हैं। इसी दौरान उमापाद भूपति के रुपये लेकर भाग जाता है। भूपति को गहरा सदमा लगता है और वह अमाल को यह सब बताकर अपना दिल हल्का करता है। अमाल को भी भूपति के प्रति किए अपने विश्वासघात को अहसास होता है और वह भी भूपति का घर चुपचाप छोड़कर चला जाता है। चारू इस सदमें से बड़ी मुश्किल से उबर पाती है किंतु अमाल के भेजे पत्र से वह ज्वाला फिर भड़क उठती है। अतीत के सुख उसको झकझोर देते है। भूपति की स्थिति निरीह और दयनीय हो जाती है। वह घर छोड़कर चला जाता है।

भूपति फिर लौटकर आता है। इस बार वह और समझदार हो जाता है। वह जान चुका होता है कि पत्नी के पर पुरुष के साथ सम्बन्ध होने में वह स्वयं भी बहुत जिम्मेदार है।

CHARULATA

Bengali/Black & White/1964

Direction-Screenplay-Music : Satyajit Ray, **Camera** : Subrata Mitra, **Players** : Madhabi Mukerjee, Soumitra Chatterjee, Sailen Mukherjee.

A wealthy young intellectual, Bhupati Dutt, is so deeply engrossed in the political weekly he edits and publishes that he neglects his sensitive wife Charu. Yet, he invites her brother Umapada and his wife to stay. But their presence does not alter Charu's sense of loneliness.

Now, Amal, a cousin of Bhupati, arrives on a long vacation Gradually, Amal and Charu find they are given to common artistic pursuits and are naturally drawn to each other Meanwhile, Umapada makes away with Bhupati's money This dismays Bhupati. While he unburdens himself before his cousin, Amal is seized of the guilt of his own faithlessness and quietly walks out of Bhupati's home. Charu bears the separation with a supreme effort and for a while calm seems to have returned to her. But the storm breaks out again with full fury as a letter from Amal brings back memories of the past. Bhupati reels under the impact and rushes out ol the house.

Bhupati returns a wiser man, realising his own share in arousing his wife's interest in a man other than himself.

चेम्मीन

मलयालम/रंगीन/1965

निर्देशन : रामू करिअत, **निर्माता :** बाबू, **संगीत :** सलिल चौधरी, **कैमरा :** मारकस बार्टले, यू. राजगोपाल, **संपादन :** ऋषिकेश मुखर्जी, के.डी. जार्ज, **कलाकार :** सत्यन, शीला, मधु, कोट्टारकरा श्रीधरन नायर, एस.पी. पिल्लै, अदूर भवानी

चेम्बनकुंजु एक महत्वाकांक्षी मछुआरा है। वह युवा मुस्लिम व्यापारी पेरीकुट्टी की सहायता से इस शर्त पर जाल और नाव खरीदता है कि वह जो भी मछलियां इस नाव के द्वारा पकड़ेगा, उसे ही बेचेगा।

चेम्बन कुंजु की बेटी करूतम्मा और पेरीकुट्टी एक दूसरे से प्रेम करते हैं। करूतम्मा की माँ उसे अपनी परंपरा का निर्वाह तथा समुद्र तट की पवित्रता बनाए रखने का स्मरण कराती है। अपनी परंपराओं की खातिर करुतम्मा अपने प्यार को भुलाकर अपनी इच्छा से एक अनाथ पालानी से विवाह कर लेती है। अपने पिता द्वारा रोके जाने और मां के अचानक बीमार पड़ जाने की परवाह किए बिना वह अपने पति के साथ उसके गांव चली जाती है। अपनी बेटी के इस व्यवहार से क्षुब्ध चेम्बन कुंजु उससे सारे नाते तोड़ लेता है। पेरीकुट्टी दिवालिया हो जाता है।

इस दौरान करूतम्मा अपनी सुखी संसार बनाने में लग जाती है। पर उसके पुराने प्रेम की खबर गांव वालों को अच्छी प्रकार है। पालानी के दोस्त उसका बहिष्कार करते हैं। परंतु वह अपनी पत्नी का विश्वास करता है और अकेला ही मछली पकड़ने जाता है।

संयोग से एक चांदनी रात में करूतम्मा और पेरीकुट्टी की भेंट हो जाती है। पुराना प्रेम पुनर्जीवित हो उठता है और वे आलिंगनबद्ध हो जाते है। पालानी दूर सागर में गया हुआ है। समुद्र देवी कतलम्मा भयंकर प्रतिशोध लेती है। पालानी जल में निमग्न हो जाता है। करूतम्मा और पेरीकुट्टी भी डूब जाते हैं और उनकी लाश अगले दिन किनारे पर मिलती है।

CHEMMEEN

Malayalam/Colour/1965

Director : Ramu Kariat, **Producer :** Babu, **Camera :** Marcus Bartley, U. Rajagopal, **Music :** Salil Chowdhury, **Editor :** Hrishikesh Mukherjee, K.D. George, **Players :** Sathyan, Sheela, Madhu, Kottarakkara Sreedharan Nair, S.P. Pillai, Adoor Bhavani.

Chembankunju, an ambitious fisherman, purchases a boat and net with the help of Pareekutty, a young Muslim trader, with the promise that the fish hauled by the boat will be sold to him.

Chembankunju's pretty daughter, Karuthamma, and Pareekutty love each other. Karuthamma's mother reminds her daughter about her duty to tradition and the need to maintin the sanctity of the sea coast. Acknowledging tremendous hold of tradition, Karuthamma forsakes her love and willingly marries Palani, an orphan boy. She accompanies her husband to his village despite her mother's sudden illness and her father's request to stay back. Infuriated by his daughter's attitude, Chembankunju disowns Karuthamma. He also breaks his contract with Pareekutty, refusing to sell his haul to him and driving him to bankruptcy.

Meanwhile, Karuthamma endeavours to build a happy home. But her old love for Pareekutty becomes known among the people in the village. Palani's friends ostracise him. However, he believes in his wife and decides to fish alone.

By coincidence, Karuthamma and Pareekutty meet on a moonlit night. Their love is revived and they join themselves in an ecstatic embrace while Palani is away on the rough seas. The code is defied. Katalamma, the goddess of the sea, wreaks a terrible vengeance. The sea devours Palani. Karuthamma and Pareekutty also drown and their bodies are lound washed ashore the next day.

तीसरी कसम

हिन्दी/श्वेत-श्याम/1966

निर्देशन : बासु भट्टाचार्य, **सहायक निर्देशक :** बासु चटर्जी, **पटकथा :** बी.आर. इशारा, **संगीत :** शंकर जयकिशन, **नृत्य संयोजन :** लच्छू महाराज, **कैमरा :** सुब्रत मित्रा, **कला :** देश मुखर्जी, **ध्वनि :** अलाउद्दीन, **संपादन :** जी.जी. मयकर, **कलाकार :** राज कपूर, वहीदा रहमान, दुलारी, इफ्तेखार, असित सेन

हीरामन एक सरल हृदय का बैलगाड़ी चालक काला बाजारी का सामान नेपाल ले जाते हुए पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है। इससे वह पहली प्रतिज्ञा करता है कि अपनी बैलगाड़ी पर तस्करी के सामान को कभी नहीं ले जायेगा। वह दूसरी प्रतिज्ञा उस समय करता है जब विभिन्न प्रकार के बोझ के कारण उसकी दुर्घटना हो जाती है। वह कसम खाता है कि अपनी बैलगाड़ी पर कभी बांस नहीं ले जायेगा। किन्तु तीसरी कसम की पृष्ठभूमि वास्तव में इसे और रुचिकर बना देती है। एक दिन हीरामन अपनी बैलगाड़ी पर एक सुन्दर नौटंकी की कलाकार हीराबाई को बिठा लेता है। युवा महिला की सुन्दरता से प्रभावित होकर, हीरामन उसका सम्मान करता है और सभी गुजरने वालो से छिपा कर ले जाता है। हीराबाई भी इस साधारण व्यक्ति के करीब आ जाती है। जैसे ही हीराबाई दलाल बिरजू के माध्यम से एक जमींदार से मिलती है जो उसे सम्मोहित करता है, उसका हृदय विद्रोह करने लगता है। सरल हृदय का बैलगाड़ी वाला हीरामन उससे बहुत आग्रह करता है कि वह उस व्यवसाय को छोड़ दे किन्तु नकारात्मक उत्तर पाकर अचम्भे में पड़ जाता है। यह क्षण उसके जीवन का सबसे दुविधापूर्ण क्षण है। उसे तीसरी और अंतिम कसम खानी पड़ती है कि अब वह किसी 'नौटंकी बाई' को अपनी बैलगाड़ी में कभी भी नहीं बिठाएगा।

TEESRI KASAM

Hindi/Black & White/1966

Director: Basu Bhattacharya, **Assistant Director :** Basu Chatterjee, **Screenplay :** B.R. Ishara, **Music :** Shankar Jaikishen, **Choreography :** Lachhu Maharaj, **Camera :** Subrata Mitra, **Art :** Desh Mukherjee, **Sound :** Allauddin, **Editor :** G.G. Mayekar. **Players:** Raj Kapoor, Waheeda Rehman, Dulari, Iftekar, Asit Sen.

Hiraman, a simple-hearted bullock cart driver is hauled up by the police while carrying black market goods to Nepal. This makes him take his first vow--that he will never carry contraband goods on his cart. His second vow is taken when he meets with an accident because of a different type of load. He swears he will never again carry bamboos on his cart. But it is the background of the third vow that is really of interest. One day Hiraman gives a lift to a beautiful nautanki actress called Hlirabai. Captivated by the charm of the young woman, Hiraman treats her like a treasure, hiding her away from every prying eye. Hirabai also feels drawn to the simple soul. Her heart revolts against the wily ways of a Zamindar, who became infatuated with her as soon as he was introduced to her by the agent, Birju. The simple hearted bullock cart driver, Hiraman, appeals to her "goodness" to leave her profession, but is stunned to get a negative reply. Now comes the most disillusioned moment in his life. He has to take his third and last vow--that he will never give a ride to a "Nautanki Bai" in his cart again.

हाटे-बाजारे

बंगला/श्वेत-श्याम/1967

निर्देशन-पटकथा-संगीत : तपन सिन्हा, **कैमरा :** दिनेश गुप्ता, **कला :** कार्तिक बोस, **ध्वनि :** सुबोध राय, **संपादन :** सुबोध राय, **कलाकार :** अशोक कुमार, वैजयंती माला, अजितेश बनर्जी, समिति विश्वास, छाया देवी, भानु चटर्जी, रुद्र प्रसाद सेनगुप्ता, गीता डे, अजय गांगुली

मानवता के प्रेमी और जीवन के प्रति सद्भाव रखने वाले सिविल सर्जन सदाशिव मुखर्जी समाज के विभिन्न वर्गों के लिए निकल पड़ते है। शीघ्र ही वे गरीबों और शोषितों के मसीहा बन जाते है। वह समर्पण, सहानुभूति और प्रेम से उस तबके का उत्थान करना चाहता है।

यह भावना अन्य व्यवसायों में संलग्न व्यक्तियों को भी प्रेरित करती है। जिसमें सब्जी बेचने वाली चिपली भी होती है। दोनों एक दूसरे के समीप आते है।

अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद डाक्टर अपने काम को छोड़ देता है और गांव-गांव घूमकर सेवा-सुश्रूषा करता है। वह पूरी तरह पीड़ित जनता के लिए समर्पित हो जाता है। उसकी कार्य में सेवानिवृत जज नुतु बानु, ड्राईवर अली और नर्स चिपली मदद करती है।

इसी दौरान, एक व्यवसायी का पुत्र लक्ष्मण चिपली पर मोहित हो जाता है और उसके पीछे लग जाता है। एक दिन वह उसके साथ बलात्कार करता है और उसको बचाने आए सदाशिव की हत्या कर देता है।

HATEY BAZAREY

Bengali/Black & White/1967

Direction-Screenplay-Music : Tapan Sinha, **Camera :** Dinesh Gupta, **Art :** Kartik Bose, **Editor :** Subodh Roy, **Players :** Ashok Kumar, Vyjayanthimala, Ajitesh Bannerjee, Samiti Biswas, Chhaya Devi, Bhannu Chatterjee, Rudraprasad Sengupta, Geeta Dey, Ajay Ganguli.

Love of humaniy and a deep regard for life draw out civil surgeon, Sadasiva Mukherjee to wider spheres of society and make him popular with the poor and the oppressed. He aspires to lift them up from their habitual darkness to a world of light through devotion, sympathy annd love.

The same spirit inspires several persons of different callings and professions including Chhipli, a widow who sells vegetables. Both are drawn towards each other.

After the death of his beloved wife the doctor gives up his job and moves from village to village in a mobile medical van, dedicating himself completely to the service of suffering humanity. He is helped by a retired judge, Nutu Banu, driver Ali and Chhipli, who becomes the nurse.

Meanwhile, Laxman, the son of a business magnate, is attracted to Chhipli and after following her about in vain, he eventually rapes her and kills Sadasiva who comes to her rescue.

गूपी गाईन बाघा बाईन

बंगाली/श्वेत-श्याम/1968

निर्देशन-पटकथा-संगीत : सत्यजीत रे, **निर्माता** : नेपाल दत्त तथा अशीम दत्त, **कैमरा** : सुमेंधु राय, **कलाकार** : तपन चटर्जी, रबी घोष

एक गरीब पंसारी के लडके गूपी की मोटी आवाज होते हुए भी गाने का बड़ा चाव था। कुछ कपटी व्यक्ति उसे राजा के सामने गाने के लिए मना लेते है जिसके परिणामस्वरूप उसे गांव से बाहर निकाले जाने के आदेश दे दिये जाते हैं। एक गधे पर बैठा हुआ वह जंगल में पहुंचता है, जहां वह एक ढोलक बजाने वाले बाघा नामक व्यक्ति से मिलता है जिसका गूपी जैसा ही हाल हुआ था। अंधेरा होने पर दोनों मित्र डर को दूर करने के लिये गाना और ढोल बजाना शुरू कर देते है। उनका संगीत भूत-प्रेतों के एक दल को आकर्षित करता है और भूत-प्रेतों का राजा गूपी और बाघा को तीन वरदान देता है अर्थात उनके मांगने पर उन्हें भोजन और वस्त्र मिल जायेगा, जादू के जूते के जोड़े को पहनने पर वे जहां जाना चाहेंगे, जा सकेंगे तथा गाकर और ढोल बजा कर सभी को मन्त्रमुग्ध कर सकेंगे। गूपी और बाघा शुन्दी चले जाते हैं। वहां का राजा उन्हें अपने राज दरबार में संगीतज्ञ नियुक्त कर देता है। हल्ला का राजा जो शुन्दी का बहुत वर्षों से खोया हुआ भाई था, अपने दुष्ट प्रधान मंत्री द्वारा कठपुतली की तरह नचाया जाता था। उसके बहकाने पर वह शुन्दी के राजा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर देता है। गूपी और बाघा जासूस बन कर हल्ला जाते हैं और युद्ध रोकने की कोशिश करते हैं। वहां वे बन्दी बना लिये जाते है। परन्तु वे किसी तरह जेल से भाग जाते हैं। लौटते हुए वे हल्ला की सेना से मिलते हैं जो उनके गीत तथा ढोलक सुन कर निस्तब्ध हो जाती है। वे हल्ला के राजा को बन्दी बना लेते है और अपने जादू से उसे शुंदी ले जाते हैं। इस प्रकार दोनों भाईयों का पुनर्मिलन होता है तथा गूपी और बाघा का उन दोनों राजाओं की सुन्दर कन्याओं से विवाह हो जाता है।

GOOPY GYNE BAGHA BYNE

Berngali/Black & White/1968

Direction-Screenplay-Music : Satyajit Ray, **Camera** : Soumendu Roy, **Players** : Tapan Chatterjee, Rabi Ghosh,

Goopy, son of a poor grocer, desires to become a singer, although he has a poor voice. Some crafty elders persuade him to sing for the king which results in his being driven out of the village. Riding on a donkey, he reaches a forest where he meets Bagha, a drummer, who had earlier met the same face as Goopy. As evening comes, the two friends start singing and drumming to keep themselves from being afraid. Their music attracts the ghosts of the forest .The King of ghosts grants Goopy and Bagha three wishes i e they will get food and clothes for the asking; they will travel to any place they like by wearing a pair of magic slippers and they will hold everybody spell-bound by their singing and drumming. Goopy and Bagha go to Shundi where they are appointed court musicians by the King .The King of Halla, who is the long lost twin brother of the King of Shundi, is under the control of his villainous Prime Minister. On his instigation he declares war on the King of Shundi. Goopy and Bagha try to stop the war by going to Halla as spies but they are captured and put into jail .They somehow manage to escape. On the way they meet Halla's army, which is frozen to immobility on hearing their singing and drumming . They capture the King of Halla and transport him by magic to Shundi. The twin brothers are thus reunited and Goopy and Bagha win the fair daughters of the two kings in marriage.

भुवन शोम

हिन्दी/श्वेत-श्याम/1969

निर्देशन-पटकथा : मृणाल सेन, **संगीत** : विजय राघव राव, **कैमरा** : के.के. महाजन, **कलाकार** : सुहासिनी मुले, उत्पल दत्त, साधु मेहर, शेखर चटर्जी

भुवन शोम रेलवे का एक वरिष्ठ अधिकारी है तथा उसके स्वभाव में अहम बहुत है। वह एक अधेड विधुर है जिसका जीवन उसके कार्यालय के अन्दर ही सीमित है। कठोर अनुशासन के लिए वह अपने पुत्र को ड्यूटी के प्रति लापरवाही के कारण दण्डित करता है। एक दिन वह अपने दैनिक जीवन से छुटकारा पाने के लिए और गुजरात के पिछड़े क्षेत्रों को देखने के लिए एक दिन की छुट्टी लेने का निर्णय करता है। किन्तु जाने से पहले वह एक युवा टिकट परिचालक के विरुद्ध एक मामला तैयार करता है जिसको वह समझता है कि बेइमान एवं भ्रष्ट है।

शिष्टाचार एवं भ्रष्टाचार के विषय में अपने विचार एवं व्यवहार नियत करके अपरिचित स्थान पर चला जाता है जहां उसका एक अप्रत्याशित घटना से सामना होता है। वास्तिवकता में इससे उसको क्या शिक्षा मिलती है यह दर्शकों को निश्चित करना है। देहात में उसकी यात्रा तथा रेतीले मैदान उसकी आंखें एक वृहद्ध संसार के खोल देती हैं जिसका अनुभव उसने पहले नहीं किया था। आम जनता से उसकी मुलाकात उनके दृढ़निश्चय, जीवन की चुनौतियों के उत्तर देने की क्षमता, जीवन का आनन्द लेने की क्षमता दिखलाती है। यह उनके चारों ओर गरीबी होने तथा एक दूसरे से सम्बन्ध में संचार की अविनाशी क्षमता के बावजूद व्याप्त है।

भुवन शोम उस युवा टिकट परिचालक, जिसे वह रिश्वत लेने के लिए सजा देना चाहता है, की पत्नी गौरी से मिलता है तथा मामले की जड़ तक पहुंचता है। वह उसे बताती है कि "मेरा पति लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है। वह उनकी सहायता करता है तथा बदले में वे उसे पैसे देते हैं। क्या यह रिश्वत है?" एक साधारण ग्रामीण महिला के एक साधारण प्रश्न उस कठोर व्यक्ति के हृदय को चीर देते हैं। संभवत: गौरी के विचारों को स्वीकार करते हुए उस युवा टिकट परिचालक का स्थानान्तरण एक बड़े रेलवे स्टेशन पर कर देता है जहां "अधिक यात्री तथा अधिक धन" की सम्भावना है।

BHUVAN SHOME

Hindi/Black & White/1969

Direction/Screenplay ; Mrinal Sen, **Music** : Vijay Raghava Rao, **Camera** : K.K. Mahajan, **Players** : Suhasini Mulay, Utpal Dutt, Sadhu Meher, Shekhar Chatterjee.

A senior railway officer Bhuvan Shome, represents a super-ego cast in the classical mould. He is a lonely againg widower whose life does not extend beyond the confitnes of his office. A martinet, he has sacked his own son for dereliction of duty. One day he decides to disengage himself temporarily from the monotonous routine of his dreary existence by availing himself of a holiday in remote Gujarat. But before leaving, Bhuvan Shome processes a case against a young ticket collector whom he regards as dishonest and corrupt.

With fixed ideas and attitudes about virtue and vice, Bhuvan Shome ventures into the unknown and encounters the unexpected. To what extent this confrontation with reality reforms or educates him is a matter for viewers to surmise. However, in the film, his travels through the countryside and the vast stretches of sand open his eyes to a wider and more varied world than he had known or experienced before. His encounter with the common people reveals to him their tenacity of purpose, their ability to respond to life and its challenges in full measure, their capacity to enjoy themselves, despite the sordidness and hazards around them and, above all, their in inestructible ease in communicating with each other.

Bhuvan Shome's encounter with truth at the grass roots is his confrontation with Gouri, the wife of the young ticket collector vhom he wants to punish for taking bribes. She tells him, "My husband is kind to people. He helps them and they offer him money out of gratitude. Is that bribery?" A simple query from a simple village belle pierces the hard core of the man. Perhaps accepting Gouri's point of view, Bhuvan Shome transfers the young ticket collector to a bigger railway station with prospects of "more passengers, more money".

संस्कार

कन्नड़/श्वेत-श्याम/1970

निर्देशन : टी. पट्टाभी रामा रेड्डी, **पटकथा :** गिरीश कर्नाड, **संगीत :** राजीव तारानाथ, **कैमरा :** टॉम कावन, **कलाकार :** गिरीश कर्नाड, स्नेहलता रेड्डी, पी. लंकेश, बी.आर. जयराम

आधी शताब्दी पूर्व, दक्षिण मैसूर के एक गांव में युवा प्राणेशाचार्य के शिष्यत्व में माधव ब्राह्मणों का एक दल रहता था जो परंपराओं से गहरे रूप से जुड़ा हुआ था। उन्हीं में से एक नारायणप्पा ने विद्रोह कर व्यक्तिचारी जीवन शुरू कर दिया और खुले तौर पर नियम-कानून तोड़ दिये। एक दिन अचानक वह मर जाता है। उसकी रखैल गांव के बुर्जुगों के पास आकर उसका अंतिम संस्कार करने के लिए कहती है। किंतु गांव वाले पशो पेश में पड़ जाते हैं कि ऐसे व्यक्ति का अंतिम संस्कार करना धर्मसंगत नहीं है।

इसी बीच मृतक की रखैल से उनका सामना और मुश्किलें पैदा कर देता है। उसके सौन्दर्य के आगे वे निरीह हो जाते है। वे गहरे धर्मसंकट में पड़ जाते है।

पश्चाताप से भरकर वह मार्गदर्शन के लिए गांव छोड़ देते है। रास्ते में उनकी भेंट निम्न जाति वर्ग के व्यक्ति पट्टा से होती है। वह उनका मार्गदर्शक, परामर्शदाता, मनोविशेषज्ञ और पथ-प्रदर्शक सिद्ध होता है। दोनों गांव के एक मेले में जाते है। पट्टा उन्हें गांव के पास वाले मंदिर में ब्राह्मणों हेतु निशुल्क भोजन के लिए भेज देता है। तब प्रवेशाचार्य नहीं है। वह अपनी कमजोरी को समझ जाता है कि उसने नारायणप्पा के साथ न्याय नहीं किया। वह वापस उसके संस्कार के लिए गांव पहुंच जाता है।

SAMSKARA

Kanada/Black & White/1970

Director : T. Pattabhi Ramareddy, **Screenplay :** Girish Karnad, **Music :** Rajiv Taranath, **Camera :** Tom Cowan, **Players :** Girish Karnad, Snehlatha Reddy, P. Lankesh, B.R. Jayarama

In a village in southern Mysore, half a century ago, a group of Madhava Brahmins, led by young Praneshacharya lead a life strictly bound by tradition. One of them, Narayanappa, becomes a rebel, living a dissolute life and breaking the tenets of Brahminism openly. He drinks, keeps a mistress and pays little heed to temple worship. Suddenly he dies. His mistress, Chandri comes to ask the Brahmins to perform his funeral rites. Can he be cremated ? The village elders discuss the matter but evade performing the last rites. The scrupulous Praneshacharya, approached by the village elders, examines the Shastras for guidance. His task is made more difficult by an encounter with the dead man's mistress to whose charms he surrenders himself passionately and helplessly . Praneshacharya is in a quandary. Filled with remorse, he sets out to seek guidance. On his way, he meets Putta, a low caste hail-fellow-well-met who acts as his mentor, his guardian angel, his tempter and his psychiatrist. The two of them visit a fair. Putta urges him to eat the free meal offered to Brahmins at the nearby temple, where a festival is in progress. When Praneshacharya is eating in a temple which he has no right to enter, he realises that, having fallen prey to his own weaknesses, he cannot judge Narayanappa. He runs back to his village to cremate the dead body .

सीमाबद्ध

बंगला/श्वेत-श्याम/1971

निर्देशन-पटकथा-संगीत : सत्यजित रे, **कैमरा** : सौमेन्दु राय, **कलाकार** : बरुण चन्दा, शर्मिला टैगोर, प्रतिभा चौधरी

पटना में मेधावी शैक्षणिक कैरियर होने के बाद श्यामलेन्दु चटर्जी एक ब्रिटिश व्यावसायिक फर्म में लग जाते है। वह सेल्स मैनेजर के पद पर पहुंच जाते है। कलकत्ता में वे अपनी पत्नी दोलन के साथ एक आलीशान मकान में रहते है। चटर्जी का अब एक ही उद्देश्य है – फर्म में निदेशक का पद प्राप्त करना।

दोलन की छोटी बहन सुदर्शना कलकत्ता अपनी छुट्टियां बिताने आती है। सुदर्शना के दिल में श्यामेलन्दु के प्रति छिपी प्रशंसा का भाव है। यह भाव दोलन के विवाह के समय से ही उसके मन में था। इस प्रवास के दौरान वह और सशक्त हो जाता है। सुदर्शना का आना चटर्जी के लिए भी एक ठंडी हवा के झोंके के समान होता है।

अचानल चटर्जी के व्यावसाय में एक गहरा संकट उत्पन्न हो जाता है। इराक में भेजे जाने वाले माल में अंतिम समय के निरीक्षण के दौरान खराबी पायी जाती है। इससे कम्पनी की प्रतिष्ठा दांव पर लग जाती है। इससे बचने के लिए वह कार्मिक प्रबंधक की सहायता से फैक्टरी में हड़ताल करवा देता है। फैक्टरी में ताले लग जाते है और उन्हें माल को देरी से भेजने का बहाना मिल जाता है। संकट टल जाता है।

अपनी इस चतुराई के लिए वह बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के पद पर पदोन्नत हो जाता है। सभी ओर से उसे बधाइयां प्राप्त होती है किंतु सुदर्शना को इससे गहरा सदमा लगता है।

SIMABADDHA

Benngali/Black & White/1971

Direction/Screenplay/Music : Satyajit Ray, **Camera** : Soumendu Roy, **Players** : Barun Chanda, Sharmila Tagore, Parmita Chowdhury.

After a brilliant academic career in Patna, Shyamalendu Chatterjee joins a British commercial firm, which manufactures fans and lamps. He rises quickly to the position of Sales Manager. Living in a luxurious flat in Calcutta with his wife, Dolan, Chatterjee now looks forward to achieving his ultimate aim of becoming a director of the firm.

Dolan's younger sister Sudarshanna comes to spend a holiday in Calcutta. As a teenager Sudarshana had harboured a secret admiration for Chatterjee when Dolan married him. On this visit, her admiration begins to develop into something more serious. Her feelings are reciprocated by Chatterjee. Sudarshana has come like a breath of fresh air into his routine existence.

Chatterjee suddenly finds himslf in a major business crisis. A consignment of ceiling fans meant for export to Iraq turns out, on final inspection, to be defective. Chatterjee realises that his firm now faces the prospect of a heavy penalty as well as loss of prestige. He takes the only course open to him. With the help of the personnel officer, he instigates a **strike** in the factory which leads to a lockout. This serves as an excuse for the delay in the shipment and the crisis is averted.

Because of his clever handlling of the situation, Chatterjee is promoted to the Board of Directors. He is showered with congratulations from everyone except a deeply disillusioned Sudarshana.

स्वयंवरम्

मलयालम/श्वेत-श्याम/1972

निर्देशन : अदूर गोपालकृष्णन, **निर्माता :** कुलतुर भास्करन नायर, **संगीत :** एम.बी. श्रीनिवासन्, **चलचित्रिकी :** रवि वर्मा, **संपादन :** ए. रमेशन, **कलाकार :** टी. शारदा, मधु, ललिता, शोभा, थिकुरिस्सी, वेनुकुट्टन नायर, अदूर भवानी

विश्वन और सीता एक दूसरे से प्रेम करते है, वे अपने परिवारों से समस्त सम्बन्ध तोड़कर एक नए स्थान पर नया जीवन शुरू करने का संकल्प करते हैं। उनका प्रारम्भिक जीवन सुख्मय है किन्तु शीघ्र ही उनके पास पैसे की कमी हो जाती है। विश्वन अपना उपन्यास नहीं छपवा सकता। उन्हें अपने जेवर बेचने पड़ते है। वे बढ़िया होटल से एक सस्ते होटल में आ जाते हैं और फिर, एक गन्दी बस्ती में एक टूटे फूटे मकान में चले जाते हैं। विश्वन को एक प्राइवेट कालेज में पढ़ाने का काम मिल जाता है। लेकिन यह काम थोड़े ही दिन रहता है। इसके बाद वह एक इमारती लकड़ी की दुकान में क्लर्क हो जाताहै। वह अपनी छोटी सी गृहस्थी शुरू करने का प्रयत्न करता है। उनके पड़ोसी अच्छे और बुरे दोनों किस्म के हैं। और सीता के सपने बिखरने लगते हैं, बेरोज़गारी के कारण उनके सामने पेट भरने की समस्या आने लगती है। कठिनाइयां अनेक हैं लेकिन वे साहस और धैर्य से उनका सामना करते हैं।

तभी अचानक विश्वन का स्वर्गवास हो जाता है। सीता और उसका बच्चा निराश्रित हो जाते है।

SWAYAMVARAM

Malayalam/Black & White/1972

Direction-Screenplay : Adoor Gopalakrishnnan, **Music** : M.B. Sreenivasan, **Camera** : M.C. Ravi Varma, **Editor:** A. Ramesan, **Players:** Sharada, Madhu, Tikurisi Sukumaran Nair, Adoor Bhavani, Gopi, Lalitha

At dusk the bus enters the city. Among the passengers are Viswam and Sita. If they look a little conspicuous, it may be because they are eloped lovers. Sita's fascination with the new sights and sounds thal greet her seems to be boundless. Viswam's delight is tinged with uncertainty over the life that awaits them.

A few days, bright with lovers' endearments, pass by in a hotel room. Slowly, Viswam begins to grow thoughtful, "how long are we to continue like this?"

They move into a cheaper hotel. A small room with stained walls, rickety windows and filthy mattresses. There are brawls in the neighbourhood and drunkards with lecherous grins hanging about the hotel.

They move again, this time to a small, dingy house. Their assorted neighbours: Janaki Amma, the petty rice seller, who is friendly and helpful; Vasu, the lewd smuggler; coquettish Kalyani the prostitute, who is friendly with Vasu.

Viswam goes to the editor of a popular weekly to offer him his novel for serialisation. There, he listens to writers debating about form and content and other undoubtedly weighty matters. It makes him feel small and insignificant. The editor turns down the novel as "too sentimental".

Sita is pregnant. Viswam manages to get a humble job as a petty clerk in a saw mill. But the problems keep piling up. Viswam senses defeat.

The new-born arrives. Janaki Amma is by the side of Sita. Viswam spends night after night, nursing Kanakka Pillai, a fellow worker who takes ill. The disease seizes Viswam, too

Sita lying on the floor; the bed beside her empty .

निर्मलयम्

मलयालम/श्वेत-श्याम/1973

निर्देशन : एम.टी. वासुदेवन नायर, **संगीत :** के. राघवन, **कैमरा :** रामचन्द्र बाबू, **कलाकार :** पी.जे. एन्टनी, कवियूर पोन्नम्मा, रवि मेनन, सुकुमारन सुमित्रा, शंकर डी, टेवीदासन

प्राचीन मंदिर नष्ट होता जाता है और ग्रामीणों का ध्यान उस पर से लगभग हट चुका है। ट्रस्टी भी अब उसमें सुधार के लिए विशेष दिलचस्पी नहीं लेते। हालांकि अब भी मंदिर के पुरोहित को विश्वास है कि एक दिन वही वैभव के दिन लौटेंगे। ट्रस्टी अपने रसोइये के बेटे को नए पुरोहित के रूप में भेज देता है। इस नवयुवक की इस नए कार्य में कोई रुचि नहीं है क्योंकि वह किसी परीक्षा की तैयारी कर रहा है। किंतु वह ट्रस्टी को मना नहीं कर पाता।

आम्मिनी पुरोहित की किशोरी है। वह नवयुवक की प्रतिदिन के कार्यों में सहायता करती है। धीरे-धीरे उन दोनों के बीच मित्रता हो जाती है।

पुरोहित का पुत्र अप्पू गांव में आवारागर्दी में मस्त रहता है। एक दिन वह अपने पिता की पवित्र तलवार और मंदिर की घंटियां बेचने की कोशिश करता है किंतु असफल रहता है। उसी दिन वह गांव से भाग जाता है। गांव में चेचक फैल जाती है।

ग्रामीण इसे देवी का अभिशाप मानते हैं। मंदिर के अनुचर देवी को प्रसन्न करने के लिए बहुत बड़े समारोह का आयोजन करते हैं।

पुरोहित का स्वप्न साकार होने का दिन आ जाता है। मंदिर की क्रियाएं आरम्भ हो गई है। वह पारंपरिक नृत्य करने की सोचता है। वह पवित्र तलवार, घंटियां और नुपुर लेने घर जाता है। बंद दरवाजे के पीछे वह अपनी पत्नी को स्थानीय दुकानदार के साथ बिस्तर में देख लेता है।

तुम मेरे बच्चों की माता? वह चिल्लाता है। हां! वह बिफर जाती है, "जब मेरे बच्चे भूखे थे तो क्या तुम्हारी देवी ने चावल लाने के लिए धन दिया था।"

पुरोहित उस दिन बहुत प्रचण्डता से नृत्य करता है। उन्माद में वह रक्त बहने की परवाह भी नहीं करता। भक्त उस दिन उसकी प्रचण्डता से स्तब्ध रह जाते है।

NIRMALAYAM

Malayalam/Black & White/1973

Director : M.T. Vasudevan Nair, **Music :** K. Raghavan, **Camera :** Ramachandra Babu **Players :** P.J. Antony, Kaviyoor Ponnamma, Ravi Menon, Sukumaran, Sumitra, Sankaradi, Devidasan.

The ancient temple is in ruins and the villagers rarely bring offerings to the deity. The trustees have no interest in maintaining it in its pristine glory. The life-long Oracle of the temple, however, firmly believes that the day will come when the temple will regain its ancient splendour.

Appu the son of the Oracle, spends most of his time in undesirable company in the village..Appu leaves the village the same day. Small pox breaks out in the village. The villagers take it as a curse from the goddess. The temple servant decides to organise the annual ritual in grand style to propitiate her.

The day of glory the Oracle had dreamt of has dawned .The temple festivities begin. It is time for him to start the ritual dance. He goes home to collect his sacred sword, bells and anklets. There, behind locked doors, he finds a local merchant in bed with his wife

"You, mother of my children ?" he screams. "Yes ! ' she is defiant.

The Oracle's dance begins. In a trance, he draws blood, as is usual. The devotees are struck by the intensity of his performance that day.

कोरस

बंगला/श्वेत-श्याम/1974

निर्देशन-पटकथा : मृणाल सेन, **निर्माता** : मृणाल सेन प्रोडक्शन्स, **संगीत** : आनन्द शंकर, **कलाकार** : उत्पल दत्त, गीता सेन, शेखर चटर्जी, सुभेन्दु चटर्जी, रवि घोष, दिलीप राय

कहानी एक परी-कथा के रूप में शुरू होती है। एक भाट परदे पर आता है और गाता है।

इस शक्तिशाली देवताओं का कार्यालय एक किले में है। सबसे भीतर के कमरे में पृथ्वी का महान नेता, उनका अध्यक्ष बैठा है। वह अपने सलाहकारों से घिरा हुआ है। सब लोग मिल कर करोड़ों लोगों के कल्याण के उपाय खोज रहे है। वह भविष्य वाणी करता है कि उम्मीदवारों की संख्या कामों की कई हजार गुनी होगी। पर हजारों आदमियों को खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए। इन्हें अर्जी के फार्म दे दो।

दूर से और पास से, चारों कोनों से हजारों लोग किले के फाटक के सामने लाइन बना कर खड़े हो जाते है। सहस्त्रों लोग, सहस्त्रों चेहरे, सहस्त्रों समस्याएं। समाचार-कैमरा लगातार उनके फोटो खींचता जाता है और पत्र संवाददाता उनकी आकांक्षाओं और निराशाओं भरे वाक्य टेप करते जाते हैं। ये सब कहानियां इस बात की द्योतक हैं कि जीवित रहने के लिए कितना दबाव सहना पड़ता है, कितना भयानक संघर्ष करना पड़ता है जिससे लोगों के चेहरे मुरझा जाते हैं, उन पर तनाव आ जाता है और निराशा छा जाती है।

भगवान को दया आ जाती है। सौ कामों के लिए 30,000 प्रार्थी उपस्थित है।

एक नया खतरा पैदा हो जाता है। वे कहते हैं कि अब हम जल्दी ही हमलावरों के रूप में आएंगे। ये नारे दावानल की तरह गांवों से शहरों की ओर, औद्योगिक क्षेत्रों की ओर फैल जाते हैं।

CHORUS

Bengali/Black & White/1974

Director : Mrinal Sen, **Screenplay** : Mrinal Sen, Mohit Chattopadhyay, **Music** : Ananda Shankar, **Camera** : K.K. Mahajan, **Players**: Utpal Dutt, Gita Sen, Shekhar Chatterjee, Subendhu Chatterjee, Rabi Ghosh, Dilip Roy.

The story begins like a fairy tale. A bard appears on the screen and sings about a king who wanted to remove Want. His counsellors tell him there cannot be God without Want. God descends upon the Earth when He fancies, to reveal himself as the leader of the land

The office of these mighty Gods is inside a fortress. In its innermost cell, sits the Chairman, the great leader of the land, flanked by his counsellors, devising means for the welfare of the millions. The Chairman is deeply concerned over the problem of Want. He decides to arrange for at least a hundred jobs. The candidates, he prophecies will number a few thousand times the number of jobs. They must not go empty-handed. Give them application forms?

From far and near, people assemble in queues before the gate Or the fortress. The news camera clicks, the tape recorder records fragments of the hopes of the people in the queue. The tape unwinds the story of a boy from a village starving to death. A young man from an industrial base reveals the shattering drudgery of the workers. A young girl living in the city does not hesitate to tell the truth about her family

The Lord of the country is afraid Who are they ? Is it only a fad, a meaningless flutter ? Is it possible that the thirty thousand will soon become quiet? The old clown does his act on the trapeze and recites: A hoax ! Just a hoax! It is not, assert the persecuted, who now grow into millions and turn militant

चोमन दुड़ी

कन्नड़/श्वेत-श्याम/ 1975

निर्माता-अशोक कुमार **निर्देशन**: बी.वी. कारन्त **पटकथा** : डा. शिवराम कारन्त **संगीत** : एस. रामचन्द्र **पात्र** : वासुदेव राव कु. पद्मा कुम्टा, जयराजन, सुन्दर राजन, नागेन्द्र, नागराज, शंकर भट्ट, रोहिदास कादरी

चोमन दुड़ी 'चोमा'और 'दुड़ी'(डफली)की कहानी है। यह कहानी धर्मपरायण विनीत अछूत चोमर के इर्द-गिर्द घूमती है। ''सुख शान्ति दुःख रूपी नाटक में यदकाकदा आने वाले प्रसंग मात्र है'' यह बात चोमा के जीवन पर पूरी तरह से लागू होती है। उसकी हार्दिक इच्छा है कि उसके पास जमीन का एक अपना टुकड़ा हो। लेकिन इसका केवल इसलिए विरोध किया जाता है क्योंकि चोमा अछूत है और रिवाज इस बात की अनुमति नहीं देता कि अछूतों के पास अपनी जमीन हो। चोमा की परेशानियां इस कारण और बढ़ जाती है क्योंकि उसके अपने लोग उसे छोड़ देते हैं। उसके दोनों पुत्र- चनिया और नीला अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। उसका तीसरा पुत्र गुरुवा अपने परम्परागत आदर्शों को छोड़कर एक ईसाई की पुत्री मेरी के प्रेम में फंस कर घर से भाग जाता है। उसकी वेदना और बढ़ जाती है जब वह पाता है कि उसकी पुत्री-बेल्ली, इस्टेट क्लर्क मानवेल्ला से प्रेम करती है।

चोमा निराश हो जाता है। वह हल के टुकड़े-टुकड़े करके उसे जला देता है, वह अपनी कुटिया में प्रवेश करता है, किवाड़ बन्द कर देता है और दुड़ी (डफली) अपने अन्तिम शरण स्थल- पर झपटता है और बड़े जोर से उसे बजाने लगता है। वह अचानक दम तोड़ देता है मानो वह इसी तरह अचानक जाने की तैयारी कर रहा था। लेकिन दुड़ी का पीटना अभी भी...अभी भी.... अभी भी सुनाई दे रहा है....।

CHOMANA DUDI

Kannada/Black & White/1975

Direction/Music ; B. V. Karanth, **Screenplay** : Dr. Shivarama Karanth, **Camera** : S. Ramachandra, **Players** : Vasudeva Rao, Padma Kumpte, Jayarajan, Sunder Rajan, Nagaraja, Nagendra, Shanker Bhat, Rohidas Kadri.

The story of a man who struggles steadily to rent a piece of land, the film centres upon, departs from, but always returns to the life of Choma, a devout, humble untouchable With four sons and a daughter, he also has a pet dog 'Badu', and a 'Dudi' (a small drum) which he plays very often to express happiness, sorrow and other emotions. Choma has reared a pair of bullocks found straying in the forest long ago. His master Sankappaiah is unwilling to rent out a piece of land to him because of the tradition that untouchables should never till the land for themselves.

Choma's first two sons Chaniya and Guruva, toil in a distant Coffee estate to pay off their father's debts. They work in a strange atmosphere, becoming a prey to disease and fatigue. Guruva betrays his ancestral faith and elopes with Mary, daughter of a fellow worker, and becomes a Christian. Chaniya's desolate life proves brief. He returns home only to die. Now it is the daughter, Belli's turn to work in the distant Coffee estate. She goes there accompanied by Neela, her youngest brother. At the estate she is seduced by Manvela, the estate-owner's writer, and later, raped by Mingela, the estate-owner. But her father's debt is paid off. Choma is happy to see his daughter returning home He once again requests Sankappaiah for a piece of land in the vain hope of getting his daughter married and seeing the fulfillment of his only ambition. But Sankappaiah refuses. Within a few days his last son Neela drowns in the nearby river--in the presence of Brahmins who will not touch an untouchable, let alone rescue him Choma's only consolation is his 'Dudi' which he plays to drown his sorrow. Choma sees his daughter making love to Manvela. In a sudden fury, he beats her and pushes her out of the hut.

Returning home late, he closes the door behind him, grabs the 'Dudi' his ultimate refuge, and starts beating it. He dies but the sound of the 'Dudi' can still be heard....

मृगया

हिन्दी//रंगीन/ 1976

निर्माता-के. राजेश्वर राव **निर्देशक**: मृणाल सेन **फोटोग्राफी** : के.के. महाजन **संगीत**: सलिल चौधरी **पात्र**: मिथुन चक्रवर्ती, ममता शंकर

जंगली सूअर गांव पर हमला करते है और फसल को नष्ट कर देते है। जो कुछ शेष रहता है उस पर गिद्ध दृष्टि पड़ती है मनुष्यों-शोषकों की। सैंकड़ों वर्षों से शोषित आदिवासी कुछ नहीं कर सकते। एक गोरा प्रशासक आता है और नवयुवक आदिवासी की ओर आकृष्ट हो जाता है।

इस क्षेत्र के भले लोग एक पथभ्रष्ट बुरे आदमी से डरते और घृणा करते हैं। एक दिन, वह गांव वालों को एक आदिवासी भगोड़े के विरुद्ध लगा देता है। प्रशासक के आदमी और उसके पिछलगुवे दिकु उसकी खोज करते है। लेकिन सारा गांव विद्रोही के पक्ष में खड़ा हो जाता है और पथप्रष्ट, बुरे आदमी को भागना पड़ता है। इसके फौरन बाद ही एक सरकारी खजाना लूट लिया जाता है। प्रशासन विद्रोही आदिवासी नेता को, डाके के लिए पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा करता है और उसे बुरे आदमी द्वारा मार दिया जाता है। रक्त पात की यह व्यवस्था बेरोक-टोक चलती रहती है और दिकुओं का अत्याचार बढ़ता जाता है। फिर एक दिन साहूकार के आदमी शिकारी की युवा पत्नी का अपहरण कर लेते हैं। शिकारी को भयंकर क्रोध आता है और वह अत्याचारी की हत्या कर देता है। शिकारी को हत्या का दोषी घोषित किया जाता है और सूली पर लटका दिया जाता है। जिस समय न्याय की वेदी पर उसकी मौत होती है आदिवासी उगते सूर्य की ओर खड़े होकर हाथ खड़े करके अभिवादन करते है।

MRIGAYYA

Hindi/Colour/1976

Director : Mrinal Sen, **Screenplay :** Mrinal Sen, Mohit Chattopadhyay, **Music :** Salil Chowdhury, **Camera :** K.K. Mahajan, **Players :** Mithun Chakraborty, Mamata Shankar.

Wild pigs invade the village and destroy the crops. Human exploiters lay their hands on the leftovers. The tribals who have been broken by centuries of oppression can do nothing but surrender to the moneylenders and the traders--the Dikus.

A white civil servant meets a young tribal and is drawn to him for his prowess as a hunter. A strange rapport grows between them.

A bad man fallen among the good folk is hated and dreaded by all. He sets the villagers upon a tribal fugitive, hunted down by the administrator's men and his native lackey, the Diku, but the entire village stands by the rebel.

Soon thereafter, a Government treasury is looted. The administration announces a reward for the rebel tribal leader's act or 'banditry' and he is killed. The system of bloodshed continuds unabated.

One day, the wife of the young hunter is kidnapped by the moneylender's men. The hunter rises up in fury and kills the tyrant

The hunter is declared guilty of murder and is hanged to dealh. As he dies, the tribals stand with their arms stretched out towards the rising sun.

घटश्राद्ध

कन्नड़/श्वेत श्याम/2 घन्टे 15 मिनट/1977

निर्माता-सदानन्द सुवर्ण **निर्देशक एवं स्क्रीनप्ले** : गिरीश कासरवल्ली **संगीत:** बी.वी. कारंत **फोटोग्राफी:** एस. रामचन्द्र **पात्र:** नारायण भटट्, मीना कुटप्पा, अजीत कुमार

'घटश्राद्ध अनुष्ठान' का अर्थ है चरित्र हीन ब्राह्मण विधवाओं का जाति से बहिष्कार। वास्तव में यह मृत्यु-संकार है, जो अभियुक्त के जीते जी किया जाता है। यमुनक्का शेष गिरि उदुपा की जो वेदों के विद्वान हैं, और ब्राह्मण बच्चों के लिए स्कूल चलाते हैं, जवान विधवा पुत्री हैं। स्कूल में नए भर्ती हुए नैनी द्वारा बन्द समाज की यह त्रासदी देखी जाती है। यमुनक्का गांव के स्कूल के अध्यापक के सम्पर्क में आती है और उसे गर्भ ठहर जाता है। वह जब आत्महत्या में सफल नहीं होती तो गर्भपात कराने के लिए जाती है। यह बात सारे गांव में फैल जाती है। उदुपा को उर्वरता का प्रतीक मिट्टी का घड़ा तोड़ कर अपनी बेटी को जीते जी मौत की सजा देनी पड़ती है। अंत में जब यमुनक्का सिर मुंडा कर तथा सभी अधिकारों से वंचित गांव के बाहर खड़ी है।

GHATTASHRADHA

Kannada/Black & White/1977

Direction-Screenplay : Girish Kasaravalli, **Music** : B.V. Karanth, **Camera** : S. Ramachandra, **Players** : Meena Kutappa, Ajit Kumar, Narayana Bhat, Ramakrishna, Shanta.

Ghattashradha implies the death rites performed for a living person to mark his excommunication from Brahmin society. Like many other man-made laws existing even today, this practice was far more vicious than the crimes it was meant to punish.

Yamunakka, a child widow, grows up into a system that denies her the right to live a normal life. Her prescribed role in the agrahara does not, however, prevent her from having the emotions and desires natural to her age. She has an affair with the village school teacher, himself an outsider, and gets pregnant. Her lover arranges an abortion for her but, as the midwife crudely goes about her task, he disappears from the village.

The elders discover Yamunakka's secret. Retribution is swift. Her father performs the ghattashradha. Yamunakka is banished wilh self righteous indignation. Yet, a social system that condemns a young widow with such cruelty, accepts as a matter of course the remarriage of her old and widowed father with a girl young enough to be his daughter.

शोध

हिन्दी//रंगीन/ 1979

निर्माता-सीताकांत मिश्रा **निर्देशक**: बिप्लब राय चौधरी **पटकथा** : बिप्लब राय चौधरी/सुनील गंगोपाध्याय **संगीत**: शांतनु महापात्र **कैमरा**: राजन किनागी **ध्वनि**: हिमाद्रि भट्टाचार्य **सम्पादक**: बिप्लब राय चौधरी **कला**: असीम कुमार बोस **कलाकार**:ओमपुरी, सुषमा तेंदुलकर **वित्त**: एफएफसी

सोनागांव अपने नाम के विपरीत एक ऐसा गरीब गांव है जहां भूख है, अंधविश्वास है, जादू है और अनेक प्रेतों और देवताओं से ग्रस्त हैं।

सुरेन्द्र बचपन में ही जमींदार के अत्याचारों से त्रस्त हो गाँव से भाग जाता है और एक आक्रोशपूर्ण नवयुवक बन वापस आता है। उसके पिता की हत्या कर दी गयी थी (हालांकि ग्रामीण जानते है कि उसे भूत ने मार दिया था) और मां किसी भयानक बीमारी से परलोक सिधार जाती है। सुरेन्द्र एक विशेष ध्येय के तहत गांव वापस आता है। वह भूतों के सम्बन्ध में फैले भ्रम की खोज करना चाहता है। पास ही के एक कस्बानुमा शहर में वह काम करता है और सप्ताहांत में गांव आता है। वह युवा लोगों का एक संगठन बनाता है। ये लोग रात को घरों से निकलते हैं और चिल्ला चिल्लाकर लोगों से कहते हैं कि वे भूत खरीदना चाहते हैं। दस रुपये से शुरू होकर यह राशि 100 रूपये प्रति भूत तक पहुंच जाती है। गांव वाले उसे सनकी तो मानते हैं पर धन के लालच में रात में उन्हीं भूतों की खोज में निकल पड़ते हैं जिनसे वो डरा करते थे।

सुरेन्द्र अपने पिता की हत्या का बदला लेने की इच्छा से भरा होता है और इसके लिए वो पूरे गांव को एक सनक में डाल देता है। हालांकि कोई एक भूत भी पकड़ नहीं पाता।

परन्तु भूख और निराशा बढ़ती जाती है और सुरेन्द्र द्वारा की गई सौ रुपये की पेशकश जीवित व्यक्ति को भूत बनने पर विवश कर देती है।

SHODH

Hindi/Colour/1979

Producer: Sitakant Misra, **Direction :** Biplab Ray Chaudhuri, **Screenplay :** Biplab Ray Chaudhuri/Sunil Gangopadhyay, **Music :** Shantanu Mahapatra, **Camera : Rajan Kinagi,** Sound : Himadri Bhattacharya, **Editor :** Biplab Ray Chaudhuri, **Art :** Ashim Kumar Bose, **Players :** Om Puri, Sushama Tendulkar.

"Sonagaon", paradoxically, is the name of an impoverished village where starvation, superstition, magic and thousands of gods and ghosts haunt the unfortunate inhabitants.

Surendra, a former inhabitant of the village, who had run away as a child from the oppression of his employer, the Zamindar, returns as an angry young man. His father had been murdered (the villagers believed he had been killed by a ghost) and his mother had died of a terrible disease. Surendra's return is linked with a mission. He wishes to explore the myth about ghosts. Working in a neighbouring township, he visits the village every week-end. He organises a squad of village youths and goes out at night shouting that he will pay a price to anyone who can sell him a ghost. The offer begins at ten rupees and eventually goes up to a hundred rupees per ghost. The villagers think he is a crank but the possibility of earning money drives them out of their homes at night to search for the ghosts they fear.

Fired by the desire to avenge his father's murder, Surendra titillates the entire village into a frenzy but no one is able to trace a ghost.

But hunger and despair continue to loom large, Surendra's continuing offer of a hundred rupees ultimately leads to a desperate attempt to make a ghost out of a living human being....

आकालेर सन्धाने

बंगला//रंगीन/ 1980

निर्माता-धीरेश कुमार चक्रवर्ती **निर्देशन एव पटकथा**: मृणाल सेन **निर्माण कम्पनी** : डी.के. इंटरप्राइज **कहानी**: अमलेन्दु चक्रवर्ती **छायाचित्र**: के.के. महाजन **कला निर्देशन**: सुरेश चन्द्रा **सम्पादन**: गंगाधर नास्कर **संगीत**: सलिल चौधरी **प्रमुख अभिनय** धृतिमन चटर्जी , स्मिता पाटिल, श्रीला मजुमदार, गीता सेन, दीपांकर डे, राजन तरफदार, राधामोहन भट्टाचार्य

एक फिल्मी दल 1943 में आये अकाल, जिसमें पचास लाख लोग मारे गये, के बारे में फिल्म बनाने एक गांव में पहुंचता है। यह एक मनुष्य द्वारा बनाया गया अकाल था जैसा कि जंग के बाद का दृश्य होता है किन्तु फिल्मी दल इसे लाखों लोगों के भूख से मरने की दु.खद घटना बना देंगे। यह फिल्म, फिल्मी दलों में मिलनसारी, जोखिम, समस्याएं तथा लोकेशन पर फिल्म निर्माण के तनाव के बारे में है। अभिनेता दोहरा जीवन व्यतीत करते हैं तथा ग्रामीण जो कि साधारण और असाधारण दोनों प्रकार के होते हैं, उनका काम रुचि और मनोरंजन के साथ देखते हैं।

लेकिन जैसे जैसे फिल्म आगे बढ़ती है पीछे का मनोरंजन वर्तमान के सामने खड़ा हो जाता है। 1943 तथा 1980 का कठिन सहभाव एक संबंध दर्शाता है जिसमें एक ग्रामीण महिला जिसकी दृष्टि समय के आयाम के साथ साथ भविष्य को भी देखती है। वास्तव में यह एक अकाल के संबंध में जानकारी प्राप्त करने वालों के लिए एक भयवह स्थिति है।

AAKALER SANDHANE

Bengali/Colour/ 1980

Direction & Screenplay : Mrinal Sen/ **Production** : Company D. K. Films Enterprise/Producer Dhiresh Kumar Chakraborty, **Story** : Amalendu Chakraborty, **Photography** : K. K. Mahajan, **Art Direction** : Suresh Chandra, **Editing** : Gangadhar Naskar, **Music** : Salil Chowdhury, **Leading Players** : Dhritiman Chatterjee, Smita Patil, Sreela Majumdar, Gita Sen, Dipankar Dey, Rajen Tarafder, Radhamohan Bhattacharya.

A film crew comes to a village to make a film about a famine which killed five million people in 1943. It was a man-made famine, a side product of the war, and the film crew will create the tragedy of those millions who died of starvation.

The film documents the convivial life amongst the film crew and the hazards, problems and tensions of film-making on location. The actors live a double-life and the villages, both simple and not-so-simple folk, watch their work with wonder and amusement.

But, as the film progresses, the recreated past begins to confront the present. The uneasy co-existence of 1943 and 1980 reveals a bizarre connection, involving a village woman whose visions add a further dimension of time-that of the future. A disturbing situation, indeed, for the famine-seekers.

दख़ल

बंगला/रंगीन/ 1981/दस मिनट

निर्माण-सूचना और सांस्कृतिक कार्यक्रम विभाग पश्चिमी बंगाल सरकार **निर्देशन छायांकन तथा संगीत**: गौतम घोष **पटकथा** : गौतम घोष, पार्थ बनर्जी, सुशील जना की कथा पर आधारित **संपादन**: प्रशांत डे **ध्वनि आलेखन** : ज्योति चटर्जी, डेविड राय चौधरी **कला निर्देशन**: अशोक बोस **कलाकार**:ममता शंकर, राबिन सेन गुप्ता, सुनील मुखर्जी, सजल राय चौधरी, बिमल देब

अंदि एक खानाबदोश आदिवासी जाति की युवती है। वह अपने युवा दिनों में एक विजातीय ग्रामीण जोगा के साथ भाग जाती है। वे बंगाल के दक्षिण में एक तटवर्ती इलाके में रहने लगते है। खारे पानी के कारण वहां के निवासियों को बहुत मेहनत करनी पड़ती है॥ अपने दूसरे बच्चे के संभावित जन्म के पूर्व ही जोगा सांप काटने से मर जाता है। जमींदार इस जमीन को हथियाना चाहता है। वह इसे वैधानिक रूप ले अनुमत 25 एकड़ खास भूति के अंतर्गत मानता है। अंदि की जनजाति के लोगों के आनेपर जमींदार को यह अक्सर प्राप्त होता है। जमींदार का चमचा गोविन्दा उनकी आवभगत कर जनजाति के नेता बाघम्बर गोविन्दा को किसी तरह पटाकर न्यायालय में ले जाकर यह सिद्ध कर देता है कि आदि उनके समूह की है और जोगा से उसका विवाह अवैध है। अत: जोगा के वंशजों का उस जमीन पर कोई हक नहीं है। अंदि इस कुकृत्य के लिए गोविन्दा पर हमला कर लेती है। पश्चातापपूण बाघम्बर उसे अपने साथ चलने को कहता है। पर वह वहीं रुककर आखिरी लड़ाई लड़ना चाहती है।

DAKHAL

Bengali/1981/Colour/72 Mins.

Diretction, Photography & Music : Goutam Ghose/Production, Information and Cultural Aff:airs Department, Government of West Bengal, **Screenplay** : Goutam Ghose, Partha Banerjee based on a story : Sushil Jana, **Editing** : Prasanta Dey, **Audiography** : Jyoti Chatterjee, David Roy Chowdhury , **Art Direction** : Ashok Bose/Leading **Players** : Mamata Shankar, Robin Sen Gupa, Sunil Mukherjee, Sajal Roy Chodhury, Bimal Deb.

Andi came from a nomadic tribe commonly known as crowhunters. She had eloped in her youth with Joga, a peasant, belonging to a different caste. They settled down in the southern part of riverine Bengal, where peasants have to struggle hard to grow crops on land reclaimed from the salt water. When Andi was expecting her second child, her husband died of a snakebite. The local zamindar had eyes on her land and had been trying to grab it as part of his legally permitted 25 acres of khas land. Opportunity to do so comes with the arrival of Andi's tribesmen on the scene. The zamindar's henchman, Govinda, offers them hospitality and wins them over. Govinda tricks Bagambar, the leader of the tribe, to identify Andi in a law court as one of them to prove that her marriage with Joga was illegal and her heirs had no right to Joga's land. Andi, now at bay, attacks Govinda prejudicing her case in the eyes of law. The same night, Govinda's men set fire to her hut. Bagambar, now repentant, offers to take her with them, but Andi stays on to put up a last fight.

चोख

बंगला/रंगीन/ 98मिनट/1982

निर्माण: सूचना और सांस्कृतिक कार्यक्रम विभाग पश्चिम बंगाल सरकार **निर्देशन संगीत और पटकथा** : उत्पलेन्दु चक्रवर्ती **छायांकन:** शक्ति बनर्जी **ध्वनि आलेखन:** ज्योति चटर्जी **सम्पादन:** बुलु घोष **कला निर्देशन** : सुरेश चन्द्र **मुख्य कलाकार:**ओमपुरी, श्रीला मजुमदार, श्यामानंद जालान

मजदूर नेता जदूनाथ साहू को फांसी लगा दी जाती है। फांसी लगने से पूर्व वह अपनी आंखे एक ऐसे कामगार को दे जाता है, जो जन्मांध है। उसकी फांसी के बाद आई बैंक में दूसरा झगड़ा शुरू हो जाता है। कामगार चाहते है कि ये आंखे छेदीलाल को मिलनी चाहिए क्योंकि प्रतीक्षा-सूची में अब उसकी बारी है। जबकि प्रतिष्ठित और प्रभावशाली सेठ जेठिया ये आंखे अपने बेटे के लिए हथियाना चाहता है। इसी दौरान यह भी पता चलता है कि जदूनाथ को फांसी लगवाने के पीछे भी जेठिया का हाथ है।

प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डा. मुखर्जी को जेठिया के बेटे का नेत्र-प्रत्यारोपण का कार्य करना है। उन्हें भनक लगती है कि जेठिया ने कुछ गोलमाल किया है। वे चिकित्सा अधीक्षक से कहते हैं कि वे आपरेशन से पहले कागजात देखना चाहते है। बाद में जेठिया को पता चलता है कि आई बैंक से जिन आंखों को हथियाने में वह लगा हुआ था, जदूनाथ साहू की है। जिसे उसी ने मौत के घाट उतरवाया था। उन आंखों से उसे क्रांति की बू आती है और अब वह उन्हें नष्ट करवा देने में लग जाता है।

इसी दौरान, जादूनाथ की विधवा श्रमिकों के साथ अधीक्षक के समक्ष एक प्रदर्शन करती है वे मांग करते है कि जदूनाथ की आंखे छेदीलाल को दी जाए। सशस्त्र पुलिस उन्हें डंडों से रोकती है। जदूनाथ की विधवा उनकी ओर घूरकर देखती है। पलभर को सब निस्पंद हो जाते है। वह नेत्रहीन छेदीलाल का हाथ पकड़ पहला कदम आगे रखती है।

CHOKH

Bengali/1982/Colour/98 mins.

Direction, Music and Screenplay : Utpalendu Chakraborty **Production :** Deptt. of Information and Cultural Affairs, Govt. Of West Bengal **Photography** : Shakti Banerjee **Audiography** : Jyoti Chatterjee Editing Bulu Ghosh Art **Direction** Suresh Chandra **Leading Players** Om Puri, Sreela Mazumdar, Shyamanand Jalan.

Jadunath Sahu, a labour leader, is hanged. Before his execution he leaves instructions that his eyes should be given to a worker who has never seen the world. A class conflict erupts after his execution over the fate of his eyes stored in the Eye Bank. Jethia, a powerful and influential business magnate, uses his influence to acquire the eyes for his son. On the other hand the workers want the eyes to be given to Chhedilal, a blind worker, whose name is first in the list of those waiting for eyes. It become evident that Jethia was responsible for the events that finally led to Jadunath's execution.

Dr. Mukherjee, a popular opthalmologist, who is entrusted with the operation for cornea grafting on Jethia's son, learns the manipulations of Jethia. He tells the medical superintendent that he must see the papers before he operates. Jethia later learns that the eyes he has been trying to acquire illegally from the Eye Bank for his son belong to Jadunath, the aggressive worker in his factory, whom he had driven to death. He cannot bear the idea of the eyes surviving, for the eyes contain the fighting spirit of the workers. He again uses his influence to destroy them.

Meanwhile workers led by Jadunath's widow hold a demonstration before the superintendent and demand that Jadunath's eyes should go to Chhedilal. They are obstructed by the police armed with shields and batons. Jadunath's widow turns around and looks at the demonstrators. For a few tense moments nobody moves. She holds the blind Chhedilal's hand and takes the first step forward.

आदि शंकराचार्य

संस्कृत/रंगीन/170 मिनट/1983

निर्देशन-पटकथा : जी.वी. अय्यर, **निर्माण** : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, **संगीत** : एम. बालकृष्ण मुरली, **छायांकन** : मधु अम्बट, **ध्वनि** : रामनाथन, **संपादन** : वी.आर.के. प्रसाद, **कलाकार** : एस.डी. बनर्जी, एम.वी. नारायण राव, मंजुनाथ भट्ट, एल.वी. शारदा

शंकर का मत था कि अंतिम सत्य ब्रह्म है और इस वैभव पूर्ण संसार में सारपूर्ण कुछ नहीं है, केवल छाया है। अपने मत की व्याख्या करते हुए, शंकर ने प्राचीन वैदिक परंपरा को न्यायोचित माना।

फिल्म में, बालक शंकर की जीवन दिशा उस समय बदलती है, जब उनके पिता मृत्यु शैय्या पर होते हैं। "मैं चलता हूं, बेटे।" आप कहां जा रहे है ? शाश्वत में, जो अपने ही भीतर है। शंकर मृत्यु और बुद्धि के मित्र बन जाते हैं जिन्हें फिल्म में मानवीय रूप से दिखाया गया है। किशोर शंकर संसार के परे उस यथार्थ सत्य को खोजने के लिए संयासी बनने का निश्चय कर लेते है।

शंकर उपमहाद्वीप को लांघ जाते है। वे वैदिक ग्रंथों के प्रवचन करते है। वे शास्त्रार्थ करते है। अपने शिष्यों से घिर जाते हैं। वे गरीबी अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, मनुष्य के प्रति भेदभाव का विरोध करते हैं। वे अपने अद्वैत सिद्धांत का प्रतिपादन करते है तथा हिंदू धर्म ग्रंथों पर टीकाएं लिखते हैं। उन्होंने हिन्दुत्व के विभिन्न सम्प्रदायों का समन्वय कराया। 32 वर्ष की अल्पायु में, परमज्ञान - प्राप्ति हेतु तथा स्वयं को ब्रह्म में विलीन करने के लिए उन्होंने संयास ले लिया। वे हिमालय चले गए। उनकी शिक्षाएं शाश्वत है।

ADI SHANKARACHARYA

Sanskrit/1983/Colour/170 mins.

Direction and Screenplay : G.V. Iyer Production National Film Development Corporation Limited, **Photography** : Madhu Ambat **Audiography** : Ramanathan **Editing** : V.R.K Prasad **Music:** M. Balamurali Krishna **Leading Players** : S.D. Banerjee, .V. Narayana Rao, Manjunath Bhat, L.V. Sharda.

Shankara believed that 'Brahman' is the Ultimate Reality and that all other things in this magnificent universe are mere shadows and hence unreal. Elucidating an undoubtedly original view-point, Shankara has at the same time adhered strictly to the ancient Vedic tradition.

In the film, the child Shankara's life is given direction when his father dies. "I am departing, son." "Where are you going?" "To eternity. Within oneself." Shankara befriends Death and Wisdom, who are given human forms in this film. To find the real tnuth that lies beyond worldly existence, the adolescent Shankara decides to become a sanyasi. As Shankara traverses the sub-continent, he grows to manhood: he is initiated into the Vedic scripture; he engages in skillful debate, he collects disciples around him; he experiences misery, superstition, ritualism, man's inhumanity to man. He fights these evils wherever he travels. He preaches his Advaitist philosophy (nondualism), writes his illuminating commentaries on the HIndu religious books, and expertly brings together the then fraying strands of Hinduism.

At the age of 32, in his quest for higher knowledge, and the desire to merge his inner Self (atma) with the Universal Self (brahman), Shankara renounces the world. He bids good-bye to Death and Wisdom (or transcends them) and retires to the Himalayas. His teachings remain.

दामुल

हिन्दी/रंगीन/1984

निर्देशन-निर्माता: प्रकाश झा, **पटकथा** : शैवाल, **संगीत** : रघुनाथ सेठ, **कैमरा** : राजन कोठारी, **कलाकार** : मनोहर सिंह, श्रीला मजुमदार, अनु कपूर, दीप्ति नवल, प्यारे मोहन साधे, ब्रज किशोर, गोपालशरण, ओम प्रकाश

कहानी में बिहार में फैली गरीबी, शोषण और अस्पृश्यता का चित्रण है। गांव का मुखिया माधो (मनोहर सिंह) बंधुआ मजदूरों की पारंपरिक व्यवस्था के तहत हरिजन मजदूर संजीवन की पारंपरिक व्यवस्था के तहत हरिजन मजदूर संजवन (अनू कपूर) का शोषण करता है। माधो एक गिरोह का संचालन भी करता है जो मवेशियों की चोरी कर दोबारा उनके मालिकों को बेचता है। संजीवन माधो के विभिन्न कारनामों और माधो के प्रतिद्वंदी राजनीतिज्ञ बच्चा सिंह की करतूतों के खिलाफ है। माधो का छोटा भाई गुंडो का सरदार है जो अपने भाई की बदमाशियों में पूरा हाथ बटाता है। वह चुनावों में गड़बड़ी करता है और विधवा महतमीन के धमकी देने पर कि वह संजीवन के प्रति किए गए उनके कारनामों का चिट्ठा कोर्ट में खोल देगी, वे उसके साथ बलात्कार कर हत्या कर देते है। अंत में, संजीवन की पत्नी राजुली माधो की हत्या कर देती है। यह झा की दूसरी फिल्म है जिसमें अपराध, हिंसा, सेक्स, भड़कीले वस्त्र, प्रतिशोध सभी कुछ है।

DAMUL

aka Bonded unl Death

1984 141'(125') col Hindi

Direction, Production and Screenplay : Prakash Jha, **Diaolque :** Shaiwal, based on his story "Kabbutar" **Photography :** Rajan Kothari, **Music:** Ragunath Seth, **Leading Players** : Manohar Singh, Sreela Majumdar, Annu Kapoor, Deepti Naval, Pyare Mohan Sahay, Braj Kishore, Gopal Sharan, Om Prakash

Melodrama set in Bihar addressing poverty, rural exploitation and the politics of Untouchability. Madho the village head uses the conventional system of bonded labour (i.e. labourers have to sign a paper assuming the debts of their ancestors) to subjugate the Harijan labourer Sanjeevan. Madho also runs an extortion racket based on stealing cattle and then requiring the owners to buy them back. Sanjeevan's story is intercut with Madho s multifarious misdeeds and the equally nefarious doings of Madho's rival, the politician Bachcha Singh. Madho's younger brother heads the gang of thugs who enforce the headman's will, including rigging the elections, raping and killing the widow Mahatmeen when she threatens to expose him in court, framing Sanjeevan for the crime, etc. In the end, Sanjeevan's wife Rajuli kills Madho. Jha's second film uses a continuously circling camera, converting the melodrama into a frontier tale of crime, sex and revenge, with colourful clothes and exotic accents.

चिदंबरम्

मलयालम/रंगीन/1985

निर्माता : सूर्यकान्ति फिल्म मेकर्स, **निर्देशन-पटकथा** : जी. अरविन्दन, **संगीत** : पी. देवराजन, **छायांकन** : शाजी एन करुण, **कलाकार** : गोपी, स्मिता पाटिल, श्रीनिवासन, मोहन दास, मुरली, चन्द्रन नायर

कहानी काव्यात्मक छायांकन और सुन्दर दृश्यों के साथ खुलती है। यह श्रमिक मुनियांडी की कहानी है जो केरल इंडो-स्विस फार्म में कार्य करता है। वह मंदिरों के शहर चिदम्बरम की निवासी शिवागामी से विवाह करता है। उसकी संपदा-प्रबंधक शंकरन, जो शैकिया फोटोग्राफर भी है और जिसका विगत जीवन कुत्सित था, से मित्रता हो जाती है। यह मित्रता सभी मर्यादाओं का उल्लंघन कर जाती है। यह सब कुछ एक त्रासदी में बदल जाता है। शंकरन शराबी हो जाता है और मुनियांडी आत्महत्या कर लेता है। सामाजिक आर्थिक परिवर्तन और लोगों की अपरिवर्तित मानसिकता के बीच एक तनाव उत्पन्न हो जाता है। धीरे-धीरे फिल्म आगे खिसकती है, जहां चिदम्बरम् के अवसादपूर्ण मठ व्यवस्था का चित्रण है। एक बार फिर शंकरन और शिवागामी की भेंट होती है। शंकरन् वहां धार्मिक रीतियों द्वारा स्वयं को शुद्ध करने का प्रयास कर रहा होता है और शिवागामी भक्तों के जूते चप्पलों की देखरेख में नियुक्त है। अंत में, यह शून्यवादी फिल्म उठती हुई क्रेन, मंदिर की दीवार और खुले आकाश के चित्रण के साथ समाप्त होती है।

CHIDAMBARAM

Malayalam/1985/Colour/102 minites

Production : C.V. Shriram, **Direction** : G. Aravindan, **Photography :** Shaji N. Karun, **Music:** P. Devaajan, **Leading Players** : Gopi, Smita Patil, Srinivas, Murali Chandran Nair

Unfolding in exquisitely photograrhed poetic rhythms and coloured landscapes, this is the simple but cynical tale of Muniyandi, a labourer on the Indo-Swiss Mooraru farm in Kerala. He bring a wife, Shivagami, from the temple town of Chidambaram. She befriends Shankaran, the estate manager and amateur photographer with a shady past. Their friendship transgresses the hypocritical but deeply felt behavioural codes the local men inherited from previous social formations; i.e. that women are to be denied what men are allowed to enjoy. The tragedy that ensues (Muniyandi's suicide, Shankaran's descent into alcoholism and Shivagami's withering into a worn-out old woman) condenses the tensions between socio-economic change (as tractors and machinery invade the landscape) and people's refusal to confront the corresponding need to change their mentality. The tension is, however, most graphically felt in the way Shivagami's life-force is extended into the naturescape, which is shot around her with garish colour (e.g. purple flowerbeds) suggesting that the very nature of Kerala's beauty and fertility, as she represents it, has been irredeemably corrupted from within. The film then shifts to the equally oppressive cloisters of the Chidambaram temple, as Shankaran and Shivagami meet once more; he is there to purify himself through religious ritual while she is now employed to look after the footwear of devotees and tourists. The nihilist film ends with a rising crane shot as the camera can only avert its gaze and escape, tilting up along a temple wall towards an open sky.

तबरना कथे

कन्नड़/1986/117 मिनट

निर्माण : अपूर्व चित्र, **निर्देशन/पटकथा लेखक** : गिरीश कासरवल्ली, **कलाकार** : चारु हासन, नलिना मूर्ति, कृष्णामूर्ति, जयराम, मास्टर सन्तोष, **संगीतकार** : एल. वैद्यनाथि, **छायांकन** : मधु अम्बाट, **ध्वनि आलेखन** : श्रीनिवासन, **संपादन** : एम.एन. स्वामी, **कला निर्देशन** : श्रीनिवास, **वेशभूषाकार** : सावन्त

नगरपालिका में चपरासी तबरा शेट्टी उस समय बहुत खुश होता है जब आजादी के बाद उसे कर वसूली के लिए नियुक्त किया जाता है। कॉफी उगाने वाले लोग विद्रोह कर देते है और कर देने से इंकार कर देते हैं। इस तरह तबरा जितना कर वसूल नहीं कर पाता उसके बराबर राशि नौकरी से रिटायर होने से पहले उसके वेतन में से काट ली जाती है। इस बीच उसकी पत्नी अप्पी बहुत बीमार पड़ जाती है और उसका गोद लिया बेटा बाबू गांव छोड़कर शहर चला जाता है। उधर पेंशन की मन्जूरी में लगातार देरी के कारण तबरा का आर्थिक संकट और गहरा हो जाता है।

TABARANA KATHE

Kannada/1986/177 mins

Production: Apoorva Chitra. **Direction and Script:** Girish Kasaravalli, **Cast:** Charu Hassan, Nalina Murthy, Krishnamurthy, Jayaram, Master Santosh, **Music:** L. Vaidyanathan, **Camera:** Madhu Ambat, **Sound:** Sreenivasan, **Editing:** M.N. Swamy, **Art Direction:** Srinivas, **Costumes:** Sawanth

Tabara Setty, a municipality peon, feels proud when he is appointed a revenue collector in post-independence India. The coffee planters rise in revolt and refuse to pay tax. The uncollected tax is recovered by the municipal authorities from Tabara's salary just prior to his retirement. Meanwhile, his wife Appi falls seriously ill and his adopted son, Babu leaves the village for the city. Tabara's financial woes are increased by delays in the sanction of his pension.

हलोधिया चोराया बाओधान खाए

असमिया/1987/रंगीन/117 मिनट

निर्माण : शैलधर बरूआ, जानू बरूआ, **निर्देशन/पटकथा :** जानू बरूआ, **कलाकार :** इंदरा बनिया, पूर्णिमा पाथा सैकिया, हेमेन चौधरी, गौरव बनिया, **छायांकन :** अनूप जोतवानी, **ध्वनि आलेखन :** जतीन शर्मा, **संपादन :** हेमन बरूआ, **कला निर्देशन :** फटिक बरूआ, **संगीत निर्देशन :** सत्य बरूआ **पार्श्व गायक :** सत्य बरूआ **पार्श्व गायिका :** रीता बरूआ।

राखेश्वर एक किसान है जो अपनी पत्नी तारू और पुत्र मोहन के साथ अपने छोटे से खेत में धान की खेती करके अपना गुजारा चलाता है। वर्षा देर से आती है लेकिन राखेश्वर सोचता है कि अब उसकी चिन्तायें दूर हो जायेंगी।

धनी जमींदार सनातन शर्मा राखेश्वर की जमीन पर अपना दावा करता है और कहता है कि उसके बाप ने यह जमीन गिरवी रखी थी। उसके पास अपने दावे को साबित करने के लिए कागजात है। मुकदमे पर बहुत पैसा खर्च होता है। उसे क्लर्कों दलालों और कलेक्टर को रिश्वत भी देनी पड़ी है। इस बीच सनातन विधानसभा के चुनाव के लिए खड़ा होता है। विपक्षी उम्मीदवार राखेश्वर के मामले को उछाल कर सनातन को बदनाम करते है।

कलेक्टर के दफ्तर में उसकी दलील पर सहानुभूमि पूर्वक सुनवाई होती है। कलेक्टर महसूस करता है कि रखेश्वर के पास अपना दावा सिद्ध करने के लिए कोई कानूनी सबूत नहीं हैं, लेकिन वह उसे आश्वासन देता है कि उसके लिए वह कुछ करेगा। कलेक्टर सनातन से अनुरोध करता है कि वह जमीन पर अपना दावा छोड़ दे, क्योंकि विपक्ष के लोग इस मामले को उछालकर उसे राजनीतिक हानि पहुंचा रहे हैं।

राखेश्वर को अपनी जमीन के कागजात वापस मिल जाते हैं। लेकिन जब वह चारों ओर लगे पोस्टरों से सनातन के हंसते हुए चेहरे को देखता है तो उसकी खुशी काफूर हो जाती है।

HALODHIA CHORAYE BAODHAN KHAI

Assamese/1987/Colour/120 mins

Production: Sailadhar Barua, Jahnu Barua, **Direction and Screenplay:** Jahnu, **Barua Cast:** Indra Bania, Purnima Patha. Saikia, Hemen Shoudhury Gaurav Bania, **Camera:** Anoop, Jotwani, **Audiography:** Jatin Sharma **Editing:** Hemen Barua, **Art Direction:** Phatik Barua, **Music Direction:** Satya Baruah, **Male Playback Singer:** Satya Baruah, **Female Playback Singer:** Reeta Baruah

Rakheshwar is a farmer who survives with his wife Taru and son Mohen on the produce of his small paddy field. When the delayed monsoon arrives, he feels his worries for the year are over. But the rich Sonathan Sharma claims the land was mortgaged to him by Rakheshwar's father and never redeemed. He has the papers to prove it.

Expenses are massive, in particular the various bribes that have to be paid to the clerks, the touts, the Collector himself.

Meanwhile, Sonathan is contesting the state Legislative elections. These are being bitterly fought and the opposition is attempting to make use of the Rakheshwar case to malign Sonathan.

An altercation in the Collector's office also brings a sympathetic audience from the Collector. The Collector realises that Rakheshwar has no legal evidence to back his claim, but promises do something about it. He persuades Sonathan to relinquish his claim over the land since the opposition has widely publicised the case and the political losses Sonathan might have to bear would be far greater. Rakheshwar gets his papers back, but his joy is forestalled by the election posters of a laughing Sonathan surrounding him everywhere.

पिरवी

मलयालम/1988/110 मिनट

निर्माण : एस. जयचन्द्रन नायर, **निर्देशन/वेशभूषा** : शाजी एन. करुण, **पटकथा** : एस. जयचन्द्रन नायर/रघुनाथ पलेरी/शाजी, **मुख्य अभिनेता** : प्रेमजी, **मुख्य अभिनेत्री** : अर्चना, **सह-अभिनेता** : सी.वी. श्रीराम/मुल्लेने, **सह-अभिनेत्री** : कृष्णा मूर्ति, **छायांकन** : सन्नी जोसेफ, **ध्वनि आलेखन** : कृष्ण ऊन्नी, **संपादन** : वेणु गोपाल, **कला निर्देशन** : देवन करुवत्तुमाना, **संगीत निर्देशन** : जी. अरविन्दन

एक बूढ़ा व्यक्ति चकयार गांव के बस स्टाप पर अपने बेटे रघु के आने का इन्तजार कर रहा है। रघु शहर में इंजीनियरी पढ़ता है। आखरी बस आकर भी चली जाती है लेकिन रघु नहीं आता। चकयार घर लौट जाता है। अखबारों में खबर छपती है कि रघु तथा दो आदमी सरकार विरोधी गाना गाने के लिए गिरफ्तार कर लिये गये हैं। चकयार रघु को छुड़ाने के लिए त्रिवेन्द्रम जाता है। गृह मंत्री जो कभी पढ़ाई-लिखाई के लिए चकयार के परिवार पर निर्भर हुआ करता था, उसे पुलिस के महानिदेशक के नाम एक पत्र देता है। चकयार को पता चलता है कि रघु को गिरफ्तारी के थोड़ी देर बार ही रिहा कर दिया गया था। चकयार की बेटी को इसमें कुछ गड़बड़ दिखाई देती है और वह सच्चाई का पता लगाने के लिए त्रिवेन्द्रम जाती है। उसे मालूम होता है कि रघु को जेल में पीटा गया जिससे हो सकता है उसकी मृत्यु हो गई हो। जब वह गांव वापस जाती है तो उसका बाप पागल हो चुका होता है और वह इस तरह आचरण करता जैसे रघु उसके निकट ही दिखाई दे रहा हो।

PIRAVI

Malayalam/1988/110 mts.

Producer: S. Jayachandran Nair **Director/Costume Designer:** Shaji N. Karun **Screenplay Writers:** S. Jayachandran Nair/Raghunath Paleri/Shaji **Leading Actor:** Premji **Leading Actress:** Archana **Supporting Actor:** C.V. Sreeraman/Mullene **Supporting Actress:** Krishna Moorthy **Cameraman:** Sunny Joseph **Audiographer:** Krishnan Unni **Editor:** Venugopal Art Director: Devan Karuvattumana Music Director: G. Aravindan.

Chakyar, an old man, waits at a village bus stop for the arrival of his son, Raghu, an engineering student. The last bus from the city unloads a motley group of people but Raghu is not there. Chakyar trudges back home.

The newspapers report the arrest of Raghu and two others for singing an anti-Government song. Chakyar travels to Trivandrum to seek Raghu's release. The home minister, once dependent on Chakyar's family for his education, gives him a letter for the inspector-general of police who tells him that Raghu was released soon after his arrest. The daughter, suspecting foul play, goes to Trivandrum to find out the truth. She discovers that Raghu was tortured in the lock-up and was probably dead. Back home, she finds her father mentally deranged and behaving as if he were seeing Raghu beside him.

बाघ बहादुर

हिन्दी/1989/रंगीन/91 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : बुद्धदेब दास गुप्ता, **मुख्य अभिनेता :** पवन मल्होत्रा, **मुख्य अभिनेत्री :** अर्चना, **सह-अभिनेता :** वासुदेव राव, **सह-अभिनेत्री :** राजेश्वरी राय चौधरी, **बाल-कालाकार :** स्वरेश चट्टर्जी, **छायांकन :** वेणु, **ध्वनि आलेखन :** ज्योति चट्टोपाध्याय, **संपादन :** उज्जल नन्दी, **कला निर्देशन :** निखिल बरण सेनगुप्ता, **संगीत निर्देशन :** शान्तनू महापात्र, **पार्श्व गायिका :** उर्वशी चौधरी

घनुराम हर साल नोनपुरा के वार्षिक मेले में बाघ नृत्य पेश करता है। इसके लिए वह अपनी नौकरी तक की परवाह नहीं करता। ये कला उसने अपने बाप दादा से विरासत में पाई है और इस पर उसे गर्व है। नोनपुरा में वह ढोलवादक सिबल के साथ रहता है जो उसके नृत्य करने पर ढोल बजाता है। एक दिन घनुराम उसकी बेटी राधा से शादी करने की इच्छा प्रकट करता है। इस वर्ष नोनपुरा में तमाशे दिखाने वाला एक नया आदमी सांबा आया है जो अपने साथ नाचने वाली एक लड़की और कुछ हास्यकार भी लाया है। उनके पास पिंजरे में एक चीता भी है। गांव वाले सांबा के तमाशे को ज्यादा पसंद करते हैं और राधा भी उस की तरफ आकर्षित होने लगती है। जोश में आ कर घनु सांबा को ललकारता है और अपनी बहादुरी दिखाने के लिए चीते के पिंजरे में घुस जाता है। घनुराम को सामने पा कर चीता उतेजित हो उठता है और उसे अपना शिकार बना लेता है।

BAGH BAHADUR

Hindi/1989/Colour/91 minutes

Producer/Director/Screenplay Writer: Buddhadeb Dasgupta. Leading Actor: Pavan Malhotra. **Leading Actress**: Archana. Supporting **Actor**: Vasudev Rao. Supporting **Actress**: Rajeswari Roy Chowdhury. **Child Artiste**: Sawresh Chatterjee. **Cinematographer**: Venu. **Audiographer**: Jyoti Chattopadhyay. **Editor**: Ujjal Nandi. **Art Director**: Nikhil Baran Sen Gupta. **Costume Designer**: Kuntala Dasgupta. **Music Director**: Santanu Mahapatra. **Female Playback Singer**: Urvashi Chowdhury.

Ghanuram performs the Tiger dance at the annual festival at Nonpura every year, even if it means leaving a job in hand to do so . It is a skill that he has inherited from his father and grandfather and he feels justifiably proud of it. At Nonpura, he stays with the drummer Sibal, who plays the drum when he dances. Ghanuram wants to marry his daughter Radha one day. This year, a new entertainer appears in Nonpura. Samba, a flamboyant showman, has brought a dancing girl and a troupe of clowns with him. He even has a leopard in a cage. The villagers are enchanted by Samba and even Radha feels attracted to him. Hurt and angry, Ghanuram challenges Samba and enters the leopard's cage to prove his own superiority. The sluggish animal is aroused and Ghanuram becomes his prey.

मरुपक्कम

तमिल/1990/रंगीन/85 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. और दूरदर्शन, **निर्देशक/पटकथा :** के.एस. सेतुमाधवन, **मुख्य अभिनेता :** शिव कुमार, **मुख्य अभिनेत्री :** जया भारती, **सह-अभिनेता :** शेखर, **सह-अभिनेत्री :** राधा, **छायांकन :** डी. वसन्त कुमार, **ध्वनि आलेखन :** ए. स्वामीनाथन, **संपादन :** जी. वेंकटरामन, **कला निर्देशन :** बी. चलम, **वेशभूषा :** कुप्पूराज, **संगीत निर्देशन :** एल. वैद्यनाथन।

यह फिल्म एक बाप और बेटे के बारे में है, जिनके जीवन में इतिहास दोहराया जाता है। अम्बी दिल्ली से अपने बीमार पिता वेम्बू अय्यर को देखने कुम्बकोनम पहुंचता है। वेम्बू अय्यर अपनी विद्वता और कठोरता के लिए प्रसिद्ध है। अम्बी अपने पिता को चुपचाप शान्त लेटे हुए देखता है तो उसे बहुत दुख होता है। अम्बी ने जब एक ईसाई लड़की से शादी की तो अय्यर ने उसे बहुत बुरा-भला कहा लेकिन जब उसे पता चला कि वे अलग हो गये हैं तो वह चुप हो गया। अम्बी अपने पिता के मुख से अपनी उस सौतेली माँ का नाम सुनता है जिसे इसलिए अय्यर को छोड़कर जाना पड़ा क्योंकि उसके संगीत प्रेम के कारण अय्यर की माँ परेशान होती थीं। जब उसने अदालत में अपने गुजारा खर्च के लिए मुकदमा दायर किया जो अपनी माँ की सलाह पर उसने उसके खिलाफ बदचलनी का आरोप लगाया। अय्यर का अतीत उसके मन में घूमने लगता है। क्या पति-पत्नी के अलग होने का अभिशाप उनके परिवार में अभी जारी है? अम्बी की मुलाकात एक बंगाली ईसाई लड़की स्वीटी से हुई और दोनों की शादी हो गई। हालांकि अय्यर ने ईसाई लड़की को स्वीकार करने से इंकार कर दिया लेकिन स्वीटी अम्बी के माता-पिता से मिलने की इच्छुक थी। अम्बी अपने मां-बाप से सम्बन्ध तोड़ने को तैयार नहीं हुआ, जिससे उनमें अनबन रहने लगी और स्वीटी ने उसे तलाक दे देने की धमकी दी। अम्बी का अतीत वापस लौटता है। जब अम्बी अपनी सौतेली माँ को बुलाने की बात करता है तो उसकी मौजूदा माँ गुस्सा होने लगती है। अम्बी को स्वीटी और अपनी इस माँ के दृष्टिकोण में कोई अन्त नजर नहीं आता। अन्त में अम्बी का मित्र मूर्ति उसकी समस्यायें हल कर देता है।

MARUPAKKAM

Tamil/1990/Colour/85 min

Producer: NFDC-Doordarshan; **Director/Screenplay/Writer:** K.S. Sethu Madhavan; **Leading Actor:** Siva Kumar; **Leading Actress:** Jaya Bharathi; **Supporting Actor:** Sekhar; **Cinematographer:** D. Vasanth; **Audiographer:** A. Swaminathan; **Editor**: G. Venkataraman; **Art Director:** B. Chalam; **Music Director:** L. Vaidyanathan; **Costume Designer:** Kuppuraj.

The story is about a father and a son in whose life history repeats itself. Ambi, arrives in Kumbakonam from Delhi to see his ailing father, Vembu Iyer, an uncompromising man known for his scholarship and dogmatism. Ambi is shocked to see him lying silent. When Ambi got married to a Christian girl, Iyer told him off, and fell silent when he came to know about their separation. A puzzled Ambi overhears his father uttering the name of his step-mother who had to leave him as her love for music posed problems for Iyer's mother upon whose advise he accused her of "infidelity" when she filed a suit against him for maintenance. Iyer's past unfolds itself in his mind. Is the cause of "separation" running in the family? Ambi met "Sweetie", a Bengali Christian under romantic conditions, and marreid her. Though his father refused to accept her she insisted on seeing his parents. Ambi refused to cut off relations with his parents and this led to constant fights with Sweetie threatening that she would not give him divorce. Ambi's past comes back. When Ambi suggests inviting his stepmother, the present mother beomes furious. Ambi finds no difference between her attitude and Sweetie's. Finally, his friend Murthy, a self-styled "prophet" finds answers to Ambi's problems and sets things rights.

आगन्तुक

बंगला/1991/रंगीन/120 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम **निर्देशक/पटकथा/संगीत निदेशक** : सत्यजीत राय **मुख्य अभिनेता** : उत्पल दत्त **मुख्य अभिनेत्री** : ममता शंकर **सह-अभिनेता** : दीपांकर डे **सह-अभिनेत्री** : सुब्रता चटर्जी **बाल कलाकार**: विक्रम **ध्वनि-आलेखन** : सुजीत सरकार **संपादक** : दुलाल दत्ता **कला निर्देशक** : अशोक बोस **गीतकार** : रवीन्द्रनाथ टैगोर **पार्श्व गायिका** : श्री मोना गुहा ठाकुरता **वेशभूषा** : ललित राय

अनिला को अपने अंकल मनमोहन से एक पत्र मिलता है। उनसे वह पहले कभी नहीं मिली है। मनमोहन 35 वर्ष तक विदेशों में रहने के बाद भारत लौट रहे हैं।

पत्र पाकर अनिला खुश होती है, हालांकि उसके पति सुधीन्द्रा के मन में संदेह है। मनमोहन उनके घर पहुंचते हैं और अपने अच्छे स्वभाव के कारण बहुत जल्दी अनिला के 11 वर्षीय बेटे से उनको लगाव हो जाता है। सुधीन्द्र को शक हो जाता है कि वह वसीयत का अपना हिस्सा लेने के लिए ही यहां आये हैं। वह उनके बारे में जांच कराता है। पता चलता है कि उन्होंने वह पिछले 35 वर्ष उत्तरी और दक्षिणी अमरीका में आदिवासियों के जीवन के अध्ययन में बिताये है। सुधीन्द्र का वकील मनमोहन के रहन-सहन का मजाक उड़ाता है।

सुधीन्द्र और अनिला अपनी शंका के समाधान के लिए संताल गांव जाते हैं, जहां मनमोहन रह रहे हैं। मनमोहन उन्हें आदिवासियों के एक नृत्य कार्यक्रम तक वहीं रुकने के लिए कहते है। अनिला नृत्य से आकर्षित होकर खुद भी नाचने लगती है। कलकत्ता लौटकर आस्ट्रेलिया के लिए रवाना होने से पहले मनमोहन सुधीन्द्र को एक उपहार देते हैं। यह विरासत में उनके पूरे हिस्से के कागजात है।

AGANTUK

Bengali/1991/Colour/120 min

Producer: NFDC; **Director/Screenplay Writer/Music Director:** Satyajit Ray; **Leading Actor**: Utpal Dutt; **Leading Actress:** Mamata Shankar; **Supporting Actor:** Deepankar Dey; **Supporting Actress**: Subrata Chatterji; **Child Artist:** Bikram Bhattacharya; **Cinematographer:** Barun Raha; **Audiographer:** Sujit Sarkar; **Editor**: Dulal Dutt; **Art Director:** Ashoke Bose; **Lyricist:** Rabindranath Tagore; **Female Playback Singers:** Sromona Guha Thakurta; **Costume Designer** : Lalita Roy.

Anila receives a letter from her uncle, Manmohan, whom she has never met. He is visiting India after thirty-five years abroad. Anila is his only surviving relation. He wants to meet her in Calcutta before he sets off again. Anila looks forward to the meeting, although her husband Sudhindra is suspicious.

The uncle arrives, and immediately wins the friendship of Anila's son. Anila suddenly remembers her grandfather's will, and Sudhindra is quick to suspect that Manmohan has come only to claim his share of the inheritance. He triggers an investigation of the old man.

Sudhindra's and Anila's suspicions lead them to the Santal village where Manmohan is spending time. He invites them to stay for a tribal dance. Anila is attracted by the rhythm and rushes in to join the dance. Back in Calcutta, just before he leaves for Australia, Manmohan gives the family his entire share of the inheritance.

भगवद् गीता

संस्कृत/1992/रंगीन/150 मिनट

निर्माता : टी. सुब्बारामी रेड्डी **निर्देशक/पटकथा लेखक** : जी.वी. अय्यर **मुख्य अभिनेता** : राघवेन्द्र **मुख्य अभिनेत्री** : नीना गुप्ता **सह-अभिनेता** : गोपी मनोहर **सह-अभिनेत्री** : मीना राव **छायाकार** : मधु अम्बट **ध्वनि-आलेखन** : के.एस. कृष्णमूर्ति **संपादक** : नौजुंडा स्वामी **कला निर्देशक** : पी. कृष्णमूर्ति **संगीत निर्देशक/पार्श्व गायक** : बालमुरली कृष्ण **पार्श्व गायिका** : वाणी जयरमन **गीत** : बन्नांजे गोविंदाचार्य **वेशभूषा** : कल्पना अय्यर **विशेष प्रभाव** : वेन्की

भगवद् गीता कुरुक्षेत्र की रणभूमि में कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया संदेश है।

फिल्म में एतिहासिक कौरव-पात्रों और उनके साथियों की इच्छा, क्रोध, लालच, सम्मोहन, घमण्ड, प्रतिशोध तथा पांचों ज्ञानेंद्रियों के गुणों का चित्रण किया गया है। उनके विपरीत पांडवों के गुण-धर्मपरायणता, शक्ति, एकाग्रता, सच्चाई और धैर्य आदि संतुलित हैं। द्रोपदी एक ऐसी अकेली शक्ति है जो उन्हें अपने संघर्ष में मार्गदर्शन देती है। और कृष्ण ब्राह्मंडीय शक्ति हैं।

फिल्म में नश्वर मानव की यात्रा को स्वत: बोध के अंतिम उद्देश्य की ओर ले जाने का सफल प्रयास किया गया है। उस बोध से, अर्जुन जो पहले भय की बेचैनी से निश्चल थे, पुन: कार्यवाही के लिए सक्रिय हो जाते हैं।

BHAGAVAD GITA

Sanskrit/1992/colour/150 min.

Producer: T. Subbarami Reddi **Director/Screenplay Writer:** G.V. Iyer **Leading Actor:** Raghavendra **Leading** Actress: Neena Gupta **Supporting Actor**: Gopi Manohar **Supporting Actress**: Meena Rao Cinematographer: Madhu Ambat **Audiographer:** K.S. Krishna Murthy **Editor**: Naujunda Swamy **Art Director**: P. Krishnamurthy **Music Director/Male Playback Singer:** Balamurali Krishna **Female Playback Singer:** Vani Jayaraman Lyrics: B annanje Govindacharya

The Bhagavad Gita is the message of Krishna to Arjuna on the battlefield of Kurukshetra.

The film depicts the historical Kaurava characters and their allies as the qualities of desire, anger, greed, fascination, pride, revenge and the five senses. Balanced against them are the qualities represented by the Pandavas--righteousness, strength, concentration, truth and equanimity. Draupadi is the individual energy that guides them in their struggle, and Krishna is the cosmic energy. The film traces the mortal being's travel towards the ultimate goal of self-realisation. With that realisation, Arjuna, who was at first immobilised by anxiety and fear, swings back into action.

चराचर

बंगला/1993/रंगीन/1993

निर्माता : गोप मूवीज़ प्रा. लि. **निर्देशक/पटकथा:** बुद्धदेव दासगुप्ता **मुख्य अभिनेता :** रजत कपूर **मुख्य अभिनेत्री :** लाबोनी सरकार **सह-अभिनेता :** साधु मेहर **सह-अभिनेत्री :** इन्द्राणी हलदर **कैमरामैन :** सौमेन्दु राय **ध्वनि-आलेखन :** ज्योति चटर्जी, अनूप मुकर्जी **संपादक :** उज्जल नंदी **कला निर्देशक :** मित्रा **संगीत निर्देशक :** विश्वदेव गुप्ता

कई पीढ़ियों तक, लखिन्दर के परिवार के लोग दूसरे देशों से आने वाले पक्षियों को पकड़ कर और उन्हें बेचकर अपना जीवन-यापन करते थे। फिर भी, इस कार्य की प्रक्रिया के दौरान लखिन्दर को पक्षियों से प्रेम होने लगता है। वह सोचता है कि वे दूसरे ध्रुवों से आए हुए पर्यटक हैं।

अपने पुत्र की मृत्यु के पश्चात्, लखिन्दर पक्षियों से इतना प्रभावित होता है कि अब सदियों से चले आ रहे व्यापार में उसे कोई दिलचस्पी नहीं रह जाती। वह अपनी पत्नी सारी के नटबर के साथ विकसित हो रहे निकट संबंधों में भी कोई हस्तक्षेप नहीं करता जो पकड़े हुए पक्षियों को इकट्ठा करता है और उन्हें शाश्मल नाम के बिचौलिए को बेच देता है।

अंत में जब लखिन्दर को यह लगता है कि कहीं वह उससे हमेशा के लिए वंचित न हो जाए, तो वह और पैसा कमाने के लिए कलकत्ता के एक पक्षियों के व्यापारी को सीधे ही पक्षी बेचने का दु:खद निर्णय लेता है। कलकत्ता में, उसे उस समय अपने जीवन का गहरा सदमा पहुंचता है, जब व्यापारी के घर में पक्षी पूजा के धार्मिक कृत्य के बाद दोपहर के भोजन में उन्हें पक्षियों का पका हुआ मीट परोसा जाता है जिन्हें वह अपने गांव से लाया था। लखिन्दर अब इस व्यक्ति के पास पक्षी लाकर बेचना बंद कर देता है। वह खाली जेब घर लौटता है। उसकी संवेदनशक्ति इतनी बिगड़ जाती है कि वह पूरी तरह सनकी हो जाता है, वह पक्षी पकड़ता है और बाद में उन्हें छोड़ देता है।

सारी के नटबर के साथ भाग जाने की खबर भूषण की बेटी गौरी, लखिन्दर को देती है। वह लखिन्दर के नम्र स्वभाव के लिए उसकी प्रशंसा करती है और सारी को खो देने का उसका दुख देखकर उसके प्रति अपना प्यार व्यक्त करती है। लखिन्दर उस के प्यार के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं करता। भूषण उसे इस स्थिति में उबारने के लिए लखिन्दर को उकसाता है कि वह सारी को वापिस ले आए।

CHARACHAR

Bengali/1993/Colour/86 min

Producer: Gope Movies Pvt. Ltd.. **Director/Screenplay:** Buddhadeb Das Gupta. **Actor**: Rajat Kapoor. **Actress** : Aboni Sarkar. **Supporting Actor:** Sadhu Meher. **Supporting Actress**: Indrani Halder. **Cameraman:** Soumendu Roy. **Audiographer**: Jyoti Chatterjee, Anup Mukherjee. **Editor**: Ujjal Nundy. **Art Director:** Shatadal Mitra. **Music Director:** Biswadeb Das Gupta.

Forgenerations, the men in Lakhinder's family had caught and sold migratory birds for a living. In the course of this work, however, Lakhinder comes to love the birds. He imagines that they are "Visitors from other Planets."

After the death of his son, Lakhinder, becomes so obsessed by birds that he no longer enjoys his ancestral trade. He does not even interfere the too-close relationship which his wife, Sari, was developing with Natabar, who collects the catch and sells them to a local middleman, Shasmal.

When Lakhinder finally realises that he might lose her forever, he takes the painful decision to earn more money by selling birds directly to a Calcutta-based bird-dealer. In Calcutta, he gets the shock of his life when at lunsh after the rituals of bird-workship at the trader's house, they are served the cooked meat of the very birds he h(l brought from his village. Lakhinder cannot bringhimself tosell birds to this man any more. He returns home with empty pockets and a sensibility so shaken that he becomes completely obsessed and cathes birds only to release them later.

The news that Sari has left him for Natabar is brought to Lakhinder by Bhushan's daughter, Gouri.

Bhushan, in an eflort tomake him snap out of it, provokes Lakhinder to try to get Sari to return . Lakhinder encounters her travelling on a motorcycle with Natabar. In a sudden fit of rage, he orders Sari to get down and come home with him

Lakhinder returns to his empty hut. That night, birds and birds and birds fly into the room, giving him the final shelter of their wings.

उनिशे एप्रिल

बंगला/रंगीन/1994/130 मिनट

निर्माता : रेनु राय **निर्देशक/पटकथा लेखक :** ऋतुपर्णो घोष **मुख्य अभिनेत्री :** देबाश्री राय **सह-अभिनेता :** दीपंकर दे **सह-अभिनेत्री :** अपर्णा सेन **कैमरामैन :** सुनिर्मल मजुमदार **संपादक :** उज्जल नन्दी **कला निर्देशक :** बीबी रे **संगीत निर्देशक :** ज्योतिष्का दासगुप्ता **नृत्य संयोज :** अंजना बैनर्जी

19 अप्रैल अदिती के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन 18 वर्ष पहले उसके पिता की मृत्यु हुई थी। उस दिन 8 वर्ष की अदिती का जीवन ही बदल गया था। उसकी मां सरोजिनी अपने नृत्य कार्यक्रम के कारण घर पर नहीं थी। अदिती को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया और उसने धीरे-धीरे अपने आप को अपनी माँ से दूर कर लिया। अब 26 वर्षीय अदिती दिल्ली में डाक्टरी पढ़ती है और सिर्फ अपने पिता की बरसी पर कलकत्ता अपनी माँ के घर आती है। इस समय वह अपने दोस्त संदीप के फोन का इंतजार कर रही है। आज भी उसके माँ के घर में सब काम बिना रोक टोक हो रहा है।

इतने में खबर आती है कि सरोजिनी गुप्ता को संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार दिया गया है। इससे अदिति की जिन्दगी का रुख ही बदल जाता है। संदीप के अनुसार उसके परिवार वाले कभी अदिती को अपनी बहू स्वकीर नहीं करेंगे क्योंकि वह एक मामूली नर्तकी की बेटी है। अदिती का जीवन थम जाता है और वह आत्महत्या करने की योजना बनाती है।

UNISHE APRIL

Bengali/1994/colour/130min.

Producer:RenuRoy Director/Screenplay Writer: Rituparno Ghosh **Leading** Actress: Debasree Roy Supl)ortingActor: Deepankar Dey **Sul)l)orting Actress:** Aparna Sen Camcrdman: Sunirmal Majumdar Editor: Ujjal Nandy **Art Director:** Bibi Ray **Music Director:** Jyotishka Dasgupta Choreographer: Anjana Banerjee

The date 19th April holds a special meaning to Aditi. It is her father's death anniversary who had died on this day eighteen years ago.

An eight year old Aditi had been shattered by the catastrophe. Her mother Sarojini away on a performance at the time, had sent Aditi to a boarding school. Aditi had gradually distanced herself from her mother. Now at twenty-six, Aditi studied medicine in Delhi and visited her mother's home in Calcutta only once a year on this day. She and her mother were virtually strangers.

As she awaits a telephone call from Sudeep, her boy friend, she notices that everything goes on unhindered in house even today.

Routine phone calls keep coming. One of them announces that Sarojini Gupta has been awarded the Sangeet Natak Academy award. This changes Aditi's life. Sudeep becomes aware of her mother's identity and is adamant that his family would never allow him to marry Aditi, a common dancer's daughter. Aditi's life comes to a standstill and she plans a foolproof suicide.

कथापुरूषन

मलयालम/1995/रंगीन/107 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेख : अदूर गोपालकृष्णन **मुख्य अभिनेता** : विश्वनाथ **मुख्य अभिनेत्री** मिनी नायर **सह-अभिनेता** : बाबू नाम्बूदिरी **सह-अभिनेत्री** : अरानभुला पोनम्मा/ उर्मिला उन्नी/ललिता **बाल कलाकार** : मिथुन/ स्रीजा/अखिल **कैमरामैन** : रवि वर्मा **ध्वनि आलेखक** : हरिकुमार **संपादक** : एम. मणि **कला निर्देशक** : एन. सिवान **वेशभूषाकार** : ए. सतीशन **संगीत निर्देशक** : विजया भास्कर

ये कहानी मानव आत्मा की अपने आप से किसी भी संस्थान या सरकार के कठोर नियंत्रण तथा दमन के खिलाफ दावा करने की कथा है। कोई भी सरकार किसी भी व्यक्ति के स्वेच्छाकारी मत पर प्रतिबंध अवश्य लगाती है।

इस कहानी में मुख्य पात्र एक कभी न हारने वाला युवक है जो अपनी हार या जीत को मानवता के महान ढांचे में ढाल लेता है।

ये फिल्म एक बदलते समाज के पट पर बनी है जो लोहे जैसे सामंतवाद से आज के लचकदार समाज में परिवर्तित हो रही है।

कथापुरूषन की कहानी तर्कसंगत परंतु मध्यम वर्ग के वृद्धि और विकास के कठिन मार्ग का अनुरेखण है। इस फिल्म का मुख्य पात्र अपने मध्यम वर्ग के विनम्र संवेदन शील और प्रभाव्य मन से कायर और अवरोध को बाहर कर अपने को एक सृजनात्मक लेखक के रूप में प्रकाश करता है।

KATHAPURUSHAN

Malayalam/1995/Colour/107 min

Producer/Director/Screenplay Writer: Adoor Gopalakrishnan **Leading Actor:** Viswanathan **Leading Actress:** Mini Nair **Supporting Actor:** Babu Namboodiri **Supporting Actress:** Aranmula Ponnamma/Urmila Unni/ Lalita **Child Artist:** Mithun/Sreeja/ Akhil **Cameraman:** Ravi Verma **Audiographer:** Hari Kumar **Editor:** M. Mani **Art Director:** N. Sivan **Costume Designer:** S. Satheeshan **Music Director:** Vijaya Bhaskar

The story attempts to epitomize the eternal struggle of the human spirit to assert itself against regimentation and repression that any system of establishment or governance is bound to impose on the free will of the individual.

The protagonist is a never-say-die young man who tuns both triumph and failures as moulds for aspiring nobility of mankind.

A society in transition-from a cast-iron feudal order to the plastic present-provides the backdrop as well as the thematic material of the film.

The film traces the rational yet difficult course of the growth and development of a middle class mind - gentle, sensitive and impressionable who ultimately finds release from his timidily and inhibitions as he discovers creativity in himself as a writer.

लाल दरजा

बंगला/रंगीन/97 मिनट

निर्माता : चित्राणी लाहिड़ी, **निर्देशक/पटकथा/लेखक/कहानी लेखक :** बुद्धदेव दासगुप्ता, **मुख्य अभिनेता :** शुभेन्द्र चटर्जी, **मुख्य अभिनेत्री :** चम्पा, **सह-अभिनेता :** असद, **सह-अभिनेत्री :** इन्द्राणी हलधर, **बाल-कालाकार :** सुदीप मजुमदार, **छायांकन :** वेणु, **ध्वनि आलेखन :** हितेन घोष, **संपादन :** उज्जल नंदी, **कला निर्देशन :** अशोक घोष, **संगीत निर्देशन :** बप्पी लाहिड़ी, **पार्श्व गायिका :** अरुन्धति, सिप्रिति घोष।

यह फिल्म एक व्यक्ति की अन्तर्व्यथा का चित्रण करती है जो अपने विवाह के टूटने की भयावह स्थिति के लिए खुद को जिम्मेदार समझता है। दंत-चिकित्सक नवीन दत्ता की गृहस्थी मध्यमवर्गीय प्रतिष्ठा के कारण संवेदनाशून्य हो जाती है। उसकी पत्नी बेला उसे छोड़कर जाना चाहती है वह उसे रोकने में नाकाम रहता है।

नवीन का ड्राईवर दीनू एक खुशहाल आदमी है। जिसकी एक शहर में तथा एक गांव में - दो बीवियां है। नवीद दीनू की बराबरी नहीं कर सकता पर वह जानता है उसे खुद को पहचानना होगा। जब यह समझ जाता है कि उसका बचाव प्रकृति से खुद के तारतम्य में ही है, जैसाकि वह बचपन में किया करता था।

LAL DARJA

Bengali/Colour/97 min

Producer: Chitrani Lahiri; **Director/Screenplay Writer/Story Writer:** Buddhadeb Dasgupta; Leading Actor: Subhendu Chatterjee; **Leading Actress:** Champa; **Supporting Actor:** Asad; Supporting Actress: Indrani Halder; **Child Artist:** Sudip Majumdar; **Cameraman:** Venu; **Audiographer:** Hiten Ghosh; Editor: Ujjal Nandi; **Art Director:** Ashoke Bose; **Music Director:** Bappi Lahiri; **Playback Singers:** Arundhati, Sipriti Ghosh.

The film depicts the inner turmoil of a man who feels responsible for the break up of his marriage. Middle-class respectability has dulled dentist Nabin Datta's marriage. His wife, Bela, wants to break away, and he cannot prevent her.

Nabin's driver, Dinu, is a happy-go-lucky man--with one wife in the village and another in the city. Nabin cannot emulate Dinu and knows he must find himself. He does this when he realises his escape lies in his being in tune with nature, as he used to be as a little boy.

कथासार : कथाचित्र
Synopses : Feature Films

अन्नामैया

तेलुगु/35 मि.मी./रंगीन/150 मिनट /

निर्माता: वी. दोरास्वामी राजु, **निर्देशन एवं पटकथा:** के. राघवेन्द्र राव, **कलाकार :** नागार्जुन अक्कीनेनी, रम्य कृष्ण, सुमन, भानुप्रिया, **संगीत:** एम.एम. कीरवाणी, **गीत :** अन्नमाचार्य कीर्तनास, वी.एस. मूर्ति, **छायांकन:** विन्सेन्ट, अजय विन्सेन्ट, **संपादन:** ए श्रीकर प्रसाद, **ध्वनि :** एम. रवि

यह आंध्र में जन्मे संत अन्नामैया के जीवन पर आधारित एक संगीतमय पौराणिक फिल्म है। विष्णु की "नाडका तलवार" अन्नामैया का पुनर्जन्म लकामम्बा तथा नारायणसूरी के पुत्र के रूप में होता है बचपन से वह कुशाग्र बुद्धि थें परन्तु शीघ्र ही वह अपनी चचेरी बहनों के सौंदर्य से अभिभूत होकर उनकी प्रशस्ति में गीत गाने लगे। भगवान ने उनके माता पिता से कहा कि वे परेशान न हों क्योंकि भगवत्भजन से पहले अन्नामैया के लिए भौतिक सुखों का आनंद लेना आवश्यक था। यति के रूप में भगवान अन्नामैया को भगवान वेंकटेश्वर के मंदिर में ले गये। भगवान की मूर्ति को देखकर अन्नामैया मूर्च्छित हो गये। तत्पश्चात् वे कुछ भक्तजनों के साथ तिरूमला गये।

उनका विवाह उनकी चचेरी बहनों से हो जाता है और वे भजन गाते हुए तिरुमला में ही रहते है। माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् अन्नामैया ने सोचा कि उनका ईश्वर के पास जाने का समय हो गया है और वे शीघ्र ही ईश्वर में विलीन होकर पुन: "नडका तलवार" बन गये।

ANNAMAYYA

Telugu/35 mm/Colour/150 minutes

Producer: V. Doraswamy Raju; **Director-screenplay:** K. Raghavendra Rao; **Cast:** Nagarjuna Akkineni, Ramya Krishna, Suman, Bhanupriya; **Music:** M. M. Keeravani; **Lyrics:** Annamacharya Keerthanas, V. S. Murthy; **Camera:** Vincent, Ajay Vincent; **Editor:** A. Sreekar Prasad; Sound: M. Ravi

A mythological musical, this film is about the saint Annamayya who was born in Andhra to sing in praise of the Lord. Actually the Nadaka Sword of Lord Vishnu, Annamayya is born in a reincarnation as the son of Lakkamamba and Narayanasuri. From his childhood, he is very intelligent. But soon he gets fascinated by the beauty of his cousins and sings songs in their praise. His parents are told by the Lord that they need worry as he has to taste the earthly pleasures before singing the praise of the Lord.

Annamayya is taken to the temple of Lord Venkateswara by the Lord dressed as a Yathi. Seeing the idol of the Lord, Annamayya swoons. Later he follows certain devotees to Tirumala. Persuaded to marry his cousins, he settles down in Tirumala, singing the praise of the Lord. But after his parents die, Annamayya feels the time has come for him to go to the Lord, and he soon merges with the Lord, becoming the Nadaka Sword again.

भूमिगीता

कन्नड/35 मि.मी. /रंगीन/139 मिनट

निर्माता: आर. महादेव गौड़ा, **निर्देशक और पटकथा** केसरी हारवू, **संगीत** इलया राजा, **कलाकार:** अतुल कुलकर्णी, मंजू भाशिनी, सिद्दराज कल्याणकर, उमेश, विनय प्रसाद, **कैमरा:** सुरेन्द्र नाथ बेगुर, **सम्पादक:** के.बालु, **ध्वनि:** एस.महेन्द्रन, **गीतकार:** वी. मनोहर

यह फिल्म एव.सी. नागराजु की कन्नड़ लघु कहानी "गोला गोकुलाडा नादाधे" पर आधारित है। अधिक भूमि पर सिंचाई करने के उद्देश्य से सरकार नदी पर एक बांध बनाना चाहती हैं किन्तु इस प्रक्रिया में वन के एक भाग को भी शामिल करना पड़ेगा जिसमें एक समुदाय रहता है तथा जिनका मुखिया एक बूढ़ा झुर्रीदार व्यक्ति जीवैया है एक स्थानीय ठेकेदार रंगैया अपने हित के लिए उस समुदाय के लोगों को वहां से भगाने का हर संभव प्रयास कर रहा है एक सहायक आयुक्त भी उस समुदाय के लोगों को वहां से हटाने का प्रयास करता है किन्तु उसे मालूम होता है कि वह धन में विश्वास नहीं करते बल्कि वस्तु विनिमय में विश्वास करते हैं। इस दौरान अधिकारी उस समुदाय की प्रतीकात्मक बांसुरी प्राप्त कर लेता है। तथा जीवैया से कहता है कि यदि उसे वह बांसुरी वापस चाहिए तो वह उससे मुलाकात करने आ जाये। बाद में रंगैया समुदाय के एक लड़के जोगी की जूते से पिटाई करता है और तथा समुदाय के रीति के अनुसार उसे समुदाय से निकाल दिया जाता है। गांव को पुलिस चारों ओर से घेर लेती है तथा गांव भुखमरी की कगार पर होता है। रंगैया गांव में खाना देने के बहाने थैले में जूता छिपाकर ले आता है और इस प्रकार सभी को अपना घर छोड़ कर चले जाने के लिए मजबूर कर देता है।

BHOOMIGEETHA

Kannada/35mm/Colour/139 minutes

Producer: R. Mahadev Gowda; **Director-screenplay:** Kesari Harvoo; **Music:** Ilayaraja; **Cast:** Atul Kulkarni, Manju Bhashini, Siddaraj Kalyankar, Umesh, Vinaya Prasad; **Camera:** Surendranath Begur; **Editor:** K. Balu; **Sound:** S. Mahendran; **Lyricist:** V. Manohar

The film is a free adaptation of the Kannada short story "Golla Gokulada Nadathe" by L. C. Nagaraju. To bring more land under irrigation, the Governments wants to build a dam over the river. But this will mean submerging a part of the forest, and displacing an indigenous community that lives in this forest, headed by their wizened elderly chief Jeevaiah. A local contractor Rangaiah is tryng his best to displace the community for his own benefit. An Assistant Commissioner tries to throw out the community but learns that they do not believe in money economy and accept only barter economy.

Meanwhile, the Officer manages to get a symbolic flute of the community and demands that Jeevaiah come to see him if he wants it back. But Jeevaiah sees the trick. Later, a boy from the community, is ostracised for being beaten with shoed. The village is surrounded by the police and is on the verge of starvation. Rangaiah comes to the community under the pretext of bringing food but manages to get the whole village ostracised, forcing them to leave.

भूथक्कन्नडी

मलयालम/35 मि.मी./रंगीन/155 मिनट

निर्माता: एन.कृष्ण कुमार (उन्नी), **निर्देशक-पटकथा:** ए.के. लोहिता दास, **संगीत:** जॉनसन, **कलाकार:** ममूटी, श्री लक्ष्मी, एम.आर. गोपाकुमार, कलाभवन मार्ग, माला अरविन्दन, रेम्या, **कैमरा:** वेणु, **सम्पादक:** जी. मुरली, **ध्वनि:** बाबु, **कला निर्देशन:** प्रेम चन्द्रन।

जब इलैक्ट्रानिक घड़ियां लोकप्रिय हो गई तो मकेनिकल घड़ियों की मरम्मत करने वाले बेकार हो गये। इस फिल्म में घड़ीसाज अपने युवावस्था में जिससे प्यार करता था, उसकी बेटी को पिता का प्यार देता है। एक दिन उस लड़की को बलात्कार करके मार डाला जाता है। इससे घड़ी साज परेशान हो जाता है वह बलात्कारी को पकड़ कर पागलपन मे हत्या कर देता है।

जेल में वह जेलर से मिलता है जिसकी शक्ल हत्या किये गये व्यक्ति से मिलती है। जेल की दीवार की दरार में अपने आवर्धक लेन्स की सहायता से देखने पर घड़ीसाज पड़ोस की घाटी में अन्धों के समूह को देखता है। केवल एक लड़की जिसकी शक्ल बलात्कार की गई लड़की से मिलती है, अन्धी नहीं है। एक दिन वह जेलर को उस लड़की का पीछा एवं बलात्कार करते हुए देखता है।

बाद में घड़ीसाज़ जेलर पर झपट पड़ता है और उसे मारता है किन्तु बहुत से लोग उन्हें जबरदस्ती अलग कर देते हैं। जेल अधीक्षक जो घड़ी साज के साथ हमेशा दयालु रहता है, घड़ी साज की बात सुनता है और उस दरार में देखता है। वह जो कुछ देखता है उससे वह चौंक पड़ता है।

BOOTHAKKANNADI

Malayalam/35 mm/Colour//155 minutes

Producer: N. Krishna Kumar (Unni); **Director-screenplay:** A.K. Lohitha Das; **Music**: Johnson; **Cast**: Mammotty, Sri Lakshmi, M.R. Gopakumar, Kalabhavan Mani, Mala Aravindan, Remya; **Camera:** Venu; **Editor:** G. Murali; **Sound:** Babu; Art Direction: Prema Chandran;

When electronic watches came into vogue, those repairing mechanical watches had little to do. The watch repairer in the film starts everything around him in a highly magnified manner, as he is used to seeing things through the magnifying glass (bhoothakkannadi). The repairer gives fatherly love to a little girl, daughter of his teen-age love. One day, this girl is raped and killed. This upsets the repairer who spots and murders the rapist in a frenzy.

In jail, he meets a jailor who resembles the man whom he had killed. Looking through a crack in the wall of the jail with his magnifying glass, the repairer sees a group of blind people in a neighbouring valley. Only a girl, who looks like the girl who was raped, is not blind. One day he sees the jailor chasing that girl and raping her.

Later, the repairer pounces on the jailor and beats him up, but others forcibly separate them. The jail superintendent, who has always been kind to the repairer, listens to the repairer and then looks in the crack in the wall. What he sees surprises him.

बार्डर

हिन्दी/35 मि.मी./रंगीन/185 मिनट

निर्माता-पटकथा: जे.पी. दत्ता, **संगीत:** अनु मलिक, **गीत:** जावेद अख्तर, **कलाकार:** सनी देओल, जैकी श्राफ, सुनील शेट्टी, अक्षय खन्ना, पूजा भट्ट, तब्बू, राखी, **कैमरा:** ईश्वर बिदरी, **सम्पादक:** दीपक विरकुड विलास रानाडे, **ध्वनि:** विनोत पोत्दार, **कला निर्देशन :** रत्नाकर फडके, **वेशभूषा:** विंदिया दत्ता।

अपनी पत्नी के विरोध के बावजूद मेजर कुलदीप सिंह 23 पंजाबी रेजिमेन्ट के 120 जवनों के साथ सीमा पर लोंगेवाल में सीमा सुरक्षा दल, जो वहां तैनात थी के स्थान पर अपनी स्थिति संभालने के लिए भेजा गया।

जो लोग कुलदीप के साथ शामिल हुए उनमें सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट धर्मवीर भी था जिसने अपनी अंधी मां और बचपन के प्यार को अपने घर पर छोड़ दिया था। इसके अतिरिक्त एक और फौजी भैरो सिंह था, जो सीमा सुरक्षा बल था कमाण्डर था, जिसने अपनी एक दिन की दुल्हन को पीछे छोड़ दिया तथा आर्मी बटालियन में शामिल होने का निर्णय लिया।

दुश्मन 40 चीनी टी -59 टैंकों से लैस और हजारों थल सेना के दस्तों के साथ पांच दिसम्बर की रात में उन पर हमला कर देते हैं। कुलदीप विंग कमाण्डर बजवा से सम्पर्क करता है और उसे मालूम होता है कि रात को हंटर्स से काम नहीं लिया जा सकता। कुलदीप जानता था कि उसके पास ऊजियों की संख्या बहुत कम है किन्तु उसके पास कोई विकल्प नहीं था। अन्त में दुश्मनों की हार होती है किन्तु उसके लगभग सभी आदमी मारे जाते है।

BORDER

Hindi/35 mm/Colour/185 minutes

Producer-Director-screenplay: J. P. Dutta; **Music:** Anu Malik; Lyrics: Javed Akhtar; **Cast:** Sunny Deol, Jackie Shroff, Sunil Shetty, Akshaye Khanna, Pooja Bhatt, Tabu, Rakhee, **Camera:** Ishwar Bidri; **Editor:** Deepak Wirkud, Vilas Ranade; **Sound:** Vinod Potdar; **Art Director**: Ratnakar Phadke; **Costume Design:** Bindia Dutta

Despite the protests of his wife, Major Kuldeep Singh was sent to the border in Longewala to hold his position with 120 men of the 23 Punjabi Regiment and replace the Border Security Froce stationed there.

Among the men to join Kuldeep was Second Lieutenant Dharamvir, the second in command who had left his blind mother and his childhood love Kamla at home. Another welcome addition was Bhairon Singh, the commander of the BSF who had left behind his bride of one day and opted to be attached the army battalion. The enemy armed with forty tanks of T59 Chinese make and backed by thousands of infantry mounted an attack on December five night. Kuldeep contacted Wing Commander Bajwa, only to be told that hunters could not be operational at night. Kuldeep knew he was outnumbered, but had no choice. The enemy was ultimately defeated, but almost all his men were killed.

दहन

बंगला /35 मि.मी. /रंगीन/ 145 मिनट

निर्माता: बिजय अग्रवाल, कल्पना अग्रवाल, **निर्देशक-पटकथा:** ऋतु पर्ण घोष, **कलाकार:** इन्द्राणी हल्दर, ऋतुपर्ण सेना गुप्ता, ममता शंकर, सुचित्रा मित्रा, **कैमरा:** हरि नायर, **संगीत :** देबज्योति मिश्रा, परोया बनर्जी, **सम्पादक :** ए.के. मिला, **ध्वनि:** चिन्मय नाथ, **कला निर्देशक:** सूर्जा चटर्जी, सुदेषणा राय

झिनुक एक युवा स्कूल अध्यापक है जिसके पिता एक प्रोफेसर हैं। वह स्वतंत्र है तथा जल्द ही तुनीर नामक एक व्यक्ति से विवाह करना चाहती है, जो उसकी पसंद का व्यक्ति है। रोमिता एक गृहिणी है। उसका पिता अपने समूह में एक उच्च व्यक्ति है। दोनों महिलायें उस समय मिलती है जब कुछ लोग रोमिता के पति को घायल करके उसके साथ छेड़छाड़ करते हैं और झिनुक हस्तक्षेप करती है। अगले दिन समाचार ने उसकी बहुत सराहना की। किन्तु रोमिता के सास-ससुर लोगों के प्रश्नों से परेशान हो जाते हैं। झिनुक उस समय तक इस मामले का पीछा करती है जब तक कि पुलिस छेड़ छाड़ करने वालों को गिरफ्तार न कर ले किन्तु उनके जेल जाने पर वह दु:खी हो जाती है। दोनों अपने परिवार की नाराजगी के बावजूद मामले का पीछा करने के लिए दृढ़संकल्प होती हैं। किन्तु रोमिता अदालत में अपने पारिवारिक दबाव के कारण दोषियों को पहचानने से इंकार कर देती है तथा झिनुक अपने प्रयासों में असफल हो जाती है। किन्तु जैसे ही वह अपने विवाह की तैयारी प्रारंभ करती है, वह सुनती है कि रोमिता अपना घर छोड़ रही है।

DAHAN

Bengali/35 mm/Colour/145 minutes

Producer: Bijay Agarwal, Kalpana Agarwal; **Director-Screenplay:** Rituparno Ghosh; **Cast:** Indrani Halder, Rituparna Sengupta, Mamata Shankar, Suchitra Mitra; **Camera:** Hari Nair; **Music:** Debjyoti Mishra, Paroma Banerjee; **Editor:** A. K. Mitra; **Sound:** Chinmoy Nath; **Art Director:** Surja Chatterjee, Sudeshna Roy

Jhinuk is a young school teacher whose father is a professor, upwardly mobile. She is independent, about to get married to Tunir, the man of her choice. Romita is a housewife. She has just got married to Palash, a man of her father's choice. Her father is quite high in the corporate ladder.

Jhinuk intervened when some men tried to molest Romita after injuring her husband and so the two women met. The next day's newspapers hailed her as a true samaritan. But Romita's in-laws were upset when people started asking embarrassing questions. Jhinuk pursued the matter till the molestors were arrested, but was sorry when they got bail. The two were determined to pursue the matter despite the anger of their families.

But in court, Romita under familial pressure refused to identify the culprits and Jhinuk failed in her attempt. But as she began preparations for her marriage, she heard that Romita was leaving her home.

धन्ना

हिन्दी/16 मि.मी. /रंगीन/ 115 मिनट

निर्माता: फिल्म प्रभाग, **निर्देशक-पटकथा :** दीपक राय, **संगीत:** श्याम बनर्जी **कलाकार:** धनराज, किरण शर्मा, शिरीश दब्बल, अंकित कुमार, **कैमारा:** एस. रामचन्द्र, **सम्पादक:** श्री राय, **कला निर्देशन:** सुरेन राजन, **संगीत:** के.एस. शिव दास

धनराज एक चौदह वर्षीय लड़के को गांव में सभी धन्ना पुकारते। किन्तु वह मानसिक रूप से अविकसित था। उसका चाचा महिपाल सिंह उसका ध्यान रखता था। दयालु अध्यापक के प्रोत्साहन देने पर धन्ना का नाम गांव के स्कूल में लिख लिया जाता है। जब उसके गांव में कुछ तकनीकी लोग हैंड पम्प लगाने के लिए बड़े-बड़े ड्रिल के साथ आते हैं ताकि ग्रामवासियों को पीने का पानी उपलब्ध करा सकें तो वह और उसका युवा मित्र राजन बहुत ध्यान से उनके काम देखते हैं। वे उनके उत्सुकता से भरे प्रश्नों के उत्तर दे देते हैं। एक दिन जब वे चले जाते हैं तो हैंड पम्प सूख जाता है। ग्रामीण निर्धनता के कारण शहर से मकेनिक बुलाने में असमर्थ होते हैं, जमींदार भी उनकी सहायता नहीं करता क्योंकि ग्रामीणों ने चुनाव के दौरान उसका पक्ष नहीं लिया था। केवल एक मकेनिक वहां उपलबध था और वह भी बीमार हो जाता है। पानी की समस्या जटिल हो जाती है। इस स्थिति में धन्ना आग्रह करता है कि वह पम्प की मरम्मत कर सकता है और औजार की मांग करता है। खोने के लिए कुछ रहता नहीं है अत: प्रमुख उसकी बात मान लेता है। इस प्रकार वह बालक जिसे अब तक बेकार समझा जाता था पम्प की मरम्मत कर देता है।

DHANNA

Hindi/16mm/Colour/115 minutes

Producer: Films Division; **Director-screenplay:** Deepak Roy; Music: Shyam Banerjee; **Cast:** Dhan Raj, Kiran Sharma, Shirish Dabbal, Ankit Kumar; **Camera:** S. Ramachandra; **Editor:** Sri Sai; **Art Direction**: Suren Rajan; **Sound:** K. S. Shivdas

Dhanraj, generally called Dhanna by everyone in the village, is a fourteen year old boy. But he is mentally handicapped. His uncle Mahipal Singh cares for him. After some persuasion, Dhanna is admitted to the village school by the kind-hearted teacher. When some technicians come with large drills to ding hand pumps to provide villagers with potable water, he and his young friend Rajan are curious. They tolerate him and answer his questions.

One day after they have gone away, the hand pumps dry up. The villagers, too poor to call for a mechanic from the city, get no help from the landlord as they did not support him in the elections. The only mechanic who looks after the pumps is taken ill. The water problem crops up.

In such a situation, Dhanna insists he can repair the pumps and wants tools. Having nothing to lose, the headman agrees. And lo and behold, the child who had been given up as an imbecile repairs the pumps.

दिल तो पागल है

हिन्दी/35 मि.मी. /रंगीन/ 179 मिनट

निर्माता- निर्देशक: यश चोपड़ा, **संगीत:** उत्तम सिंह, **गीत:** आनन्द बक्शी, **कलाकार:** शाहरूख खान, माधुरी दीक्षित, करिश्मा कपूर, फरीदा जलाल, **कैमरा:** मनमोहन सिंह, **सम्पादक:** वी.वी. कार्निक, **ध्वनि:** अनुज माथुर, **पटकथा:** यश चोपड़ा, पमेला चोपड़ा, तनुजा चन्द्रा

निशा एक प्रशिक्षित नर्तकी है, जिसे विश्वास है कि प्रेम ही मिलता है और निश्चित तौर पर उसका सपना सच हो जाएगा। किन्तु राहुल, जिसके ग्रुप के साथ वह काम करती है, प्रेम पर विश्वास नहीं करता तथा उसकी समझ में नहीं आता कि पूरे जीवन दो लोग एक साथ कैसे रह लेते है। अत: वह यह नहीं समझ पाता कि निशा उसका इतना ध्यान क्यों रखती है।

वे दोनों एक लड़की पूजा से मिलते हैं जिसे पारम्परिक नृत्य से प्रेम है। पूजा को यह विश्वास है कि उसके लिए कहीं न कहीं कोई व्यक्ति है जिससे वह मिलेगी। शर्मीली पूजा उनके ग्रुप में शामिल हो जाती है। निशा के मनोभावों को जाने बिना धीरे धीरे राहुल और पूजा में प्रेम हो जाता है। अन्त में निशा को अपना प्रेम त्यागना पड़ता है क्योंकि वह समझ लेती है कि राहुल और पूजा एक दूसरे के लिए बने हैं।

DIL TO PAGAL HAI

Hindi/35 mm/Colour/179 minutes

Producer-Director: Yash Chopra; **Music:** Uttam Singh; **Lyrics:** Anand Bakshi; **Cast:** Shah Rukh Khan, Madhuri Dixit, Karisma Kapoor, Farida Jalal, Akshay Kumar; **Camera**: Manmohan Singh; **Editor:** V. V. Karnik; **Sound:** Anuj Mathur; **Screenplay:** Yash Chopra, Pamela Chopra, Tanuja Chandra

Nisha is a trained dancer who believes that love is friendship and is sure her dreams will come true. But Rahul in whose group she works does not believe in love and cannot understand how two people can live together all their lives. He therefore fails to appreciate why Nisha cares so much for him.

The duo meet a girl, Pooja, who loves traditional dance. Pooja strongly believes that somewhere, someplace, there is a man for her and she will meet him. The shy Pooja joins the group. Gradually, Pooja and Rahul fall in love, unaware of Nisha's sentiments for him. Ultimately, Nisha has to give up her love for she knows Rahul and Pooja are made for each other.

इनू स्वान्थम जानकीकुट्टी

मलयालम/35 मि.मी. /रंगीन/ 140 मिनट

निर्माता-पी.वी. गंगाधरन **निर्देशक:** टी. हरिहरन **संगीत:** संजय चौधरी,

यह फिल्म चौदह वर्षीय जानकीकुट्टी के एकालाप के रूप में है। उसके परिवार में उसकी मां, बड़ा भाई तथा बहिन है। उसकी मां की बड़ी बहिन तथा उसकी बेटी सरोजिनी भी उनके साथ रहते है। परन्तु कोई भी उसका साथ नहीं चाहता जिसके कारण वह वास्तविक दुनिया के भीतर व बाहर रहना शुरू कर देती है।

तब एक बूढ़ी रिश्तेदार, जिसके बच्चों ने उसे छोड़ दिया था, उनके घर आ जाती है, जिसे जानकीकुट्टी की मां अनिच्छा के स्वीकार कर लेती है। परन्तु जानकी कुट्टी तथा बूढ़ी औरत शीघ्र ही मित्र बन जाते हैं। तब एक यक्षिणी उसके जीवन में उसका साथ देने के लिये प्रवेश करती है। तथा इसके साथ वास्तव में खेलती है। उसका परिवार सोचता है कि वह प्रेत से ग्रस्त है तथा तंत्र मंत्र से उसका इलाज करते है।

चचेरी बहिन की शादी पक्की हो गई तथा जानकी कुट्टी भास्करन के लिए दुःखी होती है तथा चाहती है कि यक्षिणी उसे बचाने के लिये उसका अपहरण कर ले। परन्तु यक्षिणि को यह स्वीकार नहीं है क्योंकि उसका अपना विवाहित जीवन सुखी नहीं था।

ENNU SWANTHAM JANAKIKUTTY

Malayalam/35 mm/Colour/140 minutes

Producer: P. V. Gangadharan; **Director:** T. Hariharan; **Music:** Sanjay Chowdhary; **Cast:** Sarath Das, Jomol, Valsala Menon, Chakyar Rajan, Chanchal; **Camera:** Hari Nair; **Sound:** Sampath; **Editor:** N. S. Mani; **Art Diretor:** S. Radhakrishnan

The film is in the form of a monologue of a fourteen-year old girl, Janakikutty. Her family consists of her mother, and elder brother and sister. Her mother's elder sister and her daughter Sarojini also stay with the family. But none of them seem to want her company, and so she starts to live in and out of the real world.

Then an old woman relation, whose own children had deserted her, arrived in their house, to be accepted grudgingly by Janakikutty's mother. But Janakikutty and the old woman soon became friends. And then, a Yakshi (female spirit) entered her life to keep her company, and actually played with her. The family think she is possessed and practise witchcraft to cure her.

Cousin Sarojini's marriage is fixed, and Janakikutty feels sorry for Bhaskaran, and wants him to be kidnapped by the Yakshi to save him. But Yakshi is unwilling as she had an unhappy married life.

हजार चौरासी की मां

हिन्दी/रंगीन/35 मि.मी./146 मिनट

निर्माता-निर्देशक : गोविन्द निहलानी, **संगीत :** देबज्योति मिश्रा, **कलाकार:** जॉय सेनगुप्ता, जया बच्चन, अनुपम खेर, सीमा बिस्वास, नंदिता दास **कैमरामैन/पटकथा:** गोविन्द निहलानी, **संपादक:** दीपा भाटिया, **ध्वनि :** प्रबल प्रधान

यह कहानी सत्तर के दशक में शुरू हुए नक्सलबाड़ी वामपंथी आंदोलन का चित्रण करती है। यह आंदोलन कृषि-मजदूरों को कम भुगतान के खिलाफ ग्रामीण क्षेत्र से शुरू होकर शहरों तक फैल गया। यह फिल्म प्रसिद्ध लेखिका महाश्वेता देवी के उपन्यास 'हजार चौरासी मां' पर आधारित है। यह कहानी एक ओर एक मां की आत्मसंतुष्टि की कहानी है। वहीं दूसरी ओर यह समकालीन राजनीति और व्यक्तिगत मनोभावों के बीच सम्बधों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी करती है।

उच्च मध्यम वर्गीय परिवार की अधेड़ महिला सुजाता चटर्जी कलकत्ता के एक बैंक में कार्य करती है। एक दिन सुबह जागने पर उसे खबर मिलती है कि उसका सबसे छोटा और प्रिय बेटा ब्रती मर चुका है। उसकी लाश पुलिस शवगृह में है जिसका नम्बर 1084 है।

इस घटना से वह उन तथ्यों की खोज में लग जाती है, जिसके फलस्वरूप उसका प्यारा बेटा ब्रती इस वामपंथी आंदोलन में सक्रिय हुआ था। अभी तक वह औरत होने के नाते वह बिना किसी विरोध के चुपचाप सब कुछ झे जाती है। वह अपनी उन कमियों पर साक्षात्कार भी करती है और जिसकी वजह से उसका बेटा उग्रवादी बन जाता है।

HAZAAR CHAURASI KI MA

Hindi/35 mm/Colour/146 minutes

Producer-Director: Govind Nihalani; **Music:** Debajyoti Mishra; **Cast:** Joy Sengupta, Jaya Bachchan, Anupam Kher, Seema Biswas, Nandita Das; **Camera-screenplay:** Govind Nihalani; **Editor:** Deepa Bhatia; **Sound:** Prabal Pradhan

Set in the period of the Naxalbari Leftist Movement of the early seventies which had begun in rural areas for minimum wages for agricultural labour and spread to the cities, the film is based on wellknown author Mahasweta Devi's Bengali novel "Hazaar Chaurashir Maa". It tells the story of a mother who is jerked out of her complacency into psychologically analysing the complex relationships between the personal and the political.

Sujatha Chatterjee, a middle-aged traditional upper middle class woman employed in a bank in Calcutta is woken up one morning with the shocking news that her youngest and favourite son Brati is dead and his body is in the police morgue, corpse number 1084.

This sets her off on a voyage of discovery, during which she also tries to understand the motivations that propelled her son into the leftist movement. And for a woman who had been unprotesting and accepting her fate complacently, she also begins to recognize her own alienation as a woman.

इरुवर

तमिल/रंगीन/35 मि.मी./163 मिनट

निर्माता-निर्देशक: मणिरत्नम **संगीत :** ए.आर. रहमान, **गीत :** वैरामुथु, **कलाकार :** मोहन लाल, प्रकाश राज, ऐश्वर्या राय, नसीर, तब्बू, गौतमी, **कैमरा :** संतोष सिवन,**संपादक:** सुरेश उर्स, **कला निर्देशक:** समीर चन्द्र, **ध्वनि :** वी.एस. मूर्ति, ए.एस. लक्ष्मीनारायण

यह कवि और उभरते राजनीतिज्ञ सेलवम तथा उदीयमान अभिनेता आनन्दन की कहानी है। सेलवम अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित होने लगता है और आनन्दन अभिनय के क्षेत्र में।

आनन्दन और सेलवम दोनों मिलकर एक फिल्म बनाते हैं जिसमें आनन्दन अभिनेता और सेलवम लेखक। परंतु फिल्म पूरी नहीं हो पाती। सेलवम प्रगतिशील ग्रुप का हिस्सा है जिसका नेता वेलुथम्पी है।

आनन्दन को शीघ्र ही एक हीरो की भूमिका मिलती है और सेलवम को गीतकार की। आनन्दन गरीबों और शोषितों का मसीहा बन कर उभरता है। सेलवम पार्टी का नेता और प्रवक्ता बन जाता है।

परन्तु विरोध फिर उत्पन्न हो जाते हैं, जब आनन्दन पार्टी में आ जाता है और वेलुथम्पी उसको महत्व देने लगता है। एक अभियान के दौरान आनन्दन घायल हो जाता है। सहानुभूति-लहर के कारण पार्टी जीत जाती है और सेलवम मुख्यमंत्री बन जाता है। कशमकश तब तक चलती रहती है, जब तक कि आनन्दन उसे छोड़कर अपनी नई पार्टी नहीं बना लेता। सत्ता के लिए संघर्ष फिर शुरू हो जाता है।

IRUVAR

Tamil/35 mm/Colour/163 minutes

Producer-Director: Mani Ratnam; **Music:** A. R. Rahman; **Lyrics:** Vairamuthu; **Cast:** Mohan Lal, Prakash Raj, Aishwarya Rai, Naseer, Tabu, Gowthami; **Camera:** Santosh Sivan; **Editor:** Suresh Urs; **Art Director:** Samir Chanda; **Sound:** V. S. Murthy, A. S. Laxminarayan;

This is the story of two men, Selvam who is a poet and a rising politician, and Anandan who is a budding actor.

Anandan and Selvam met to work together on a film of which Anandan was to be the hero and Selvam the writer, but the film gets shelved. Selvam is part of a progressive group of which Veluthambi is the leader.

Anandan soon gets another role as a hero and Selvam is the song writer. Anandan soon becomes an icon as a messiah of the downtrodden and Selvam is an orator of grand stature and the party's spearhead.

But differences crop up when Anandan joins the party and Veluthambi starts giving him importance. After a campaign during which Anandan's injury in a freak accident gets sympathy, the party wins and Selvam becomes chief minister. This leads to turmoil until Anandan leaves and forms his own party. The struggle for power begins.

कलियट्टम

मलयालम/रंगीन/35 मि.मी./130 मिनट

निर्माता : के. राधाकृष्णन, **निर्देशक:** जयराज, **संगीत :** के. दामोदरन नम्बूदिरी, **कलाकार :** सुरेश गोपी, मंजु वारिअर, ए.डी. लाल, बिंदु पाणिकर, **कैमरा :** एम.जे. रामाकृष्णन्, **संपादक:** बी. लेनिन, वी.टी. विजयन्, **ध्वनि :** कृष्णन् उन्नी, हरि, **कला निर्देशन :** बसंत

यह शेकसपियर के प्रसिद्ध नाटक 'ओथेलो' का ही घटनाक्रम तथा समानता रखने वाली कहानी है जिसे केरल के परिदृश्य में पारंपरिक कला रूप 'थेय्यम' में पिरोया गया है। थेय्यम के प्रदर्शक के लिए यह कहा जाता है कि जब वह नकाब और वेशभूषा में हों तो केवल ईश्वर के आयामों को आत्मसात करे। इस कला के प्रदर्शक वन्नान और मालायन वर्ग के लोग होते हैं।

कन्नन पेरुमलयन थेय्यम कलाकार है। वह उच्चजातीय सुंदरी थमारा से प्रेम करता है। थमारा के पिता इस विवाह के विरुद्ध थे। इस तरह कन्नन ओथेलों में रुपांतरित होता है। एक अन्य थेय्यम कलाकार पाणियम विदूषक का काम करता है जो बाद में बुरी प्रवृति का होकर इयागों में परिवर्तित हो जाता है।

पाणियन का विद्वेष उस समय चरम पर पहुंच जाता है, जब कन्नन गुस्से में अपनी पत्नी की हत्या कर देता है, जब उसकी दैवी प्रतिभा अधूरी रह जाती है और थेय्यम के रूप में सज्जित नहीं हो पाता।

KALIYATTAM

Malayalam/35 mm/Colour/130 minutes

Producer: K. Radhakrishnan; **Director:** Jayaraaj; **Music**: K. Damadoran Nambudhiri; **Cast**: Suresh Gopi, Manju Warrier, A. D. Lal, Bindu Panicker; **Camera**: M. J. Ramakrishnan; **Editor**: B. Lenin, V.T. Vijayan; **Sound**: Krishnan Unni, Hari; **Art Direction:** Basanth

The sequences and events of the Shakespeare play "Othello" have been set against the backdrop of the traditional art form Theyyyam in tune with the Kerala background. The traditional concept of Theyyam is that the performer assumes dimensions of God when he is in his mask and crest. It is performed by members of the Vannan and Malayan communities.

An ace Theyyam artist, Kannan Perumalayan, falls in love with a beautiful upper caste damsel Thamara against the wishes of her landlord father. Thus Kannan has been transformed into Othello. Paniyan, a Theyyam artist who provides comic relief but later starts feeling devilish delight, is Iago.

Paniyan's malevolence reaches its culmination when Kannan murders his wife in a fit of anger when his divinity is left incomplete, as the process of dressing up as theyyam has not been completed.

मैं मां पंजाब दी

पंजाबी/रंगीन/35 मि.मी./160 मिनट

निर्माता : देवेन्द्र वालिया, **निर्देशक**: बलवन्त दुल्लत, **कलाकार** : मनोज खुल्लर

यह एक ऐसी औरत की कहानी है जो मां है और अपने बच्चों की अकृतज्ञता के बावजूद उनके लिए त्याग का भाव रखती है।

नसीबों के पति मनमीत सिंह की एक दुर्घटना में अचानक मौत को जाती है। अपने पति की अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए नसीबों अपने बेटों दीपा और जीता को शहर पढ़ाई करने के लिए भेजती है। इसके लिए वह अपनी जमीन भी बेचती है और पारंपरिक पोशाक फुलकारी भी बेचती है। शहर में दीपा और जीता अमीर परिवार की लड़कियों से शादी कर लेते है और उसकी खबर भी परिवार को नहीं लगने देते। दीपा और उसकी पत्नी रीना अपने फ्लैट की किस्त चुकाने के लिए गांव की जमीन को बेचने की साजिश करते है। वह नसीबों को आंखें टेस्ट कराने के बहाने से शहर लाता है। अपने बेटों की गृहस्थी देखकर एक बार उसे गहरा झटका लगता है। उसके बच्चे उसके साथ बुरा व्यवहार करते है और एक दिन उसकी जमीन हथियाकर उसे घर से निकाल देते हैं।

परंतु एक हितैषी गुरमुख सिंह उसको अपने घर ले जाता है। वहां वह फुलकारी की सिलाई सिखाना शुरू कर देती है। जल्दी ही वह एक निर्माण यूनिट खोल लेती है। अब उसके पास धन है और वह अपने नालायक बेटों को सही रास्ते पर लाने के लिए सबक सिखाती है।

MAIN MAA PUNJAB DEE

Punjabi/35 mm/Colour/160 minutes

Producer: Devendra Walia; **Director**: Balwant Dullat; **Cast**: Manjot Kular

This is the story of a woman and mother who knows that she has to make sacrifices for her children, however unworthy or undeserving they may be.

Naseebo is widowed suddenly when her husband Manmeet Singh dies in an accident. She sends her son Deepa and Jeeta to the city to study, making ends meet by tilling her land and selling 'phulkari', traditional womenwear.

In the city, Deepa and Jeeta tells lies their family and marry girls from rich families. Deepa and wife Reena plan to sell their village land to repay the instalment on their flat and bring the Nasebo to the city on the pretext of getting her eyes checked. But the news of her sons having got married comes as a jolt to her. She is illtreated by her sons who cheat her out of her property, and thrown out of the house.

But an old sympathiser Gurmukh Singh brings her to his house where she starts teaching stitching 'phulkari.' They soon start a manufacturing unit. With her wealth, she goes about teaching her sons the lessons they well deserve.

MANGAMMA

Malayalam/35 mm/Colour/104 minutes

Producer: National Film Development Corporation; **Screenplay-Director**: T. V. Chandran; **Cast:** Nedumudi Venu, Revathy, Vijay Raghavan, Thilakan; Music: Johnson; **Camera:** Sunny Joseph; **Sound:** T. Krishna Unni; **Editor**: Venu Gopal

Set in Palakkad which is on the border with Tamil Nadu, the film is set in two periods: 1960 when the first Communist ministry was dismissed in Kerala, and 1976 when National Emergency had been imposed.

Coming to Palakkad after leaving her village, Mangamma gets a job in a tea shop run by Nair, who accepts her as his wife. Meanwhile, she has become very friendly to a young boy Velayudhan who looks up to her as a mother.

Sixteen years later, she is now the mother of a son. Velayudhan is a very quiet recluse and one day, he disappears. Nair brings Balan in his place. Balan, a former lover of Mangamma is now only seeking shelter. Later a contractor conspires with the police to take over their land and destroys their tea shop, with the police arresting Nair, this time killing him during interrogation to find out the whereabouts of Velayudhan, who is a political worker. Seeing the spirit of Velayudhan who is being pursued by the police, she decides to re-open her shop the next day.

मंगम्मा

मलयालम/रंगीन/35 मि.मी./104 मिनट

निर्माता : रा.फि.वि.नि., **पटकथा-निर्देशक:** टी.वी. चन्द्रन, **कलाकार :** नेडु मुडी वेणु, रेवती, विजय राघवन्, तिलकन **संगीत :** जॉनसन, **कैमरा :** सन्नी जोसेफ, **संपादक:** वेणु गोपाल, **ध्वनि :** टी. कृष्ण उन्नी

कहानी तमिलनाडु की सीमा पर बसे पलाक्काड़ पर केन्द्रित है। फिल्मों में दो कालों का चित्रण है। 1960 में जब केरला की पहली कम्यूनिस्ट सरकार को भंग किया गया तथा दूसरा 1976 में जब देश को राष्ट्रीय आपात्काल में झोंक दिया गया।

अपने गांव को छोड़कर मंगम्मा पलाक्काड़ में आती है। वहां वह नायर की चाय की दुकान पर काम करने लगती है। उसके पिता की मृत्यु के बाद नायर उसे अपनी पत्नी बना लेता है। इसी बीच, मंगम्मा वेलायुधन के साथ हिल-मिल जाती है जो उसे मां जैसा आदर देता है।

सोलह वर्ष बाद वह अपने बेटे की मां बनती है। वेलायुधन अब भी बहुत खामोश रहता है, एक दिन वह गायब हो जाता है। नायर उसके स्थान पर बालन को लाता है। बालक मंगम्मा का पुराना प्रेमी है जो अब सिर्फ आश्रय चाहता है। बाद में एक ठेकेदार पुलिस के साथ साजिश कर नायर की जमीन हथिया लेता है और उसकी चाय की दुकान तोड़ देता है। पुलिस नायर को पकड़ लेती है और पूछताछ के दौरान मार देती है। वे राजनीतिक कार्यकर्ता वेलायुधन के बारे में उससे जानकारी चाहते थे। वेलायुधन की भावना को देखते हुए मंगम्मा अगले दिन दोबारा चाय की दुकान खोलने का निश्चय करती है।

मूंगरिना मिंचू

कन्नड़/रंगीन/35 मि.मी./120 मिनट

निर्माता : जय जगदीश, आर दुश्यंत सिंह, निर्देशक: एस.वी. राजेन्द्र सिंह बाबू, गीत-संगीत : वी. मनोहर, कलाकार : रमेश, शिल्पा, लोकेश, सुमन, कैमरा : बी.सी. गौरी शंकर, संपादक: सुरेश उर्स, कला निर्देशक: कृष्णाचारी

चेतना बंगलौर में एक सेल्समैन है जो सब कुछ अपनी प्रेयसी उषा से विवाह करने के लिए कर रहा है। पर वे निश्चय करते हैं कि वे शादी चेतन के शिमोगा जिले के तीर्थाहल्ली से अपने व्यापारिक कार्य से लौट आने के बाद करेंगे।

बस में उसकी इन्दु नाम की एक बहुत दुखी लड़की से मुलाकात होती है। वह उसे बताती है कि उसे उसके पुरुष मित्र ने धोखा दिया है। वह उस मंदिर में नहीं पहुंचा, जहां उन दोनों को विवाह करना था। अब अगर विवाह एस्टेट के मालिक के बेटे से कर देंगे जिसे वह पसंद नहीं करती। चेतन उसका पति बनने का नाटक करके उसकी मदद करने को कहता है। ये सब नाटक दो दिन के लिए था किंतु इस सब में दस दिन लग जाते है।

इस दौरान, इंदु सच में उससे प्रेम करने लगती है। वह खुद भी इंदु और उषा के बीच फंस जाता है। उषा की एक दुर्घटना में मृत्यु के सदमें से शराबी बन जाता है। अब इंदु उस की सहायता करती है।

MOONGARINA MINCHU

Kannada/35 mm/Colour/120 minutes

Producer: Jai Jagdish, R. Dushyant Singh; **Director**: S.V. Rajendra Singh Babu; **Cast**: Ramesh, Shilpa, Lokesh, Suman; **Camera**: B. C. Gowri Shankar; Sound: Hara; **Lyrics-Music**: V. Manohar; **Editor**: Suresh Urs; **Art Director**: Krishnachari

A film that deals with a very typical story in a light style. Chethan is a salesman in Bangalore who is all set to get married to his beloved Usha. But they decide that the marriage should take place after his return from his business trip to Thirthahalli in Shimoga District.

On the bus, he meets a young girl, Indu, who is very depressed. She tells him that she has been led down by her boyfriend as he did not turn up at the temple where they were to be married. If she returns home unmarried, she will be married off to a neighbouring estate owner's son whom she dislikes. Chethan offers to help her by pretending to be her husband for just two days, but somehow this gets stretched to ten days.

During this time, Indu genuinely falls in love with him, and he is torn between Usha and Indu. When he hears of the passing away of Usha in an accident, he turns alcoholic. Now it is Indu's turn to help him.

रामायणम्

तमिल/रंगीन/30 मि.मी./157 मिनट

निर्माता-पटकथा : डा. एम.एस. रेड्डी, **निर्देशक:** गुणाशेखर, **संगीत :** माधव पेड्डी सुरेश, **कलाकार :** मा. एन टी आर, बेबी स्मिता माधव, मा. अरुण गंगाधर, बेबी वसुंधरा, बेबी स्वाति, **कैमरा :** शेख वी. जोसेफ,**गीत :** मालेमले, **वेशषभूषा :** बाबजी, **संपादक:** बी.बी. रेड्डी, **कला निर्देशक:** भास्कर राजू, **ध्वनि :** स्वामिनाथन, **विशेष प्रभाव :** क्रेस्ट कम्युनिकेशन्स

फिल्म में काम करने वाले सभी कलाकार तीन से बारह वर्ष की आयु के बच्चे है। फिल्म निर्देशक ने इन बच्चों की आयु के अनुसार ही सेटों का निर्माण किया है। फिल्म प्राचीन ग्रंथ रामायण पर आधारित है।

राम दृढ़ इच्छा शक्ति तथा संयमित जीवन के प्रतिनिधि है। सीता आदर्श स्त्री और दृढ़ चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है। लक्ष्मण सेवा भाव और मानवता के प्रतीक है तथा रावण ऐसा पात्र है, जिसमें मानवीय स्वभाव की उच्चता और निकृष्टता दोनों हैं।

राजा दशरथ की तीसरी रानी कैकेयी राजा से दो वरदान मांगती है। पहले वरदान के फलस्वरूप राम को वनवास मिलता है। लंका का राजा रावण चल-प्रपंच द्वारा सीता का अपहरण कर कैद कर लेता है। वह आशा रखता है कि वह उसे विवाह के लिए मना लेगा। राम और लक्ष्मण हनुमान की सहायता से रावण की सेना को परास्त कर सीता को मुक्त करते हैं।

RAMAYANAM

Telugu/35 mm/Colour/157 minutes

Producer-screenplay: Dr M. S. Reddy; **Director**: Gunasekhar; **Music**: Madhav Peddi Suresh; **Cast:**Master NTR,Baby Smitha Madhav,Master Arun Gangadhar, Baby Vasundara,Baby Swati; **Camera**: Sekhar V. Joseph, **Lyrics**: Mallemale; **Art Director**: Bhaskara Raju, **Costumes**: Babji; **Editor**: B. B. Reddy; **Sound**: Swaminadhan; **Special Effects**: Crest Communications;

The film is unique in that the entire cast is that of 4000 children aged between three and twelve. And to accommodate the young stars, the filmmaker had especially constructed sets to suit the heights of the children. The film is based on the ancient epic Ramayana.

Rama represents strong will and righteous living, Sita represents ideal womanhood and strength of character, Lakshmana represents humility and service, and Ravana is a character of multi-dimensional contrasts: the best and the worst in human nature reach demonic proportions.

Kaikeyi, one of the three wives of King Dasaratha asks two boons, thus banishing Rama to the forests. Ravana, the demonic king of Lanka, takes away Seeta by creating illusions and imprisons her, hoping he can coerce her into marrying him. Rama and his brother Lakshmana with the help of Hanuman and his Army battle Ravana and vanquish him, thus liberating Sita.

समानथारंगल

मलयालम/35 मि.मी. /रंगीन/ 120 मिनट

निर्माता- निर्देशक: यश.बालचन्द्र मेनन, **कलाकार:** एस.बालचन्द्र मेनन, रेणुका, सुकुमारी, अखिल, **कहानी-पटकथा-संगीत एवं सम्पादक:** एस. बालचन्द्र मेनन

यह संभवत: प्रथम फिल्म है जो भारतीय रेलवे में कार्यरत कर्मचारियों के जीवन स्तर को दर्शाती है। यह फिल्म केरला की सीमाओं पर स्थित मीनाक्षीपुरम के ईमानदार और समर्पित स्टेशन मास्टर इस्माइल के चारों ओर घूमती है

उसका साथी उसका दौहित हनीफ है जो कि उसकी पुत्री अमीना का पुत्र है जिसका पति जमाल एक पानी के जहाज पर काम करता था किन्तु लम्बे समय से उसके बारे में कोई सूचना नहीं मिली। इस्माइल के परिवार में उसकी बूढ़ी मां आयशुमन भी है जो अपने पुत्र की ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा पर अभिमान करती है और दूसरी ओर उसकी दूसरी पत्नी जरिया है जो अपनी कठिनाइयों और अमीना जो उसकी पहली पत्नी की बेटी है की सदैव शिकायत करती है तथा अपने पति से आग्रह करती है कि रिश्वत स्वीकार कर ले। इस परिवार में उसका बड़ा पुत्र नजीब भी है जो अपने पिता से पैसे मांगता रहता है किन्तु प्राप्त नहीं कर पाता, छोटे पुत्र निसार और मुस्तफा और बेटी जमीला है।

नजीब राजनीतिज्ञ बन जाता है। इस्माइल को मालूम होता है कि रेल बन्द के दौरान, जिसमें उसका पुत्र भी शामिल था, रेल की पटरियां उखाड़ दी गई हैं। इंजन चालक को चेतावनी देने का समय न रहने के कारण इस्माइल पटरी पर गाड़ी रोकने के उद्देश्य से दौड़ता है। वह गाड़ी को बचा लेता है किन्तु इस प्रक्रिया में वह स्वयं गाड़ी के नीचे आ जाता है।

SAMAANDARANGAL

Malayalam/35 mm/Colour/120 minutes

Producer-Director: S. Balachandra Menon; **Cast**: S. Balachandra Menon, Renuka, Sukumari, Akhil; **Story-screenplay-music-editor**: S. Balachandra Menon

This is probably the first film dealing exclusively with the life and standard of those working in the Indian Railways. The film revolves around Ismail, an honest and dedicated Station Master of Meenakshipuram on the borders of Kerala.

His constant companion is his grandson Haneef, son of daughter Ameena whose husband Jamal works on a ship but nothing has been heard of him for a long time. Ismail's family also consists of his aged mother Ayshumma who takes pride in his inegrity and honesty and his second wife Razia who is constantly grumbling about her hardships and about Ameena who is his daughter from the first wife, and asking her husband to accept bribes. The family also has elder son Najeeb who is ambitious and pesters his father for money which he does not get, younger sons Nissar and Mustafa and daughter Jameela.

Najeeb becomes a political activist. Ismail comes to know that during the rail bandh in which his son is involved, the rail track has been sabotaged. Too late to warn the engine driver, Ismail runs on the track asking the train to stop. He saves the train, but not before he has been run over.

शेष दृष्टि

उड़िया/35 मि.मी. /रंगीन/ 125 मिनट

निर्माता: रा.फि. वि. निगम **निर्देशक:** ए. के. बीर **कलाकार:** शरत पुजारी, नरेन्द्र मोहन्ती, लक्ष्मी देवी, नीलम मुखर्जी, नीरज कबि, तेजल कुलकर्णी **पटकथा-कैमरा:** ए.के. बीर **संगीत:** भवदीय जयपुर वाले **सम्पादन:** असीम सिन्हा **ध्वनि :** अकील खान

साधारण सी दिखने वाली कहानी के माध्यम से निर्देशक ने अतीत के दिनों और वर्तमान के बीच तुलना को उकेरा है। फिल्म में उन दिनों की फसल को चित्रित किया गया है जिसे लोग अपने सुनहले पुराने दिन कहते है। वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी केदार बाबू का बेटा संग्राम शहर में लाइब्रेरियन के पद हेतु साक्षात्कार के लिए आता है। वह चुन भी लिया जाता है, हालांकि पूछे गए प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दे पाता।

शहर में वह अपने पिता के मित्र जमींदार बहादुर सूर्यकांत सिंह के जीर्ण-शीर्ण घर में ठहरता है। स्वार्थी मैनेजर की वजह से इतनी बड़ी हवेली बुरे दिन देख रही है। जमींदार ने अर्न्तराज्यीय विवाह किया था जिससे उन्हें दो संताने प्राप्त हुई। पुत्र अमेरिका में है, उसने सारे सम्बन्ध तोड़ लिए हैं। एक पुत्री है जो सोलह वर्ष की होने के बावजूद सात वर्ष के बच्चों की तरह व्यवहार करती है। संग्राम सामन्तशाही व्यवस्था की चरमराहट को महसूस करता है। बाद में जब गांव से उसके पिता का बुलावा आता है तो वह जीवन के उन पहलुओं को समझता है, जहां चिंता और डर है। वह अपने पिता की अंतिम इच्छा को जरूर पूरा करने का निश्चय करता है।

SHESH DRUSHTI

Oriya/35 mm/Colour/125 minutes

Producer: National Film Development Corporation; **Director**: A. K. Bir; **Cast**: Sarath Pujari, Narendra Mohanty, Lakshmi Devi, Neelam Mukherjee, Neeraj Kabi, Tejal Kulkarni; **Screenplay-Camera:** A. K. Bir; **Music**: Bhavdeep Jaipurwale; **Editor**: Aseem Sinha; Sound: Aqueel Khan

Though seemingly a simple tale, the director has taken stock of the situation today in comparison to the days gone by, and shown the loneliness of those who miss what they call the good old days.

Sangram, the son of the ageing man Kedar Babu who was a freedom fighter, comes to the city to appear in an interview for a job as librarian and gets selected though he failed to answer the questions asked of him.

In the city, he is staying in the dilapidated house of zamindar Bahadur Suryakant Singh, a friend of his father. The large mansion is seeing bad days with a selfish manager. The zamindar married a woman who is non-Oriya and they have a son in America who never writes or calls, apart from a sixteen-year old daughter who behaves like a seven year old. Sangram learns of the decay of the feudal system. Later when called to the village when his father is ill, he learns of a new perception to life illuminated with anxiety and suspicion and yet there is the thrill of fulfilling his father's last wish.

सिंदूरम

तेलुगु/35 मि.मी. /रंगीन/ 140 मिनट

निर्माता- निर्देशक -पटकथा: कृष्णवंशी **कलाकार:** ब्रह्मजी संघवी, सूर्या, गीता **गीत:** सीताराम शास्त्री **कैमरा:** भूपति **ध्वनि:** मधु फेलिक्स **सम्पादन:** शंकर **कला निर्देशन :** श्री निवास राजू

फिल्म में उस व्यवस्था का चित्रण है जिसके चलते युवा लोग उग्र रास्तों को अपनाने पर विवश हो जाते हैं।

बल्ली राजू गांव के अपने दोस्त चांति की जीवन चर्चा को पसंद नहीं करता। बाद में बल्ली राजू पुलिस अफसर बनकर गांव में ही नियुक्त हो जाता है। यहां आकर उसे आभास होता है कि चांति जैसे लोग क्यों स्थितियों को गंभीरता से नहीं लेते क्योंकि स्थानीय सब-इन्सपेक्टर स्वामी भ्रष्ट है।

पुलिस की भ्रष्टता के कारण गांव के लोगों को न्याय दिलाने के लिए चन्द्रा एक उग्रवादी दल बना लेता है। परंतु बल्ली बैरागी और अपने अन्य मित्रों को समझाता है कि यह गैर-कानूनी है। एक भले मानव डाक्टर की हत्या के बदले में दल स्वामी की हत्या का प्रयास करता है। बल्ली स्वामी को बेकार गिरफ्तारियों को रोकने के लिए कहता है। गुस्सेमें स्वामी बल्ली को गिरफ्तार कर लेता है और छीना-झपटी में अपनी ही गोली से मारा जाता है। बाद में उसे अहसास होता है कि वह स्वामी का हत्यारा समझा जा रहा है। अब उसके पास चन्द्रा के दल में भूमिगत होने के सिवाय कोई रास्ता नहीं दिखाई देता। यहां उसे पता चलता है कि बैरागी और चांति भी दल के सदस्य है। बाद में बल्ली साजू दलपति बन जाता है और अंतत: एक मुठभेड़ में मारा जाता है। फिल्म इस प्रश्न पर आकर समाप्त होती है कि इस सब का अंत कहां होगा।

SINDOORAM

Telugu/35 mm/Colour/140 minutes

Producer-Director-Screenplay: Krishna Vamsi; **Music:** Srinivas Chakravarthy; **Cast:** Brahmaji, Sanghavi, Surya, Geetha; Lyrics: Seetharam Sastry; **Camera:** Bhupathi; **Sound:** Madhu Felix; **Editor:** Shankar; **Art Director:** Srinivas Raju

The film graphically tries to show how corruption in society often turns young people into wayward or violent ways.

Bulli Raju does not like the easy lifestyle of his friend Chanti in the village. Later Bulli Raju trains as a police officer and is posted to the village. Here he understands why people like Chanti do not take things seriously, when he sees the local sub-inspector Swamy is corrupt.

A gang of militants led by Chandra try to get the villagers justice since the police is corrupt. But Bulli tells his friends Bairagi and others that this is against the law. When the gang try to kill Swamy for having earlier killed a benevolent doctor, Bulli tries to stop Swamy from making unnecessary arrests. Angered, Swamy arrests Bulli and in the scuffle, gets killed from his own bullet. Later Bulli learns that he is accused of killing Swamy. He has no choice but to remain underground in Chandra's gang. Here he comes to know that Bairagi and Chanti are also members. Later Bulli Raju becomes the gang leader, but is ultimately killed in an encounter. His gang members get away, and the film ends with the question about where will this all end.

THE TERRORIST

Tamil/35 mm/Colour/95 minutes

Producer: A. Sriram; **Director**: Santosh Sivan; **Screenplay**: Santosh Sivan, Vijay Deveswar; **Cast**: Bhanu Prakash, Ayesha Dharker, Parameshwaran, Krishna

The film is an exploration into the mind of a 19-year old girl who clads herself in seemingly invincible armour, only to discover that she is as vulnerable as the rainbow caught in an prismatic bubble.

Malli's brother, part of a terrorist organisation, was killed at a young age. Deeply affected, she decides to join the terrorist organisation and learns to only think about the cause, suppressing her feelings.

She moulds herself into a thing that is mechanically used to carry out the orders of the organisation. It is the cause that is important, not her own feelings.

She is proud when asked to be a suicide bomber and die a martyr. But when she is waiting for certain death, her inner self makes itself felt and she is forced to remember that she too is a human being and not a tool.

दे टेररिस्ट

तमिल/35 मि.मी. /रंगीन/ 95 मिनट

निर्माता: ए. श्रीराम, **निर्देशक:** संतोष सिवन, **कलाकार:** भानु प्रकाश, आयशा धारकर, परमेश्वरन्, कृष्णा **पटकथा:** संतोष सिवन , विजय देवेश्वर

यह फिल्म एक उन्नीस वर्षीय युवती की आत्मपरीक्षा की कहानी है जो स्वयं को एक अजेय कवच में ढक लेती है। और अंत में स्वयं को बुलबुलों में फंसे इन्द्रधनुष के समान असुरक्षित पाती है।

मल्ली का भाई, जो आतंकवादी संगठन का एक हिस्सा है, युवावस्था में ही मारा जाता है। इससे प्रभावित होकर वह आतंकवादी संगठन में शामिल होने का निर्णय करती है और अपनी भावनाओं को दबाकर केवल संगठन के उद्देश्य के बारे में सोचने का प्रयत्न करती है।

वह स्वयं को संगठन के आदेशों के अनुसार यंत्रवत ढाल लेती है।

जब उसे मानव बम बन कर शहीद होने के लिए कहा जाता है, तो वह गर्व का अनुभव करती है। किन्तु मौत की प्रतीक्षा करते हुए वह यह सोचने पर विवश हो जाती है कि वह भी एक इंसान है, माल औजार नहीं।

थाई साहेब

कन्नड़/रंगीन/35 मि.मी./150 मिनट

निर्माता : जयमाला, **पटकथा-निर्देशक:** गिरीश कासरवल्ली, **संगीत :** इसहाक, **कलाकार :** जयमाला, सुरेश हेबलिकर, शिवराम, सुधा बेलवादी, मास्टर भरत, **कैमरा :** एच.एम् रामचन्द्र **कला निर्देशक:** रमेश देसाई, **वेशभूषा:** वैशाली कासरवल्ली

यह फिल्म स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्ष पूर्व से प्रारंभ होकर लगभग बीस वर्ष की अवधि तक फैली हुई है। फिल्म थाई साहेब की कहानी है जो एक आदमी की दूसरी पत्नी है, तथा जो जमींदार होने के बावजूद स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत सक्रिय है। थाई एवं अप्पा साहेब की प्रथम पत्नी दोनों नि:संतान है। उसे बताया जाता है कि उसके पति ने उसके भाई वेंकोबा के पुत्र नानु को अपना उत्तराधिकारी बनाने के उद्देश्य से गोद लेने का निर्णय लिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अप्पा साहेब अपनी राजनीतिक गतिविधियां जारी रखता है। वेंकोबा घर की जिम्मेदारियां संभाल लेता है। थाई नानु से स्नेह करती है, जो धीरे-धीरे चंद्री, जो उसके पति की प्रेमिका है, की पुत्री मंजरी से प्रेम करने लगता है। किन्तु जब उसे यह बताया जाता है कि कौटुम्बिक है, तो वह घर छोड़ देता है तथा शराब पीने लगता है।

बाद में अप्पा को कम्युनिस्ट घोषित कर दिया जाता है तथा थाई को डर होता है कि उसे मार डाला गया है। इस बार नानु जब गोद लेने के बोझ से स्वयं को मुक्त करने के लिए कहता है ताकि वह अपनी इच्छा के अनुसार अपना जीवन व्यतीत कर सके तो यह जानते हुए कि उसे गिरफ्तार कर लिया जायेगा, वह कानून तोड़ देती है।

THAI SAHEB

Kannada/35mm/Colour/150 minutes

Producer: Jayamala; Director-Screenplay: Girish Kasaravalli; **Music**: Isaacd **Cast**: Jayamala, Suresh Heblikar, Shivram, Sudha Belwadi, Master Bharath; **Camera**: H.M. Ramachandra; **Art Director**: Ramesh Desai; **Costume**: Vaishali Kasaravalli

The film spans a period of about twenty years, starting a few years before independence. The film is the story of Thai Saheb, the second wife of a man who is deeply involved in the freedom movement despite being a Landlord. Both Thai and Appa Saheb's first wife are childless. She is told that her husband has decided to adopt her brother Venkoba's son Nanu as his heir. After Independence, Appa Saheb continues his political activities. Venkoba takes charge of the household.

Thai wins affection of Nanu, who gradually falls in love with Manjari, daughter of Appa Saheb's mistress Chandri. But when told this is incestuous, he leaves home and takes to drinking. Later, Appa is declared a Communist, and Thai fears he may have been killed. This time when Nanu says he wants to be relieved of the burden of adoption so that he can lead his life in his own way, she breaks the law to get him what he wants, knowing fully well that she faces arrest.

विरासत

हिन्दी / 35 मि.मी. /रंगीन/ 170 मिनट

निर्माता: मुशीर रिआज, **निर्देशक:** प्रियदर्शन, **कलाकार:** अनिल कपूर, तब्बू, पूजा बत्रा, मिलिंद गुणाजी, गोविन्द नामदेव, अमरीश पुरी, सुलभा देशपाण्डे, **गीत:** आनन्द बक्शी **छायांकन:** रवि के. चन्द्रन, **सम्पादन:** एम. गोपालकृष्णन

जोशपुरा के गांव वाले दो गुटों में विभाजित हैं, एक मुखिया राजा ठाकुर के साथ है तथा बाकी राजा के छोटे भाई बिरजू के बेटे बल्ली ठाकुर को साथ राजा ठाकुर अपने छोटे बेटे शक्ति की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है जो पढ़ाई के लिये विदेश गया हुआ है ताकि दोनों मिलकर गांव को इकट्ठा कर सकें। परन्तु जब शक्ति वापस लौटता है तो वह अपने साथ आधुनिक लड़की अनीता को शादी के इरादे से साथ लाता है। जब वह एक मंदिर का दरवाजा तोड़ता है जो पारिवारिक विवाद के कारण बंद, उसका बल्ली के साथ झगड़ा हो जाता है।

शक्ति असमंजस में है कि वह अनीता के साथ शहर जाये या गांव में ही रहे। वह गांव में रहना पसंद करता है। उसकी पहली अग्नि परीक्षा तब होती है जब उसे गांव की सुन्दरी गहना से उसका जीवन व प्रतिष्ठा बचाने के लिये शादी करनी है। इस बात को कई हादसे होते हैं जो उसके जीवन में विवाद मर देते हैं।

VIRASAT

Hindi/35 mm/Colour/170 minutes

Producer: Mushir Riaz; **Director**: Priyadarshan; **Story**: Kamal Haasan; **Music**: Anu Malik; **Cast**: Anil Kapoor, Tabu. Pooja Batra, Milind Gunaji, Govind Namdeo, Amrish Puri, Sulbha Deshpande **Lyrics**: Anand Bakshi; **Camera**: Ravi K. Chandran; **Editor**: M. Gopalakrishnan

The villagers of Joshpura are split into two groups, one owing allegiance to the benevolent head of the village Raja Thakur and the other forced to show allegiance to Balli Thakur, son of Raja's younger brother Birju. Raja Thakur is anxiously awaiting the arrival of his younger son Shakti — who had gone abroad to study — so that together they can unite the villagers.

But Shakti returns with a modern girl Anita with intentions to marry her. When he breaks open the doors of a temple closed because of family dispute, he has a brawl with Balli. Raja is heartbroken and dies.

Shakti is in a dilemma, whether to go to the city with Anita or remain in the village. He chooses the latter. The first acid test comes when he is required to marry Gehna, a village belle, to save her life and reputation. This leads to a series of events that leave his life in doldrums.

कथासार : गैर-कथाचित्र

Synopses : Non-Feature Films

आयुर्वेद

अंग्रेजी/35 मि.मी./14 मिनट

निर्माता : डी. गौतमन, **निर्देशक** : भानुमूर्ति अलुर

यह फिल्म प्राचीन समय में प्रचलित उपचार पद्धति 'आयुर्वेद' पर ध्यान दिलाने का एक प्रयास है, जो कि भारत में वैदिक समय से चली आ रही है। कुछ विशेष प्रकार के रोगों के निवारण में यह पद्धति प्रमाणित हो चुकी है तथा कुछ ऐसे असाध्य रोगों का उपचार भी इस पद्धति के द्वारा किया जा सकता है जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों में संभव ही नहीं है। आज यह जरूरी सा हो गया है कि इस पद्धति को औषधि विज्ञान की मुख्यधारा में सम्मिलित किया जाए तथा इसे भली भांति समझकर उपचार कार्यों में समुचित प्रयोग किया जाए।

AYURVEDA

English/35 mm/14 min

Producer: D. Gautaman; **Director**: Bhanumurthy Alur;

The film is an attempt to draw attention to the ancient system of healing, Ayurveda, being practiced in the country since Vedic times. The system has proved to be very effective in certain types of ailments, and even cured some ailments for which there is no cure in other systems of medicine. There is need to understand the system better so that it can be put to proper use in the healing process and can be integrated into the mainstream systems of medicine.

अय्यनकली - अधास्तिथारुडे विमोचकन

मलयालम/35 मि.मि/32 मिनट

निर्माता : पी. शशिधरन एवं ए कृष्णा, **निर्देशक** : आर.एस. मधु

यह फिल्म केरल में दलितों के लिए न्याय पाने के लिए अय्यनकली के आजीवन संघर्ष का पुर्ननिर्माण है। अय्यनकली का जन्म तिरुवनन्तपुरम के पास वेंगानूर पुरवा में अय्यन और माला के घर में 28 अगसत, 1963 को हुआ था। अल्पायु में ही उसे महसूस हुआ कि दलितों के साथ दूसरे प्रकार का व्यावहार होता है। वर्ष 1904 में कृषि की प्रथम हड़ताल हुई। यह लगभग एक वर्ष तक चली किन्तु जमींदारों को झुकना पड़ा।

AYYANKALI-ADHASTITHARUDE VIMOCHAKAN

Malayalam/35 mm/32 min

Producer: P. Sasidharan and A. Krishna; **Director**: R S. Madhu;

The film is the reconstruction of the life-long struggle of Ayyankali to get justice for the downtrodden in Kerala. Aayankali was born in the hamlet Venganoor near Thiruvananthapuram on August 28, 1863, in the house of Ayyan and Mala. At a very young age, he realised that the downtrodden were treated differently. He started a social organisation Sadhujana Paripalana Sanghom which met regularly to hear grievances and find solutions.

बंगलार बॉउल

बंगाली/35 मि.मि./05 मिनट

निर्माता : यश चौधरी, **निर्देशक :** के.जी. दास

यह फिल्म परिवार कल्याण पर आधारित है। किन्तु फिल्म निर्माता ने अपना संदेश देने का एक अनोखा तरीका अपनाया है। बंगाल का एक परम्परागत बाउल गायक अपने गायन के द्वारा यह संदेश देता है कि आज के संसार में लड़कों और लड़कियों के बीच कोई अन्त नहीं है। इस संदेश में यह भी बताया गया है कि लड़कियों की जल्दी शादी करने से क्या हानियां होती हैं क्योंकि वे शादी का बोझ बर्दाश्त करने के लिए बहुत छोटी होती हैं। गायक अपना संदेश देने के लिए एक गांव से दूसरे गांव जाता है।

BANGLAR BAUL

Bengali/35 mm/05 min

Producer: Yash Choudhary; **Director**: K. G. Das;

The film is based on the theme of family welfare. But the filmmaker has used a unique method to convey his message. A traditional Baul singer from Bengal through the song conveys the message that there is no difference in today's world between boys and girls. The message is also conveyed about the demerits of an early marriage of girls who are too young to bear the burdens of marriage. The singer goes from village to village to convey his message.

कैंसर

हिन्दी/35 मि.मि./15 मिनट

निर्माता : भानूमूर्ति अलूर **निर्देशक :** सी.के.एस. राव

कैंसर एक भयानक परन्तु साध्य रोग है। फिल्म में तीन प्रकार के कैंसर का चित्रण किया गया है। वे हैं : तम्बाकू सम्बन्धित, महिलाओं में स्तन कैंसर, तथा गर्भाशय में कैंसर आदि। फिल्म में मुख्यत: सावधानी पर बल दिया गया है। शुरूआत में यदि रोग पकड़ लिया जाए तो समुचित चिकित्सा भी की जा सकती है। इस भयानक रोग के बारे में फैले पुराने विश्वासों का भी यह फिल्म प्रतिरोध करती है।

CANCER

Hindi/35 mm/15 min

Producer: Bhanumurty Alur; **Director**: C. K. M. Ran:

Cancer is a dreaded disease which is preventable. This film deals with three types of cancer: that which is tobacco-related, breast cancer in women, and uterinecervix cancer. The film particularly attempts to emphasise on the need for prevention. Early detection can also lead to proper and complete treatment. It counters many outdated beliefs about this dreaded disease.

हिप्नोथीसिस

हिन्दी/35 मि.मी./26 मिनट

निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान, पुणे, **निर्देशक-कहानी-पटकथा :** रजत कपूर, **कैमरा :** रफी महमूद, **सम्पादक :** वन्दना कोहली, **संगीत :** केदार ऑती, **ध्वनि :** हरि जी., **कला निर्देशन :** एस. बनर्जी

एक व्यक्ति अपना नाश्ता करके घर से जाता है। उसके कार्यालय में दूसरा छुट्टी के लिए आवेदन देता है। तीसरा कैंटीन से चाय पी कर वापस जाता है। एक और व्यक्ति सर मुंडाता है तथा जाते समय अस्तुरा चुरा लेता है।

चारों एक संयुक्त व्यापार में भागीदार हैं। वे सफलतापूर्वक एक बालक का अपहरण करते हैं। किंतु उसका पिता फिरौती देने से इन्कार कर देता है।

HYPNOTHESIS

Hindi/35 mm/26 minutes

Producer: Film and Television Institute of India, Pune; **Director-story-screenplay**: Rajat Kapoor; **Camera**: Rafey Mehmood; **Editor**: Vandana Kohli; **Music**: Kedar Awti; **Sound**: Hari G.; **Art Direction**: S. Banerji

A man finishes his breakfast and leaves his home. Another applies for leave in his office. A third finishes his tea and gets out of the canteen. Another gets himself shaved; while leaving, he steals the shaving razor.

All four are partners in a joint venture. They successfully kidnap a boy, but his father refuses to pay up.

गोटीपुआ

अंग्रेजी/16 मि.मी./30 मिनट

निर्देशक : गुलबहार सिंह, **कैमरा :** ध्रुव ज्योति बसु, **सम्पादक :** उज्जल नन्दी, **कमेन्ट्री :** गम.एस. राय

उड़िया भाषा में गोटीपुआ का अर्थ है "अकेला लड़का"। यह एक नृत्य का नाम है जिसे एक लड़का महिलाओं के कपड़े पहनकर नाचता है। जब देवदासियों एवं महारियों के नृत्य का चलन समाप्त हो गया तो परम्परा जारी रखने के लिए इस नृत्य का निर्माण किया गया।

GOTIPUA

English/16mm/30 minutes

Direction: Gulbahar Singh; **Camera**: Dhruba Jyoti Basu; **Editor**: Ujjal Nandy; **Commentary**: M. S. Roy

In an Oriya dialect, Gotipua means a "single boy." This is the name of a dance performed by a single boy dressed as a woman. When the dance of the Devdasis and Maharis declined, this dance was created to carry on the tradition.

इन दि लैण्ड ऑफ लेपचाज

अंग्रेजी/16 मि.मी./28 मिनट

निर्माता : सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, **निर्देशक:** डॉ. मानस कमल चौधरी एवं अंजन बोस

यह मानवजातीय फिल्म पश्चिम बंगाल के हिमालय क्षेत्र में निवास करने वाले लेपचाज समुदाय के जीवन को उजागर करती है। लेपचाज प्रकृति की उपासना करते हैं अत: उसका ध्यान रखते हैं। प्रकृति परोपकारी है तथा उनके जन्म, विवाह, बीमारियों के इलाज एवं मृत्यु में भी उनकी मार्गदर्शक है।

IN THE LAND OF LEPCHAS

English/15 mm/28 min

Producer: Cultural Research Institute, Department of Scheduled Caste and Tribes Welfare of the West Bengal Government; **Directors:** Dr Manas Kamal Chowdhuri and Anjan Bose

This ethnographic film highlights the life cycle of the Lepcha Tribe living in the Himalayan Regions of West Bengal. The Lepchas are worshippers of nature and so care for her. Nature is benevolent and is their guide in cases of birth, marriage, treatment of diseases, and even death.

इन सर्च आफ एक्सेलेंस

हिन्दी/35 मि.मी./10 मिनट

निर्माता : कुलदीप सिन्हा, **निर्देशक :** रघु कृष्णा

टेलिविजन के आगमन के बाद तथा खेल को अपने बैठक में लाने के बाद देश में अचानक खेल के प्रति रुचि बढ़ गई है। किन्तु क्रिकेट, हाकी तथा कुछ अन्य खेलों पर अधिक केन्द्रिकरण है। पारम्परिक भारतीय खेलों जिन पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता, को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इस फिल्म में पारम्परिक खेलों जैसे मलखम्ब और सूर्यनमस्कार के बारे में बताने का प्रयास किया गया है।

IN SEARCH OF EXCELLENCE

Hindi/35 mm/10 min

Producer: Kuldeep Sinha; **Director**: Raghu Krishna;

The country has suddenly seen a renewed interest in sports after the coming of television, bringing sports into the living room. But most of the concentration has been on cricket, hockey and a few other games. There is also need to encourage traditional Indian sports that often go unnoticed. This film has made an attempt to depict traditional sports like Mallkhamb and Suryanamaskar.

जातानेर जामी

बंगला/35 मि.मी./57 मिनट

निर्माता/निर्देशक: राजा मित्रा

यह फिल्म हास्यप्रद ढंग से प्रस्तुत एक भूमिहीन किसान की दु:खपूर्ण कहानी है। सरकार की घोषणा के अनुसार भूमि के एक छोटे भाग को प्राप्त करने की आशा में वह दर-दर की ठोकरें खाते हुए पंचायत से भूमि सुधार अधिकारियों तक के दरवाजे खटखटाता है। जिस समय यह सिद्ध करने के लिये आवश्यक कागजात प्राप्त करता है कि उसे आबंटित भूमि का वह क्षेत्र पानी में डूबा हुआ है। संक्षेप में इस फिल्म में यह बताया गया है कि सरकारी प्रक्रिया में हुई देरी के कारण से कैसे अक्सर विकासात्मक कार्य प्रभावित हो जाते हैं।

JATANER JAMI

Bengali/35 mm/57 min.

Producer-Director : Raja Mitra

The film is the tragic saga of a landless peasant told in a serio-comic style. Hoping to get a piece of land as declared by the Government, he runs from pillar to post, knocking several doors from the level of the Panchayat to the Land Reform Officials. By the time he gets the necessary papers to prove that he now owns a piece of land, he finds that the land allotted to him is submerged in water. The film very succinctly shows how delays in government procedures are often counter-productive.

माटिर भाङ्र

बंगला/16 मि.मी./37 मिनट

निर्माता : अंजना घोष दस्तीदार, **निर्देशक** : देबानंदा सेन गुप्ता **कैमरा** : अविक मुख्र्जी, **संगीत** : अभिजीत बासु

फिल्म में सीधे साक्षात्कारों के द्वारा मेहनतकश एवं नौकरीपेशा वर्ग की औरतों एवचं लड़कियों के जीवन की निरीह का वर्णन करने का प्रयास किया गया है। जिन्हें केवल वस्तु समझा जाता है, के वल मनचाहा उपभोग जैसे चाक पर बनता मिट्टी का बर्तन जैसे चाहे आकृति दो। फिल्म में दहेज सम्बन्धी झगड़े और परिणामस्वरूप हुई मृत्यु, स्वासथ्यता शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का चित्रण भी वास्तविक मामलों के माध्यम से किया गया है। पुत्र-मोह के भंवर में फसी औरतों का दारूण चित्रण भी साथ ही है, हालांकि वो हारती नहीं है।

MATIR BHANIR

Bengali/16mm /37 minutes

Producer: Anjana Ghosh Dastidar; **Director**: Debananda Sengupta; **Camera**: Avik Mukherjee; **Music**: Abhijit Bau

Through incisive interviews, the film attempts to capture the fragile lives of young girls and women, especially those belonging to subaltern and the toiling sections. They are treated as dispensable commodities to be used and thrown, or like earthern pots that can be moulded at will. The film picks actual cases of women facing dowry-related violence, even death, and a systematic denial of minimum opportunities of education and health care. Victims of prevalent son-preference, the girls and women shown in the film, however, do not accept defeat easily.

मिज़ावु-ए साइलेंट ड्रम बीट

अंग्रजी/35 मि.मी./35 मिनट

निर्माता : पी.डी. रैफेल, **निर्देशक** : के.आर. सुबाष, **पटकथा** : मदम्बु कुंजुकुट्टम, **अनुसंधान एवं व्याख्या** : प्रो. जार्ज एस. पाल, **कैमरा** : हरि नायर, **संगीत** : जाजिम

यह फिल्म मिजहावु के बारे में है जो विश्व का प्राचीनतम ड्रम है तथा इसे लगभग 2000 वर्ष पुराना ड्रम माना जाता है। केरला के इस ड्रम का उपयोग विशेष रूप से कोडियट्टम के लिये किया जाता है जो युगों पुराना संस्कृत थियेटर है तथा कूथू एवं नागियारकूथू इसके सम्बद्ध रूप हैं। यह कला के रूप कूथम्बलम्स तक सीमित हैं, जो केरला के मन्दिरों का सभागृह है।

MIZHAVU - A SILENT DRUM BEAT

English/35 mm/35 minutes

Producer: P.D. Raphael; **Director**: K.R Subhash; **Script**: Madambu Kunjukuttan; **Research and Commentary**: Prof. George S. Paul; **Camera**: Hari Nair; **Music**: Nazim

This film is about Mizhavu, the oldest known drum in the world, believed to be nearly 2000 years old. This drum from Kerala is used exclusively for the performance of Koodiyattom, the age-old Sanskrit theatre and its allied forms of Koothu and Nangiarkoothu. These art forms are confined to the Koothambalams, which are typical auditoriums of Kerala temples.

मौनम् सौमन्यसम्

मलयालम/35 मि.मी./25 मिनट

निर्माता : रविन्द्रनाथ **निर्देशक** : रविन्द्रन

मूक फिल्ममेकर स्व. जी. अरविंदन सरीखे व्यक्तित्व पर फिल्म बनाना सरल कार्य नहीं है। उनके लिए सिर्फ उनका कार्य दर्पण है। अपने कार्य के लिए वे कदाचित ही बोले हों। फिल्म में इस शांत और अर्न्तमुखी फिल्म मेकर के कार्य और जीवन दोनों का चित्रण किया गया है।

MOUNAM SOWMANASYAM

Malayalam/35 mm/25 min

Producer: Ravindranath; **Director**: Ravindran;

To make a film on a silent filmmaker like the late G. Aravindan is very difficult, since only his work speaks for him. He hardly ever spoke to anyone about his work. The film deals with the life and work of this retiring and quiet filmmaker.

नेचर्स सेंटिनेल्स - दि बिश्नोई

हिन्दी/35 मि.मी./28 मिनट

निर्माता : वाई.एन. इंजीनियर, **निर्देशक** : शंकर पटनायक एवं (स्वर्गीय) पी.सी. शर्मा

राजस्थान के इस समुदाय के बारे में बहुत कम जाना गया है। बिश्नोई समुदाय एक दुर्लभ उदाहरण है कि प्रकृति की देखरेख लोगों को कैसे करनी चाहिए। इनमें से वृक्ष, हरियाली एवं जुगली जीव का संरक्षण सर्वोच्च है। यह समुदाय वातावरण संरक्षण के लिये जिहाद कर रही है जबकि समस्त संसार बदल रहा है।

NATURE'S SENTINELS - THE BISHNOI

Hindi/35 mm/28 min

Producer: Y.N. Engineer; **Directors**: (late) P.C. Sharma and Shankar Patnaik;

Very little is known about this community from Rajasthan. The Bishnoi Community is a rare example of how people can look after nature. They believe in 29 principles relating to the conservation of nature. Of these, the most important concerns the preservation of trees, greenery and wild life. The community is carrying on a crusade for environmental protection when the whole world around them is changing.

निरकुंश

हिन्दी/35 मि.मी./59 मिनट

निर्माता-निर्देशक-कथा-पटकथा : वीनू अरोड़ा, **कैमरा** : सुधीर पलसाणे, **संगीत** : सुष्मित सेन, **संपादन** : सिरदल स्वामी, **ध्वनि** : हरि कुमार एम., **कला निर्देशन** : एन रामाकृष्णा-वीनू अरोड़ा

वाणी एक सामाजिक कार्यकर्ता है। अपने परमर्शदाता प्रोफ्रसर नारायणन् से प्रेरित हो वह एक दिन राजस्थान के लिए चल देती है। गांव की ही एक युवा स्त्री धुली से भी उसकी दोस्ती होती है जो इस बार तीसरे बच्चे की मां बनने वाली है। वाणी, उसे विश्वास में लेने का प्रयास करती है कि शिशु लड़कियों का पालन भी एक पवित्र कर्तव्य है। गांव के आदमियों की शराब खोरी की आदत के खिलाफ भी वह लड़ती है। अंतत: एक दिन वह खुद शराब के उस अड्डे को तहस नहस कर देती है।

NIRANKUSH

Hindi/35mm/59 minutes

Producer-Director-Story-Screenplay: Venu Arora; **Camera**: Sudheer Palsane; **Music**: Susmit Sen; **Editor**: Sirdala Swamy; **Sound**: Hari Kumar M.; **Art Direction**: N. Ramakrishna-V. Arora

Vani, a young social worker, is frustrated at the slow pace of social change. She sets out for interior Rajasthan to fight the evil of killing the female child prevalent there. She befriends the bangle-seller Bhaktu while proceeding to the village Gordungar. She also befriends Dhuli, a young village woman who is pregnant with her third child. She is up against the menfolk of the village for wanting to destroy their liquor den, which she ultimately destroys herself.

दि आफिशयल आर्ट फार्म

अंग्रेजी/16 मि.मी./27 मिनट

निर्माता : नेशनल गैलरी आफ माडर्न आर्ट, नई दिल्ली, **निर्देशक** : सुहासिनी मुले एवं एच.एम. घरेखान, **पटकथा लेखक** : सुहासिनी मुले, **कैमरामैन** : जे.के. आदवे, **संपादक**: वाई.एस. रावत, **संगीत** : एच.एम. घरेखान

यह फिल्म भारतीय 1857 से 1920 के दौरान भारतीय चित्रकला का इतिहास बताती है। कलाकारों ने संरक्षण खो दिया एवं काम को तलाश करने लगे। खरीदार यूरोपी एवं तत्कालीन भारतीय नवाब होते थे तथा दोनों प्रकार के खरीदारों के लिये अलग-अलग पद्धति होती थी।

THE OFFICIAL ART FORM

English/

Producer: National Gallery of Modern Art, New Delhi; **Directors**: Suhasini Mullay and H.M. Gharekhan; **Camera**: J.K. Adway; Editor: Y.S. Rawat; **Story-screenplay**: Suhasini Mullay; **Music**: H.M. Gharekhan

The film documents the history of Indian painting between 1857 and 1920. Artists lost royal patronage and had to look for work. The buyers were the Europeans or the nouveau riche Indians, and the styles had to be different to suit both types of buyers.

पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेन्ट आफ पोटैटो

हिन्दी/35 मि.मी./22 मिनट

निर्माता : वाई. एन. इंजीनियर, **निर्देशक** : निर्देशक : वी. पैकिरिस्वामी

यदि कटाई के बाद आलू को सुरक्षित न रखा जाये और खुला छोड़ दिया जाए तो वे सड़ जाते हैं। इस फिल्म में घोर अनुसंधान के बाद साधारण भाषा में यह बताया गया है जिससे यह फिल्म बहुत उपयोगी हो जाती है। फिल्म यह प्रदर्शित करती है कि कैसे कटाई के बाद लम्बे समय तक आलू को सुरक्षित रखा जा सकता है।

POST HARVEST MANAGEMENT OF POTATO

Hindi/

Producer: Y.N. Engineer; **Director**: V. Packiriswamy;

If not preserved, potatoes can become rotten after they lie in the open after harvest. In a film that has been deeply researched and has been told in simple language that makes the film very practical, this film shows how potatoes can be preserved for a long time even after the harvest.

''सारंग-सिम्फनी इन काकोफनी''

अंग्रेजी/35 मि.मी./17 मिनट

निर्माता : वाई.एन. इंजीनियर, **निर्देशक** : जोशी जोसेफ

फिल्म केरला में केन्द्रित है तथा इसका उद्देश्य पर्यावरण चेतना को बढ़ावा देना है। एक युगल गोपालकृष्णन एवं विजयलक्ष्मी, जो केरला में अगाली में रहते हैं, तथा वे पर्यावरण को नवजीवन प्रदान करना चाहते हैं। शान्त घाटी के उत्थान के लिए प्रतिज्ञाबद्ध दोनों जैविक खेती करना प्रारंभ कर देते हैं।

"SARANG - SYMPHONY IN CACOPHONY"

English/35 mm/17 min

Producer: Y. N. Engineer; **Director**: Joshy Joseph;

The film is based in Kerala, and is aimed at increasing environmental consciousness. A couple, Gopalakrishnan and Vijayalakshmi, who live in Agali in Kerala, want to regenerate the environment. The two try to do this through natural farming, in keeping with their commitment to revive the silent valley through organic farming.

द सेवियर

हिन्दी/कार्टून/35 मि.मी./11 मिनट

निर्माता - निर्देशक : शैला परलकर

सरकार रोगों को दूर रखने के लिए प्रतिरक्षण कार्यक्रम चलाती है। ये कार्यक्रम निशुल्क चलाये जाते हैं तथा बच्चों को टीके आदि निशुल्क लगाए जाते हैं। इस कार्टून फिल्म का उद्देश्य लोगों में चेतना का प्रचार करना है कि वे अपने बच्चों को टीके आदि लगवाएं। फिल्म में भयंकर व्याधियों जैसे टिटनेस, डिप्थीरिया तथा काली खांसी आदि के टीकाकरण के लिए प्रेरित करने के लिए चित्रित किया गया है।

THE SAVIOUR

Hindi/Animation/35 mm/11 min

Producer-Director: Shaila Paralkar;

The Government has been carrying out immunisation programmes to keep away disease. These programmes are free and there are no fees for getting children vaccinated. In an animation film, the filmmaker has attempted to popularise this concept so that more parents bring their children for immunisation. The film refers in particular to immunisation programme certain dreaded children's diseases like tetanus, diphtheria, and whooping cough.

थर्स्ट

हिन्दी/35 मि.मी./12 मिनट

निर्माता : वाई.एन. इंजीनियर, **निर्देशक :** स्वदेश पाठक

पानी का अभाव अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में सदैव ही कठिन समस्या रहा है, जहां महिलाओं को पानी लाने के लिए काफी दूर तक पैदल जाना पड़ता है। यह फिल्म महाराष्ट्र के थाने जिले के इस प्रकार के क्षेत्र से संबंधित है जहां पानी का अभाव है। सूर्य बांध गांव के नजदीक है, यद्यपि यह उन्हीं के लिए बनाया गया है किन्तु आदिवासी उसका उपयोग नहीं कर सकते। इन सबके पीछे कारणों के बारे में इस फिल्म में बताया गया है।

THIRST

Hindi/35 mm/12 min

Producer: Y. N. Engineer: **Director** : Swadesh Pathak;

Water scarcity has always been a part of the daily drudgery of many rural areas where women have to walk long distances to fetch water. This film is about the water scarcity in one such area in Thane District of Maharashtra. Surya Dam is near the village, but the tribals are not able to use this, despite the fact that it was built for their benefit. The film tries to explore the reasons behind this.

ट्रेड - कामर्स

एनीमेशन/35 मि.मी./7 मिनट

निर्माता-कहानी-संगीत : भीमसेन, **निर्देशक :** किरीट खुराना, **कार्टून :** एस.एम. हसन

कार्टून के द्वारा यह फिल्म बच्चों के यौन शोषण एवं बुराइयों से बचाव का संदेश देती है। एक युवा लड़की को एक व्यक्ति बड़े शहर में लाता है, जिसको उसके माता-पिता सौंप देते है तथा जिसके बारे में वह कुछ नहीं जानती है। यात्रा के दौरान वह अपने बचपन को याद करती है। शहर पहुंच कर वह वहां की रोशनी से चकाचौंध हो जाती है॥ लेकिन जब वह वेश्यालय पहुंचती है और देखती है कि कैसे पैसे का आदान प्रदान होता है, तब वह याद करती है कि इस व्यक्ति ने उसके पिता को धन दिया था और भयभीत होकर महसूस करती है कि उसे बेच दिया गया है। वह चिल्लाती है किन्तु उसकी चीख रात में चलती हुई गाड़ी की आवाज के साथ मिश्रित हो जाती है।

TRADE - COMMERCE

Animation/35 mm/6 min

Producer-story-music: Bhimsain; **Director**: Kireet Khurana; **Animation**: S.M. Hasan

Through animation, the film tells the message of the right of children to be protected from sexual exploitation and abuse. A young girl is taken to a large city by a man to whom her parents entrusted her and about whom she knows nothing. During the journey she remembers her childhood. On arrival in the city, she is dazzled by the lights. But it is only when she is taken to a brothel and sees money being exchanged, that she remembers that he had given money to her father and realises with horror that she has been sold.

द ट्रेल

अंग्रेजी/16 मि.मी./36 मिनट

निर्देशक-पटकथा : प्रबुद्ध भट्टाचार्य, **कैमरा :** अशोक दास गुप्ता, **संपादन :** अर्घ्य बासु, **संगीत :** अभिजीत बनर्जी

यह एक ऐसी प्रयोगात्मक फिल्म है जिसमें मस्तिष्क के उपनिवेशन का चित्रण है। इस फिल्म में कलकत्ता प्राणि उद्यान के द्वारा एक अद्वितीय समानांतर को उकेरा है, जो कि विक्टोरिया कालीन कलकत्ता में बनाया गया था। चारों तरफ फैला यह प्राणी उद्यान औपनिवेशिक विरासत की यादगार मात्र है। प्राणी उद्यान बहुत हद तक कलकत्ता के अन्य ब्रिटिश संरचनाओं से मिलता जुलता है। ये प्राणी उद्यान उनका लघु रूप है। प्राणी उद्यान के सभी जीव-जन्तु सभी प्रकार की विजय के प्रतिनिधि भी है वास्तव में, इन्हें श्रेणीबद्ध रूप से देखने पर ये मुक्तियुक्त भी लगता है कि ये पिंजरे एकपक्षीय तथा एक आचार्य हैं। परंतु ये पिंजरे मानवीय अवबोध तथा वर्जनात्मक को गुलाम करने के प्रात: रूपक भी है।

THE TRAIL

English/16mm/36 minutes

Director-Script: Prabuddha Bhattacharya; **Camera**: Ashoke Dasgupta; **Editor**: Arghya Basu; **Music**: Abhijit Banerjee

An experimental film that attempts to deal with the colonisation of the mind. The filmmaker has attempted to draw a unique parallel between the Calcutta Zoo built in the centre of Calcutta during the Victorian Era to the gigantic structures — reminders of colonial heritage — built all around. The Zoo structures are very much like the British structures all over Calcutta, with the same type of Palladian structures, though in miniature form. The animals and flora and fauna in the zoo are also representative of the conquest of all kinds. Naturally, the hierarchical position of viewing and looking at those in the cages is one-sided, one-dimensional, and assumed to be rationally correct. But the cage is a metaphor for chaining human perceptions and creativity.

NATIONAL FILM AWARDS

Best Feature Film of the Year

Sl. No.	Name of the Film	Director	Language	Year
1.	Shyamchi-Aai	P.K. Atre	Marathi	1953
2.	Mirza Ghalib	Sohrab Modi	Hindi	1954
3.	Pather Panchali	Satyajit Ray	Bengali	1955
4.	Kabuliwala	Tapan Sinha	Bengali	1956
5.	Do Ankhen Barah Haath	V. Shantaram	Hindi	1957
6.	Sagar Sangame	Debaki Kumar Bose	Bengali	1958
7.	Apur Sansar	Satyajit Ray	Bengali	1959
8.	Anuradha	Hrishikesh Mukherjee	Bengali	1 960
9.	Bhagini Nivedita	Bijoy Basu	Bengali	1961
10.	Dada Thakur	Sudhir Mukherjee	Bengali	1962
11.	Shehar Aur Sapna	Khwaja Ahmad Abbas	Hindi	1963
12.	Charulata	Satyajit Ray	Bengali	1964
13.	Chemmeen	Ramu Kariat	Malayalam	1965
14.	Teesri Kasam	Basu Bhattacharya	Hindi	1966
15.	Hatey Bazarey	Tapan Sinha	Bengali	1967
16.	Gopy Gyne Bagha Byne	Satyajit Ray	Bengali	1968
17.	Bhuvan Shome	Mrinal Sen	Hindi	1969
18.	Samskara	T. Pattabhirama Reddy	Kannada	1970
19.	Seemabaddha	Satyajit Ray	Bengali	1971
20.	Swayamvaram	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1972
21.	Nirmalayam	M.T. Vasudevan Nair	Malayalam	1973
22.	Chorus	Mrinal Sen	Bengali	1974
23.	Chomana Dudi	B.V. Karanth	Kannada	1975
24.	Mrigayaa	Mrinal Sen	Hindi	1976

Sl. No.	Name of the Film	Director	Language	Year
25.	Ghatashraddha	Girish Kasarvali	Kannada	1977
26.	No Film Found Suitable For Best Film Award			1978
27.	Shodh	Biplab Ray Choudhari	Hindi	1979
28.	Aakaler Sandhane	Mrinal Sen	Bengali	1980
29.	Dakhal	Goutam Ghose	Bengali	1981
30.	Chokh	Utpalendu Chakraborty	Bengali	1982
31.	Adi Shankaracharya	G.V. Iyer	Sanskrit	1983
32.	Damul	Prakash Jha	Hindi	1984
33.	Chidambaram	G. Aravindan	Malayalam	1985
34.	Tabarana Kathe	Girish Kasaravalli	Kannada	1986
35.	Halodhia Choraye Baodhan Khaye	Jahnu Barua	Assamese	1987
36.	Piravi	Shaji N. Karun	Malayalam	1988
37.	Bagh Bahadur	Buddhadeb Dasgupta	Hindi	1989
38.	Marupakkam	K.S. Sethumadhavan	Tamil	1990
39.	Agantuk	Satyajit Ray	Bengali	1991
40.	Bhagvad Gita	G.V. Iyer	Sanskrit	1992
41.	Charachar	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1993
42.	Unishe April	Rituparno Ghosh	Bengali	1994
43.	Kathapurushan	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1995
44.	Lal Darja	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1996
45.	Thai Saheb	Girish Kasaravalli	Kannada	1997